सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 163, नई दिल्ली, गुरुवार 21 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आज आप जो दर्द महसूस करते हैं, वहीं कल आपकी ताकत बन जाएगा।

03 बुजुर्ग – संस्कृति के संरक्षक, जीवन के मार्गदर्शक

06 अविस्मरणीय गंतव्य शादी

08 मालगाड़ी में लदा 1259बोरा एफ सी आई का चावल चोरी को लेकर टाटानगर में दो रेलवे क्लर्क धराये

क्या भारत सरकार इतनी पंगु हो गई है की स्वयं अपने द्वारा पारित विधेयक को ही लागू नहीं करवा पा रही या पारित विधेयक को लागू करना / करवाना ही नहीं चाहती ?

वर्ष 2023 में भारत सरकार द्वारा विधि विधान सर्वसम्मति से' डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागज़ों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, ना ही डाटा की चोरी रुकी और ना ही डाटा की दलाली थमी है

"वाहन, ड्राइविंग लाइसेंस और चालान डाटा का लीक होना"

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। एक बार फिर आपके सामने वाहन, ड्राइविंग लाइसेंस धारकों के व्यक्तिगत डाटा के साथ-साथ चालान डाटा के लगातार लीक होने पर गंभीर चिंता व्यक्त करने के लिए लिख रही हूँ, जिसे अभी भी टेलीग्राम चैनलों पर खुलेआम शेयर किए जा रहा है और बेचा जा रहा है। हम आपको पहले भी सबूतों के साथ कई बार इससे अभाव कराते आए हैं और साथ ही संबंधित विभागों, मंत्रालयों एवम्-मंत्रियों तक को शिकायतें भेजने के बावजूद, अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

हर बार नए सबूत उपलब्ध रहते हैं जो साफ़ तौर पर दिखाते हैं कि कैसे निजी डेटा का सार्वजनिक रूप से व्यापार किया जा रहा है। यह देखना बेहद निराशाजनक है कि साइबर अपराधी खुलेआम अपनी गतिविधियाँ को बेखौफ जारी रख रहा है और ऐसे कार्यों को जो क्राइम है को उसके द्वारा बेखौफ जारी रखते हुए भी संबंधित अधिकारियों की ओर से कोई तत्परता या प्रभावी प्रतिक्रिया नहीं दिखाई जा रही।

यहां यह कहते हुए बुरा भी लगता हैं पर और चुप रहना भी गलत है और बेहद चिंताजनक है कि इस डाटा की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार लोग बेपरवाह हैं और इन कर्ताओं से पूरी तरह से मिले हुए हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दे की यह एक कृत्रिम उत्पीड़न है — जो यह उद्घोष करता है कि हमारे नाम, दूरभाष अंक और आवश्यकताएं अब बाज़ार की संपत्ति बन चुकी हैं।

इतनी बार सबूतों के साथ शिकायतों के बावजूद कार्यवाही नहीं करने के कारण जनता में यह संदेह भी बढ़ रहा है कि आंतरिक लापरवाही या उससे भी बदतर, जानबूझकर लीक - इस समस्या में योगदान दे रहे हैं।

सरकार क्या कर रही है? सरकार ने वर्ष 2023 में 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागज़ों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, ना ही डेटा की दलाली थमी है। जब तक इन नियमों का पालन कराने के लिए कठोर दंड और स्पष्ट नियंत्रण नहीं होंगे, तब तक नागरिकों की निजता मात्र एक हास्यास्पद अवधारणा बनी रहेगी।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस मुद्दे को गंभीरता से लें और तत्काल एवं पारदर्शी कार्रवाई शुरू करें। लोगों का अधिकार है कि उनका डेटा सुरक्षित रहे और सिस्टम उन्हें बार-बार निराश नहीं कर रहा है।

उचित प्रतिक्रिया और वास्तविक कदम की अपेक्षा है, एक और चुप्पी की नहीं।

डीजल में इथेनॉल मिलाने के बावजूद तेल के दाम कम क्यों नहीं हो रहे? - डॉ राजकुमार यादव

इंजन डेमेज, इंस्यूरेंस डीनायल (क्लेम रिजेक्ट) का जिम्मेदार कौन?

भारत में इथेनॉल ब्लेंडिंग मुख्य रूप से पेट्रोल में हो रही है, जहां E20 (20% इथेनॉल) का लक्ष्य 2025 तक हासिल कर लिया गया है। डीजल में इथेनॉल ब्लेंडिंग अभी प्रारंभिक चरण में है जो की भविष्य में घातक सिद्ध होगा - सरकार 5% से 15% ब्लेंडिंग की योजना बना रही है, लेकिन यह व्यापक रूप से लागू नहीं हो पाई है। रिसर्च और टेस्टिंग चल रही है ठीक वैसे ही जैसे मानव शरीर से पहले चूहों व अन्य जानवरो पर की जाती है। वर्तमान 15% ब्लेंडिंग पर अध्ययन जारी है। कीमतों के कम न होने के कारण मुख्यतः इथेनॉल की लागत अधिक होना - पेट्रोल के मामले में, इथेनॉल की खरीद लागत अब पेट्रोल से ज्यादा हो गई है (लगभग 71.32 प्रति लीटर, जिसमें ट्रांसपोर्टेशन और GST शामिल है)। सरकार ने कहा है कि पुरानी रिपोर्ट्स (2020-21) में इथेनॉल सस्ता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है, इसलिए ब्लेंडेड ईंधन की कीमत कम नहीं की जा रही। डीजल के लिए भी यही तर्क लागू हो सकता है - ब्लेंडिंग से बचत नहीं हो रही, बल्कि लागत बढ़ रही है।

कोई बचत अर्जित नहीं की जा रही पेट्रोल में 20% ब्लेंडिंग के बावजूद कीमतें नहीं घटीं, क्योंकि सरकार ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण लाभ पर फोकस कर रही है, न कि उपभोक्ता बचत पर। डीजल ब्लेंडिंग से भी आयात बिल कम होने का दावा है, लेकिन उपभोक्ताओं को लाभ नहीं मिल रहा - माइलेज कम होने से वास्तविक खर्च बढ़ जाता है। माइलेज और दक्षता का असर मुख्यतः ब्लेंडेड ईंधन से माइलेज 5-10% कम हो जाता है, जिससे कुल खर्च बढ़ता है। ट्रक जैसे डीजल वाहनों में यह समस्या और गंभीर हो सकती है।

मामला गंभीर बनता है क्योंकि जब एथेनॉल मिलाने से मूल्य कम नहीं होंगे, माइलेज कम होगा, इंजन की कैपेसिटी घटेगी, इंजन खराब होंगे व ब्लैडेड ईंधन प्रयोग करने से इंश्योरेंस डेनियल (क्लेम रिजेक्ट) होगा तो अंग्रेजी फरमान व तानाशाह रवैया का जिम्मेदार आखिर कौन? इस तरह से ट्रक मालिकों के ऊपर ना चाहते हुए भी ब्लेंडिंग डीजल का बोझ क्यों डाला जा रहा है व उनके पीछे आखिर क्या मनसा है व किसका मुनाफा?

इंजन में खराबी और इंश्योरेंस क्लेम डिनायल का जिम्मेदार कौन? इंजन डैमेज के कारण समान्यतः इथेनॉल ब्लेंडेड डीजल इंजन को नुकसान पहुंचा सकता है, खासकर पुराने या असंगत वाहनों में। कारण

इथेनॉल पानी सोखता है, जिससे जंग लगती है और फ्यूल सिस्टम (इंजेक्टर, पंप, लाइन्स) खराब होता है।

डीजल इंजनों में इग्निशन मुश्किल होती है, और 15% से ज्यादा ब्लेंडिंग से इंजन लाइफ कम हो जाती है।

पुराने ट्रकों में रबर पार्ट्स (होज, ओ-रिंग्स) सूज जाते हैं या क्रैक हो जाते हैं, जिससे लीकेज और पावर लॉस होता है।

पेट्रोल के मामले में भी यही समस्या है, और सोशल मीडिया पर पर कई यूजर्स ने शेयर किया कि E20 से इंजन डैमेज हो रहा है। वही सबसे बड़ा सर दर्द इंश्योरेंस क्लेम डिनायल है- अगर वाहन ब्लेंडेड फ्यूल के लिए संगत नहीं है (जैसे 2023 से पहले के मॉडल), तो इंश्योरेंस कंपनियां क्लेम रिजेक्ट कर सकती हैं, इसे ग़लत फ्यूल यूज़ मानकर। सरकार का कहना है कि E20 से कोई डैमेज नहीं होता और क्लेम प्रभावित नहीं होगा, लेकिन इंश्योरेंस कंपनियां और मैन्युफैक्चरर्स (जैसे टोयोटा) वारंटी वॉयड करने की चेतावनी दे रही हैं।

ट्रकों के लिए यह बड़ा मुद्दा है, क्योंकि डीजल इंजन महंगे हैं और रिपेयर कॉस्ट हाई है। वहीं कई सोशल मीडिया यूजर्स ने शेयर किया कि इंश्योरेंस और वारंटी दोनों ही प्रभावित हो रही हैं।

जिम्मेदार कौन? - सरकार और पेट्रोलियम मिनिस्ट्रीः नीति बनाने और पुश करने के लिए, बिना पुराने वाहनों की संगतता सुनिश्चित किए। वे दावा करते हैं कि कोई डैमेज नहीं, लेकिन रियलिटी अलग है।

ऑयल कंपनियां अपनी फ्यूल सप्लाई और कीमत निर्धारण के लिए प्रयासरत है, वे उपभोक्ताओं को संगतता चेक करने की सलाह देती हैं, लेकिन जिम्मेदारी बिल्कुल भी नहीं लेतीं।

वहीं वाहन मैन्युफैक्चरर्स ने पुराने मॉडल्स को ब्लेंडेड फ्यूल के लिए अपग्रेड न करने और वारंटी वॉयड करने के लिए पूरी तैयारी कर ली है।

इंश्योरेंस कंपनियां मैं सीधे रूप से क्लेम रिजेक्ट करने के लिए रेडीमेड फॉर्मेट तैयार कर लिया है वह अंदरूनी दिशा निर्देश जारी कर दी है कि अगर डैमेज फ्यूल से जुड़ा हो इंश्योरेंस डिनायल होगा।

कुल मिलाकर, उपभोक्ता (ट्रक ओनर्स) बीच में फंस जाते हैं। उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा संगठन ने ट्रक ट्रांसपोर्टर्स की ओर से लगातार आवाज उठा रही हैं, क्योंकि डीजल ब्लेंडिंग से उनका बिजनेस सबसे ज्यादा प्रभावित होगा। अगर ब्लेंडिंग बढ़ी, तो इंजन रिपेयर और डाउनटाइम से नुकसान होगा। उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा "आने वाले समय में एकजुट होकर इसका विरोध करना जरूरी है अन्यथा अधिक मूल्य चुका कर भी अपना नुकसान करते हुए गाड़ी चलाना आखिर कहां की समझदारी होगी, पूरे भारत के ट्रक मालिकों को इस आने वाली समस्या पर विचार करना होगा व समय रहते इससे लड़ने की पूरी तैयारी करनी होगी।"

मुख्यमंत्री पर हमले की कड़ी निन्दा

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री पर हमले कि कड़ी निन्दा ट्रान्सपोर्टरस रिप्रेजेटिवं वैलफेयर एसोसिएशन अध्यक्ष राजेश कक्कड़ महामंत्री के के छाबड़ा एवं उपाध्यक्ष सुभाष त्यागी सचिव देवेन्दर यादव कोषाध्यक्ष विनोद नेगी एव यशपाल सिंह तुषार अरोडा सतीश कुमार राजू गोली ने दिल्ली के मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के हुए हमले कि कड़ी निन्दा करते हुए कहा कि दिल्ली में कुछ अराजक तत्व मुख्यमंत्री के अच्छे कार्य से भयभीत होकर मुख्यमंत्री पर हमला किया है, इन कायराना हमले कर के मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी को भयभीत करना चाहा है इन कायराना हमले से मुख्यमंत्री डरने वाली नहीं है हम सब माननीय उपराज्यपाल और पुलिस आयुक्त से आग्रह करते हैं कि मुख्यमंत्री पर कायराना हमले करने वाले को कड़ी सजा दिया जाय। आपका हौसला और आपका विश्वास यह दिखाता है कि हमारी दीदी पहले से और मजबूत होकर निकलेंगे यह कायराना हमला हमारे माननीय मुख्यमंत्री दीदी रेखा गुप्ता जी के हौसलों को तोड़ नहीं पाएगा जितना दिल्ली का विकास तेजी से हो रहा है अब और ऊर्जा के साथ और तेजी के साथ होगा हम माता रानी और ठाकुर जी से यही प्रार्थना करते हैं हमारी दीदी के हमारी मां ने मुख्यमंत्री के आप अंग संग रहना आपका हाथ दीदी के कर के ऊपर सुदर्शन चक्र की तरह काम करें करता रहे जय माता दी हरे कृष्णा जय भारत जय हिंद

मुख्यमंत्री महोदया के ऊपर जानलेवा कायराना हमले की भारतीय तिपहिया चालक संघ रजि दिल्ली के महामंत्री सोबरन सिंह राजपूत, श्री उदय सिंह जी, अनिल कुमार जी एवं सभी सम्मानित पदाधिकारियों व सदस्यों की तरफ़ से श्रीमती मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के साथ कायराना हमले की कड़ी निन्दा करते हैं और दिल्ली के पुलिस कमिश्नर साहब से अनुरोध है कि हमलावर राजेश के ऊपर कठोर कानूनी कार्रवाई करे जय हिन्द जय भारत वंदेमातरम।

भुवनेश्वर बाईपास सड़क 6 लेन के लिए 8308 करोड़ मंजूर

मनोरंजन सासमल, वरिष्ठ पत्रकार

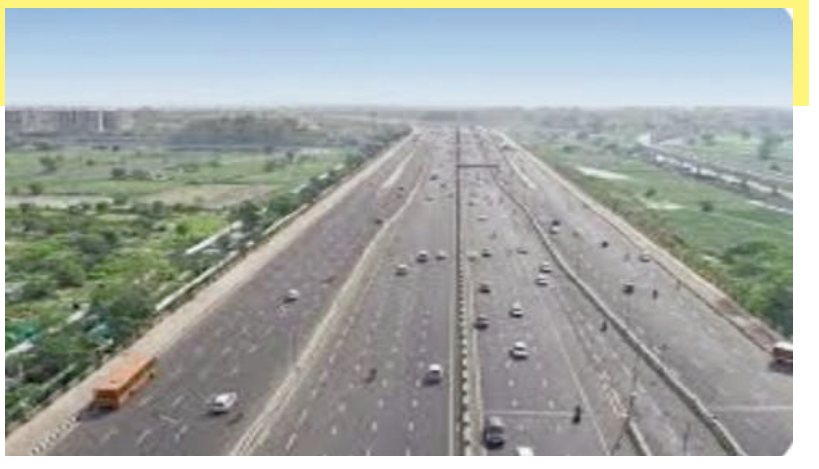

भूबनेश्वर : खोरधा, भुवनेश्वर और कटक शहरों में भीड़भाड़ और यातायात की समस्याओं को कम करने और भारी वाहनों के आवागमन को कम करने के लिए, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएच-16) (चेन्नई-कोलकाता कॉरिडोर) पर भुवनेश्वर बाईपास का निर्माण करने जा रहा है। यह खोरधा जिले के रामेश्वर से शुरू होकर बांकी, अथागढ़, गोविंदपुर होते हुए कटक में टांगी के पास समाप्त होगा।110.875 किलोमीटर लंबी इस छह लेन वाली सड़क पर 8307.74 करोड़ रुपये की लागत आएगी। राजधानी क्षेत्र की यह रिंग रोड हाइब्रिड एन्युइटी मोड में बनाई जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने आज इस परियोजना को मंजूरी दे दी।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण से मिली जानकारी के अनुसार, इस परियोजना के लिए निविदा प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी। मार्च 2026 तक कार्य आदेश जारी कर दिए जाएँगे। यानी मार्च के बाद ही काम शुरू होगा और ढाई साल में पूरा हो जाएगा। सड़क का निर्माण तीन पैकेज में किया जाएगा। निर्माण कंपनी 15 साल तक इसके रखरखाव और मरम्मत की जिम्मेदारी संभालेगी। इस सड़क के निर्माण की अनुमानित लागत 8307.74 करोड़ रुपये है। सिविल वर्क पर 4686.74 करोड़ और भूमि अधिग्रहण पर 1029.43 करोड़ रुपये खर्च होंगे। अब भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया लगभग 90% पूरी हो चुकी है। केवल अवार्ड होना बाकी है। राज्य सरकार भूमि अधिग्रहण की कुल लागत का 50% वहन करेगी। वर्तमान में, रामेश्वरम से कटक के टांगी तक सड़क लगभग 91 किलोमीटर लंबी है, लेकिन इसमें ढाई घंटे लगते हैं। नया बाईपास 111 किलोमीटर लंबा होगा, लेकिन इसमें 1 घंटा 20 मिनट का समय लगेगा। इस सड़क की खासियत यह है कि इस पर वाहन 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकेंगे। क्रॉसिंग की सुविधा केवल कुछ निर्दिष्ट स्थानों पर ही उपलब्ध होगी। यह एक टोल रोड होगा।

रामेश्वरम से, यह सड़क अथगढ़ से वाया होते हुए टांगी पहुँचेगी।

111 किलोमीटर लंबी इस सड़क का निर्माण हाइब्रिड एन्युइटी मोड में किया जाएगा।

भूमि अधिग्रहण 90% पूरा हो चुका है, मार्च के बाद काम शुरू होगा।

कैबिनेट बैठक के बाद, केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मीडिया को बताया कि इस बाईपास को 6-लेन नियंत्रित पहुँच वाले ग्रीनफील्ड राजमार्ग के रूप में विकसित किया जाएगा। भारी वाहन खुर्दा, भुवनेश्वर, कटक जैसे व्यस्त शहरों को बाईपास कर सकेंगे। इससे ओडिशा और आसपास के अन्य राज्यों में माल परिवहन क्षमता बढ़ेगी, परिवहन लागत कम होगी और क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। यह बाईपास सड़क तीन प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों NH-55, NH-57, NH-655 और राज्य राजमार्ग SH-65 को जोड़ेगी। यह ओडिशा के प्रमुख आर्थिक, सामाजिक और लॉजिस्टिक केंद्रों को निर्बाध सड़क संपर्क प्रदान करेगी। यह 10 आर्थिक गलियारों, 4 सामाजिक केंद्रों, 5 लॉजिस्टिक केंद्रों को भी जोड़ेगी और खुर्दा रेलवे स्टेशन, प्रस्तावित पुरी और अस्तरंगा बंदरगाहों, भुवनेश्वर हवाई अड्डे और एक बहुउद्देश्यीय लॉजिस्टिक पार्क को सड़क संपर्क प्रदान करेगी। पूरा होने पर, यह सड़क आसपास के क्षेत्रों में रोजगार के बड़े अवसर पैदा करेगी।

इस परियोजना की घोषणा के बाद, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने यह भी कहा कि यह रिंग रोड राजधानी और उसके आसपास के प्रमुख शहरी केंद्रों की आवाजाही को आसान बनाएगी, लॉजिस्टिक दक्षता बढ़ाएगी और राज्य के आर्थिक विकास के लिए नई दिशाएँ खोलेगी। इसी प्रकार, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र ने भी प्रधानमंत्री और सड़क परिवहन मंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने यह भी कहा कि 2017 से ही वे प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से इस सड़क के निर्माण की प्रगति के बारे में लगातार अनुरोध करते रहे हैं। उन्होंने एनएचएआई के अधिकारियों के साथ समीक्षा की और विभागीय मंत्री को पत्र भी लिखा। पिछली सरकार में इस काम में कोई प्रगति नहीं हुई थी। राज्य में भाजपा सरकार आने के बाद इस काम में प्रगति हुई है, आज का कैबिनेट का फैसला उसी का प्रतिबिंब है। भुवनेश्वर बाईपास समृद्धि का राजमार्ग बनकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि यह परियोजना प्रधानमंत्री के 'पूर्वोदय' मिशन में ओडिशा को विकास के पहले चरण तक ले जाएगी।

आत्मउन्नयन एवं जीवन-जागृति का पर्व है पर्युषण

ललित गर्ग

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। इसमें जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान से जीवन को पवित्र किया जाता है।

जैन धर्म में पर्युषण महापर्व का अपना विशेष महत्व है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि आत्मा की गहराइयों तक जाने का, आत्मनिरीक्षण करने का और आत्मशुद्धि का अनूठा पर्व है। जैन संस्कृति ने सदियों से इस पर्व को आत्मकल्याण, साधना और तपस्या का महान माध्यम बनाया है। 'पर्युषण' का शाब्दिक अर्थ है- अपने भीतर ठहरना, आत्मा में रमना, आत्मा के समीप होना। इस वर्ष अन्तःकरण की शुद्धि का यह महापर्व 20 से 27 अगस्त, 2025 को मनाया जा रहा है, इन आठ दिनों में हर जैन अनुयायी अपने तन और मन को साधनामय बना लेता है, मन को इतना मांज लेता है कि अतीत की त्रुटियां को दूर करते हुए भविष्य में कोई भी गलत कदम न उठे। इस पर्व में एक ऐसा मौसम ही नहीं, माहौल भी निर्मित होता है, जो हमारे जीवन की शुद्धि कर देता है। इस दृष्टि से यह पर्व आध्यात्मिकता के साथ-साथ जीवन उत्थान का पर्व है, यह मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है। पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना करते हुए जीवन को शांत, स्वस्थ एवं अहिंसामय बनाया जाता है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है।

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। इसमें जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान से जीवन को पवित्र किया जाता है। यह अंर्तआत्मा की आराधना का पर्व है- आत्मशोधन का पर्व है, निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है। अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। तो जरूरी है प्रमादरूपी नींद को हटाकर इन आठ दिनों विशेष तप, जप, स्वाध्याय की आराधना करते हुए अपने आपको सुवासित करते हुए अंर्तआत्मा में लीन हो जाए जिससे हमारा जीवन सार्थक व सफल हो पाएगा।

पर्युषण का एक अर्थ है-कर्मों का नाश करना। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी अतः यह पर्युषण-पर्व आत्मा का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है। यह आध्यात्मिक पर्व है, इसका जो केन्द्रीय तत्त्व है, वह है-आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिर्मय स्वरूप को प्रकट करने में पर्युषण महापर्व अहं भूमिका निभाता रहता है। अध्यात्म यानि आत्मा की सन्निकटता। यह पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है। पर्युषण पर्व जैन एकता का प्रतीक पर्व है। दिगंबर परंपरा में इसकी ''दशलक्षण पर्व'' के रूप में पहचान है। उनमें इसका प्रारंभिक दिन भाद्र व शुक्ला पंचमी और संपन्नता का दिन चतुर्दशी है। दूसरी तरफ श्वेतांबर जैन परंपरा में भाद्र व शुक्ला पंचमी का दिन समाधि का दिन होता है। जिसे संवत्सरी के रूप में पूर्ण त्याग-प्रत्याख्यान, उपवास, पौषध सामायिक, स्वाध्याय और संयम से मनाया जाता है। वर्ष भर में कभी समय नहीं निकाल पाने वाले लोग भी इस दिन जागृत हो जाते हैं। कभी उपवास नहीं करने वाले भी इस दिन धर्मानुष्ठान करते नजर आते हैं।

पर्युषण पर्व मनाने के लिए भिन्न-भिन्न मान्यताएं उपलब्ध होती हैं। आगम साहित्य में इसके लिए उल्लेख मिलता है कि संवत्सरी चातुर्मास के 49 या 50 दिन व्यतीत होने पर व 69 या 70 दिन अवशिष्ट रहने पर मनाई जानी चाहिए। दिगम्बर परंपरा में यह पर्व 10 लक्षणों के रूप में मनाया जाता है। यह 10 लक्षण पर्युषण पर्व के समाप्त होने के साथ ही शुरू होते हैं। यह पर्व जैन अनुयायियों के लिए संयम, साधना और आत्मसंयम का विशेष अवसर लेकर आता है। इन दिनों में जैन समाज उपवास, प्रतिक्रमण, पाठ, स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान और पूजा के माध्यम से आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। घर-घर में धार्मिक वातावरण बनता है और हर व्यक्ति अपने जीवन की दिशा को सुधारने का प्रयत्न करता है। पर्युषण पर्व का मुख्य उद्देश्य है आत्मा को कर्मों की परतों से मुक्त करना। जीवन में चाहे जितनी भी व्यस्तता हो, इन दिनों में हर जैन श्रावक-श्राविका अपने जीवन की गति को धीमा कर आत्मचिंतन करता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि बाहरी सुख-सुविधाएँ क्षणिक हैं, वास्तविक सुख भीतर है और आत्मा की शुद्धि में ही है। जब व्यक्ति अपने भीतर झाँकता है तो उसे अपने दोष, अपने अपराध और अपनी कमजोरियों का बोध होता है। इसी बोध से क्षमा और आत्मपरिवर्तन की भावना उत्पन्न होती है।

पर्युषण पर्व के अंतिम दिन 'क्षमावाणी' का आयोजन होता है, जिसे 'क्षमा दिवस' भी कहा जाता है। इस दिन हर व्यक्ति अपने परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों और यहां तक कि शत्रुओं से भी यह कहता है- "मिच्छामि दुक्कडम्" अर्थात्यदि मुझसे किसी को भी मन, वचन या शरीर से कोई पीड़ा पहुँची है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। इस प्रकार क्षमा माँगने और क्षमा करने की परंपरा से समाज में सद्भाव, प्रेम और मैत्री का वातावरण बनता है। पर्युषण पर्व आत्मसंयम और आत्मिक साधना का गहन अभ्यास है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भोग-विलास और सांसारिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि आत्मा का उत्थान और मोक्ष की दिशा में अग्रसर होना है। यही कारण है कि इन दिनों में लोग केवल धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन ही नहीं करते, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी सात्त्विकता, करुणा, अहिंसा और सहअस्तित्व को अपनाने का प्रयास करते हैं। यह पर्व हर जैन साधक के लिए एक आत्मयात्रा है। तप, संयम, स्वाध्याय और क्षमा की साधना से वह स्वयं को नया जन्म देता है।

पर्युषण पर्व एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है''''आत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन''-'श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा- ''मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ'' सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व पर्युषण महापर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन-जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन-जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। मनुष्य धार्मिक कहलाए या नहीं, आत्म-परमात्मा में विश्वास करे या नहीं, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को माने या नहीं, अपनी किसी भी समस्या के समाधान में जहाँ तक संभव हो, अहिंसा का सहारा ले- यही पयुर्षण की साधना का हार्द है। हिंसा से किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। हिंसा से समाधान चाहने वालों ने समस्या को अधिक उकसाया है। इस तथ्य को सामने रखकर जैन समाज ही नहीं आम-जन भी अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्थावान बने और गहरी आस्था के साथ उसका प्रयोग भी करे। परलोक सुधारने की भूलभुलैया में प्रवेश करने से पहले इस जीवन की शुद्धि पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। धर्म की दिशा में प्रस्थान करने के लिए यही रास्ता निरापद है और यही इस पर्व की सार्थकता का आधार है, प्रतिक्रमण का प्रयोग है। पीछे मुड़कर स्वयं को देखने का ईमानदार प्रयत्न है। वर्तमान की आंख से अतीत और भविष्य को देखते हुए कल क्या थे और कल क्या होना है इसका विवेकी निर्णय लेकर एक नये सफर की शुरुआत की जाती है। यह पर्व अहिंसा और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए पर्युषण पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग है।

लहरों की तरह जिंदगी...!

जिंदगी को 'हम' कभी समझ नहीं पाते,
न जाने गुजर जाती हैं कैसी-कैसी रातें।
करते रहो एक-दूसरे से खूब सारी बातें,
एक-दूजे के संग बाँटों रिश्तें में सौगातें।
हाल-चाल पूछते रहों सबसे आते-जाते,
हर रोज होती रहें प्यार भरी मुलाकातें।

'लहरों की तरह' समाना हैं इस दिल में,
दरियाओं को पार करना हैं मुश्किल में।
अजनबियों का साथ निभाना है घर में,
जो गांव से शहर आ गई हो पलभर में।
यह ना समझना की आ गई दलदल में,
तेरा प्यार हैं सच्चा समां जा तनमन में।

संजय एम तराणेकर

घृणा/द्वेष का मार्ग कठिन है। इसमें अपना तो खून जलता ही है, साथ ही अपने आसपास का वातावरण/परिवेश भी दूषित हो जाता है। तन-मन पीड़ायुक्त हो जाता है।

तब भी सौ में से निन्यानवे प्रतिशत लोग द्वेष के मार्ग पर ही चलतें हैं। आश्चर्य होगा यह जानकर कि सभी की चाहत तो प्रेम की ही है और मार्ग द्वेष का है। समझ नहीं आता कि यह हो कैसे जाता है?

ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि प्रेम का मार्ग सरल नहीं है, वह अग्निपथ है। जो प्रेम के मार्ग में कदम रखना चाहता है, उसे अपने अहंकार का विसर्जन करना पड़ता है। जहां चाह है, वहां प्रेम नहीं है। और जहां प्रेम है, वहां चाह मिट जाती है। प्रेम कोई सौदा नहीं है, न ही कोई समझौता है। यह तो एक अज्ञात/अनदेखी छलांग है। प्रेम में सुरक्षा नहीं मिलती। वास्तव में प्रेम में तो असुरक्षा को भी प्रेम करना होता है। जो तैयार होते हैं टूटने के लिए, बिखरने के लिए, केवल वही प्रेम का स्वाद चख सकते हैं। ध्यान रहे कि प्रेम फूल की तरह खिलता है, लेकिन जब उसे पकड़ने की कोशिश करेंगे तो वह मुरझा जाता है। जब बिना किसी अधिकार भावना के, हम उसकी खुशबू में डूब जायें, तब जो अनुभव होता है, वही प्रेम है। सच्चा प्रेम मांगता नहीं है, वह केवल देता है। और जो देता है, उसे कुछ खोने का भय नहीं रहता। इसलिए प्रेम के पथ पर चलना, साहसी बनने जैसा है। बिना किसी गारंटी के, केवल विश्वास के सहारे, अंधेरे में कदम रखना होगा, यही प्रेम की साधना है। यही परम यात्रा है।

माणिक रत्न पहनने के फायदे व नुकसान, माणिक रत्न जो बदलकर रख देगा आपकी जिंदगी

सभी जातकों के लिए सूर्य का प्रभाव शुभ व अशुभ दोनों प्रकार से होता है। सूर्य से सम्बन्धित समस्याओं के निवारण के लिए इस रत्न का प्रयोग किया जाता है।. माणिक्य रत्न धन लाभ,सम्पत्ति लाभ, मान प्रतिष्ठा लाभ, राजयोग लाभ, आदि शीर्ष पद जैसे डाक्टर, राजनेता, वकील, आएएस, पीसीएस, इंजीनियर, फिल्मी स्टार आदि दिलाने में माणिक्य रत्न प्रभावशाली होता है। सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का राजा भी कहा जाता है इसीलिए यह राजयोग दिलाने मे सक्षम रहता है। सूर्य ग्रह रत्न

माणिक्य भी नीलम रत्न की तरह ही काम करता है तथा जातक पर अपना प्रभाव डालता है। और यह प्रचलन प्राचीन काल से है राजा लोग अपने मुकुट पर सूर्य ग्रह रत्न माणिक्य धारण करते थे। लेकिन रत्न धारण करने से पहले ज्योतिष कर्ता को अवश्य दिलाएँ।

माणिक्य रत्न चमत्कारी लाभ

माणिक्य रत्न सूर्य ग्रह का रत्न है और सूर्य जिसका प्रबल होता है उसके भाग्य खुल जाते है। इस रत्न के अनेकों फायदे है जो आप पहनकर ही महसूस कर सकते है।

1- हृदय और नेत्र सम्बन्धित रोगियों के लिए रामबाण तुरन्त फायदा।

2- अगर पंचम, नवम, दशम, एकादश भाव में सूर्य ऊच में स्थित हो तो माणिक्य रत्न बहुत ही शुभ संकेत देते है।

3- सूर्य ग्रह रत्न और सूर्य की उपासना का फल कयी गुना अधिक मिलता है।

4- तरक्की, मान प्रतिष्ठा, सरकारी नौकरी के योग,पदोन्नति, धन दौलत सभी सूर्य की कृपा से ही प्राप्त होते है।।

5- शारीरिक पुष्टता, आत्मविश्वास में वृद्धि, ललाट की चमक, तेज दिमाग सूर्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते है।

सूर्य मनुष्य की जन्मकुंडली में उसकी आत्मा की स्थिति के विषय में बताता है की-इस मनुष्य की आत्मा केसी यानि तमगुण या रजगुण या सतगुण प्रधान है और उसमें भी शापित है या वरदानी है या केवल अभी इसका जन्म मनुष्य के जन्म में चलना प्रारम्भ हुआ है या ये देवताओं या योगी की श्रेणी में आने जा रहा है या ये इस जन्म के बाद अगले जन्म में नीच योनि में जायेगा।यो प्रत्येक जन्मकुंडली में सूर्य की डिग्री अवश्य देखे और उसमें देखे की-सूर्य बालक अवस्था में है तो अभी ये आत्मा इस जीवन में केवल अनुभव प्राप्त करेगी और वयस्क है तो ये आत्मा पीछे जन्म में सीखती आई और क्या सीखा वो भी पता चलता है

Note वैसे रत्न कोई भी हो राशि के हिसाब से यानि पूरे विधि विधान के अनुसार ही पहनना चाहिए, वरना ये रत्न फायदे की जगह बड़ा नुकसान भी पहुंचा सकते हैं।

कुरुविंद या कुरंड (Corundum) एक मणिभीय खनिज पत्थर है, जो संसार के विभिन्न स्थलों में पाया जाता है। भारत में भी कुरुविंद प्राप्य है। असम की खासी और जैंती पहाड़ियों, बिहार (हज़ारीबाग, सिंहभूम और मानभूम जिलों में), मद्रास (सेलम जिले में), मध्यप्रदेश (पोहरा, भंडारा तथा रीवाँ), उड़ीसा तथा मैसूर प्रदेशों में यह पत्थर मिलता है। मैसूर, मद्रास और कश्मीर में प्राप्त होनेवाली कुरुविंद अधोवर्ती वर्ग का है। इस पत्थर की दो विशेषाएँ हैं, एक तो यह कठोर होता है, दूसरे चमकदार।

सामान्य कुरुविंद में कोई आकर्षक रंग नहीं होता। यह साधारणतया धूसर, भूरा, नीला और काला होता है। कुछ रंगीन कुरुव्राद विशिष्ट आकर्षक रंगों के होने के कारण रत्न के रूप में, माणिक, नीलम, याकूत आदि नामों से बिकते हैं। थोड़े अपद्रव्यों के कारण इसमें रंग होता है। ये अपद्रव्य धातुओं के आक्साइड, विशेषतः क्रोमियम और लोहे के आक्साइड, होते हैं। कुरुविंद की कठोरता 9 है, जबकि हीरे की कठोरता 10 होती है। इसका विशिष्ट गुरुत्व 3.94 से 4.10 होता है। यह ऐल्यूमिनियम का प्राकृतिक आक्साइड (Al2 O3) है, जिसके मणिभ षट्कोणीय तथा कभी-कभी बेलन या मृदंग की आकृति के होते हैं।

अघोरा चतुर्दशी आज

अघोरा चतुर्दशी एक विशेष धार्मिक पर्व है जिसे पितरों की पूजा एवं तंत्र कार्यों की सिद्धि के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। शास्त्रों के अनुसार भाद्रपद माह में आने वाली कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को अघोरा चतुर्दशी का उत्सव मनाया जाता है। खासतौर से यह पर्व हिमाचल से जुड़े क्षेत्रों, उत्तराखंड, नेपाल और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में भक्ति भाव के साथ मनाया जाता है। लोक मान्यताओं के अनुसार इस समय को डगयाली भी कहा जाता है और यह उत्सव दो दिनों तक चलता है। पहले दिन को छोटी डगयाली तथा दूसरे दिन इसे बड़ी डगयाली के नाम से जाना जाता है।

शास्त्रीय ग्रंथों में इस चतुर्दशी को कुशाग्रहणी अमावस्या या कुशोत्पाटिनी अमावस्या के रूप में भी वर्णित किया गया है। यह पर्व विशेष रूप से भगवान शिव के उपासकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन की गई पूजा, दान, व्रत और तर्पण कार्यों का विशेष फल प्राप्त होता है। विशेष रूप से पितरों की शांति और आत्मा की तृप्ति हेतु इस तिथि का विशेष महत्व है।

अघोरा चतुर्दशी का मुहूर्त समय

==============================

अघोरा चतुर्दशी का पर्व हिन्दू कैलेंडर के अनुसार 21 अगस्त 2025, बृहस्पतिवार के दिन मनाया जाएगा।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष अघोरा चतुर्दशी प्रारम्भ : 12:44 पी एम अगस्त 21

भाद्रपद कृष्ण पक्ष अघोरा चतुर्दशी समाप्त : 11:55 ए एम अगस्त 22

अघोरा चतुर्दशी के दिन ही मासिक शिवरात्रि का पर्व भी मनाया जाएगा। इस दिन गुरु पुष्य योग की प्राप्ति होने से विशेष शुभ योग की प्राप्ति होगी।

अघोरा चतुर्दशी नकारात्मक शक्तियों से बचाव का समय

==============================

अघोरा चतुर्दशी के दिन भूत-प्रेत बाधाओं से मुक्ति पाने हेतु कई स्थानों पर विशेष परंपराएं निभाई जाती हैं। हिमाचल प्रदेश के सोलन, शिमला और सिरमौर जिलों में लोग अपने घरों की खिड़कियों और दरवाजों पर कांटेदार झाड़ियों को लगाते हैं ताकि नकारात्मक शक्तियां घर में प्रवेश न कर सकें। यह परंपरा सदियों पुरानी है और इसे ग्रामीण संस्कृति में गहरे विश्वास के साथ निभाया जाता है। अघोरा चतुर्दशी पूर्वजों का स्मरण और प्रकृति से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। इस दिन का स्नान, व्रत और दान हमें कर्मों की शुद्धि और मानसिक शांति की ओर अग्रसर करता है।

अघोरा चतुर्दशी कुशा संग्रह का समय

==============================

अघोरा चतुर्दशी के दिन धार्मिक रूप से कई विशेष क्रियाएं की जाती हैं। सबसे महत्वपूर्ण कार्य है कुशा का संग्रहण। हिंदू धर्म में कुशा को एक विशेष प्रकार की पवित्र घास के रुप में जाना जाता है जिसका प्रयोग लगभग सभी धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इसलिए इस दिन विशेष रूप से वर्षभर के लिए शुद्ध और योग्य कुशा एकत्रित की जाती है। इसे कुशोत्पाटिनी अमावस्या भी कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसी कुशा उपयुक्त मानी जाती है जो हरी हो, जिसमें सात पत्तियां हों, उसका मूल तीखा हो और कोई हिस्सा कटा फटा न हो। ऐसी कुशा देवताओं के पूजन और पितृ कार्यों दोनों के लिए उचित होती है। कुशा तोड़ते समय ऱहूं फट्ऱ मंत्र का उच्चारण करना अनिवार्य माना गया है, जिससे इसे धार्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

अघोरा चतुर्दशी श्राद्ध कर्म का समय

==============================

इस दिन पितरों के लिए तर्पण एवं श्राद्ध कर्म भी किए जाते हैं। यह मान्यता है कि अघोरा चतुर्दशी के दिन शिव के गणों को स्वतंत्रता प्राप्त होती है। भूत प्रेत, पिशाच आदि मुक्त होकर इधर-उधर विचरण करते हैं। इसलिए लोग विशेष उपाय करते हैं जिससे बुरी आत्माएं घर के लोगों को हानि न पहुंचा सकें। इसी कारण कई स्थानों पर घरों की खिड़कियों और दरवाजों पर कांटेदार झाड़ियां लगाई जाती हैं। यह नकारात्मक ऊर्जा को रोकने का प्रतीकात्मक उपाय है। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में स्नान कर संकल्प लेते हैं, उपवास करते हैं और शिवजी की पूजा के साथ पितरों को जल अर्पित करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन किया गया तर्पण, पितरों तक अवश्य पहुंचता है और उन्हें शांति प्राप्त होती है।

अघोरा चतुर्दशी का ज्योतिष अनुसार महत्व

========================

चतुर्दशी तिथि का समय ज्योतिष शास्त्र और हिंदू पंचांग में भी विशेष स्थान रखता है। यह तिथि विशेषकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में अधिक प्रभावी मानी जाती है। इस समय को कुछ विशेष कारणों की पूर्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। कुछ खास सिद्धियों की प्राप्ति, कुछ विशेष कार्यों की सफलता, वाद-विवाद विजय, नकारात्मक ऊर्जा से मुक्ति, बंधन मुक्ति इत्यादि से संबंधित माना गया है। कार्तिक मास की अघोरा चतुर्दशी का दिन विशेष पुण्यदायक और कल्याणकारी माना जाता है। इस दिन तीर्थ स्नान, व्रत, जप, दान और तप से प्राप्त पुण्य से व्यक्ति अपने पापों और ऋष्टा से मुक्त हो सकता है। यह दिन संयम, साधना और स्वयं की शुद्धि के लिए महत्वपूर्ण समय माना जाता है। धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है कि यदि अमावस्या तिथि, विशेष नक्षत्र, दुर्लभ योग और उपयुक्त करण का संयोग हो तथा वह शनिवार, सोमवार या गुरुवार जैसे शुभ वार में पड़े तो यह दिन और भी फलदायक हो जाता है। अघोरा चतुर्दशी को विशेषकर उन लोगों के लिए उत्तम माना गया है जो जीवन में कठिनाइयों, मानसिक क्लेश और पितृदोष का अनुभव कर रहे हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से किया गया कोई भी धार्मिक कार्य अक्षय फल देने वाला होता है। भगवान विष्णु की पूजा, मंत्र जाप और ध्यान इस दिन विशेष फलदायी माने गए हैं। कुछ मान्यताओं के अनुसार यह व्रत यदि एक वर्ष तक लगातार किया जाए तो तन, मन और धन के समस्त कष्टों से मुक्ति मिलती है।

ज्योतिष अनुसार भी इस दिन को बहुत विशेष माना गया है। स्वास्थ्य ज्योतिष के अनुसार इस दिन किए गए कार्यों के प्रभाव से शरीर के रोग और बीमारी दूर होती हैं, मानसिक शांति प्राप्त होती है और घर में सुख-शांति का वास होता है। इस दिन किया गया श्राद्ध कर्म पितरों की आत्मा को तृप्त करता है, जिससे वे प्रसन्न होकर अपने वंशजों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, यह तिथि भूत-प्रेत बाधाओं को समाप्त करने में भी अत्यंत सहायक मानी जाती है। घर की शुद्धि, वातावरण की नकारात्मकता को समाप्त करने हेतु विशेष उपाय किए जाते हैं जिससे रोग, क्लेश और संकटों से छुटकारा मिले।

सीपी राधाकृष्णन की उम्मीदवारी से कई हित सधेंगे

ललित गर्ग

अब तक भारतीय राजनीति में दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में भाजपा की जड़ें अपेक्षाकृत कमजोर और सबसे बड़ी चुनौती रहा है। उत्तर और पश्चिम भारत में लगातार सफलता के बाद पार्टी चाहती है कि दक्षिण के राज्य भी उसके प्रभाव में आएं।

भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राजग ने चंद्रपुरम पोन्नुस्वामी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित करके एक तीर से अनेक निशाने साधे हैं। भाजपा ने बहुत सोच-समझकर उन्हें इस प्रतिष्ठित पद का उम्मीदवार बनाया है। वे तमिल हैं, पिछडे.भी हैं, संघ से जुड़े हैं और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पुराने करीबी एवं साफ-सुथरी छवि वाले राजनायक हैं। भाजपा ने जब उन्हें उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया, तो यह केवल राजनीतिक गणित का परिणाम नहीं था, बल्कि एक ऐसे व्यक्तित्व को राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने का निर्णय था, जो सादगी, ईमानदारी और सेवा की पहचान रखते हैं। उनका चयन भारतीय लोकतंत्र की व्यापकता और समावेशिता का जीवंत प्रतीक है।

अब तक भारतीय राजनीति में दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में भाजपा की जड़ें अपेक्षाकृत कमजोर और सबसे बड़ी चुनौती रहा है। उत्तर और पश्चिम भारत में लगातार सफलता के बाद पार्टी चाहती है कि दक्षिण के राज्य भी उसके प्रभाव में आएं। राधाकृष्णन तमिलनाडु से आते हैं और वहां भाजपा के शीर्ष चेहरों में गिने जाते हैं। उनका उपराष्ट्रपति उम्मीदवार बनना भाजपा की यह घोषणा है कि वह दक्षिण भारत को अब हाशिए पर नहीं, बल्कि सत्ता की मुख्यधारा में लाना चाहती है। राधाकृष्णन तमिलनाडु में भाजपा के मजबूत संगठनकर्ता के रूप में पहचाने जाते हैं। सीपी राधाकृष्णन उत्तर भारत के भाजपा के राजनीतिक गलियारे में राधाजी के नाम से जाने जाते हैं। तमिलनाडु की कोयंबटूर लोकसभा सीट से 1998 और 1999 के आम चुनावों में भाजपा के टिकट पर सांसद चुने गए सीपी राधाकृष्णन ने स्कूली जीवन से ही आरएसएस का दामन थाम लिया था। हालांकि एक दौर में वे तमिल राजनीति में अन्नाद्रमुक के करीब माने जाते थे। उनके तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं से मधुर संबंध हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव में डीएमके भी उनकी उम्मीदवारी का विरोध करना कठिन हो सकता है।

उपराष्ट्रपति पद पर उनका चयन ओबीसी समाज को सम्मान और सशक्तिकरण का नया संदेश देगा। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने लगातार इस वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य किया है। राधाकृष्णन ओबीसी समाज से आते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की नीति को बल दिया है। राधाकृष्णन का चयन इसी दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। इससे भाजपा को देशभर में ओबीसी समाज का और अधिक समर्थन मिल सकता है। इससे भाजपा की सामाजिक आधारशिला और मजबूत होगी। भाजपा अपने निर्णयों से हमेशा करिश्मा घटित करती रही है, अपने चतुराई का परिचय देती रही है, सी.पी. राधाकृष्णन का चयन भाजपा की इसी रणनीतिक चतुराई का ही बड़ा उदाहरण है। इससे पार्टी ने एक तीर से अनेक निशाने साधे हैं, दक्षिण भारत में पैठ बनाना, ओबीसी समाज को साधना, विपक्ष को असहज करना और साफ-सुथरी राजनीति का संदेश देना। यह तय है कि उपराष्ट्रपति के रूप में वे न केवल भाजपा बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए सफल नायक सिद्ध होंगे।

यह एक संयोग की कहा जायेगा कि देश के शीर्ष दो पदों पर विराजमान हस्तियों का नाता झारखंड से रहा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु देश के सर्वोच्च पद पर चुने जाने से पहले झारखंड की राज्यपाल रहीं और देश के उपराष्ट्रपति बनने जा रहे सीपी राधाकृष्णन भी इस राज्य के राज्यपाल रहे हैं। इन दिनों वे महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं। वे झारखंड के साथ ही तेलंगाना के राज्यपाल और पुदुचेरी के उपराज्यपाल का भी अतिरिक्त कार्यभार संभाल चुके हैं। मोदी-शाह का उन पर बड़ा भरोसा रहा है, क्योंकि उन्हें एक समय एक साथ तीन-तीन राज्यों के राज्यपालों की जिम्मेदारी थमाई गई थी। अभी उपराष्ट्रपति पद पर ऐसे ही भरोसेमंद, निष्ठाशील एवं जिम्मेदार व्यक्ति की ही तलाश थी। उपराष्ट्रपति भारत का प्रतिनिधित्व अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी करते हैं। राधाकृष्णन का अध्ययनशील स्वभाव, शालीन व्यवहार और संतुलित दृष्टिकोण भारत की सॉफ्ट पावर को और मजबूत करेगा। उनका व्यक्तित्व भारत की परंपरा, संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रभावी प्रतिनिधित्व करेगा।

भारतीय राजनीति में उपराष्ट्रपति केवल राज्यसभा के सभापति ही नहीं होते, बल्कि सर्वदलीय संवाद और लोकतांत्रिक परंपराओं के संरक्षक भी होते हैं। राधाकृष्णन का सौम्य व्यक्तित्व, धैर्य और संवाद क्षमता उन्हें इस भूमिका में और अधिक सफल बनाएगी। विपक्षी दलों के लिए भी उनकी छवि स्वीकार्य है, जो संसद की कार्यवाही को संतुलित बनाए रखने में सहायक होगी। सी.पी. राधाकृष्णन का उपराष्ट्रपति पद पर चयन भारतीय लोकतंत्र की उस विशेषता को रेखांकित करता है, जिसमें सादगी और सेवा जैसे गुण सर्वोपरि माने जाते हैं। वे न केवल दक्षिण भारत और ओबीसी समाज का सम्मान हैं, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए आशा और संतुलन का चेहरा हैं। निश्चित रूप से वे उपराष्ट्रपति पद की जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाते हुए आने वाले वर्षों में एक आदर्श और प्रेरक नायक सिद्ध होंगे। जैसाकि पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हमारे आदर्श नायक हैं।

वैसे भी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन और वर्तमान उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार सी.पी. राधाकृष्णन के बीच कुछ उल्लेखनीय समानताएं दिखाई देती हैं। भले ही दोनों की पृष्ठभूमि अलग हो, एक महान दार्शनिक, शिक्षक और राजनयिक रहे, तो दूसरे राजनीति और सामाजिक जीवन से जुड़े हैं, फिर भी उनके व्यक्तित्व में कई साझा बिंदु हैं जैसे दोनों का नाम 'राधाकृष्णन' है, जो भारतीय संस्कृति में श्रीकृष्ण से जुड़ी भक्ति, ज्ञान और नीति का प्रतीक है। दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में भारतीय परंपरा और मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन को विश्वपटल पर प्रतिष्ठा दिलाई और शिक्षा जगत को नई दिशा दी। सी.पी. राधाकृष्णन ने राजनीति और सार्वजनिक जीवन में सेवा, ईमानदारी और पारदर्शिता के लिए ख्याति अर्जित की। डॉ. राधाकृष्णन जीवन भर शिक्षक रहे और शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का मूल आधार माना। सी.पी. राधाकृष्णन का राजनीतिक जीवन भी शिक्षा, नैतिकता और संस्कारों की धरती पर खड़ा है। वे स्वच्छ छवि और सादगी के लिए जाने जाते हैं। दोनों का जीवन साधारण परंतु ऊँचे आदर्शों से जुड़ा रहा। किसी प्रकार का दुराचार या विवाद इन दोनों के जीवन में नहीं जुड़ा, जो आज के राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में बहुत दुर्लभ है। डॉ. राधाकृष्णन को दार्शनिक-राजनेता के रूप में विश्वभर में सम्मान मिला। सी.पी. राधाकृष्णन को जनता का भरोसा, सरल व्यवहार और समाज में उनकी स्वीकार्यता ने एक सम्मानित नेता बनाया। डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक दृष्टिकोण को स्थापित किया। सी.पी. राधाकृष्णन भी राजनीति में समन्वयकारी, सर्वसमावेशी और राष्ट्रहित की सोच को आगे बढ़ाते हैं। दोनों ही भारतीय मूल्यों, ईमानदारी और राष्ट्र-सेवा के प्रतीक माने जा सकते हैं।

राजनीति में सी.पी. राधाकृष्णन की पहचान एक स्वच्छ और सादगीपूर्ण नेता की है। वे कभी भी विवादास्पद राजनीति का हिस्सा नहीं बने, बल्कि अपने संगठन कौशल, जनता से जुड़ाव और सेवाभाव से अपनी अलग जगह बनाई। सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े रहने के कारण उनका व्यक्तित्व सिर्फ राजनीतिक दायरे तक सीमित नहीं रहा। यही कारण है कि वे उपराष्ट्रपति पद की गरिमा और जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह सक्षम होंगे। भाजपा ने राधाकृष्णन को मैदान में उतारकर विपक्ष के लिए कठिनाई खड़ी कर दी है। उनकी सादगीपूर्ण और निर्दोष छवि के कारण विपक्ष उनके खिलाफ आक्रामक रुख अपनाने में हिचकेगा। साथ ही, वे किसी विवाद या कट्टरपंथी राजनीति से दूर रहे हैं, जिससे उनकी स्वीकार्यता सर्वदलीय स्तर पर अधिक है। वे न केवल चुनावी राजनीति में सक्रिय रहे, बल्कि सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों से भी जुड़े रहे हैं। इससे भाजपा की यह छवि और प्रखर होगी कि वह स्वच्छ और ईमानदार नेतृत्व को प्राथमिकता देती है। राधाकृष्णन क्यों सफल उपराष्ट्रपति साबित होंगे, इस प्रश्न का उत्तर निम्न पंक्तियों में समाया है कि वे पक्षपात से दूर और सर्वदलीय संवाद को बढ़ावा देने वाले विरल व्यक्तित्व माने जाते हैं।

जटामासी के लाभ

जटामांसी हिमालय में उगने वाली एक प्रसिद्ध औषधि है।

जटामांसी का पौधा 10 से 60 सेमी तक लम्बा होता है, इसके फूल सफेद ,गुलाबी व हल्के नीले रंग के एक गुच्छे में लगते हैं, इसके फल सफेद रोमों से भरे छोटे व गोल-गोल होते हैं, इसकी जड़ लंबी, गहरी भूरे रंग की सूत्रों युक्त होती है, जटामांसी कश्मीर, भूटान, सिक्किम और कुमाऊं जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में अपने आप उगती है, इसे 'बालछड़' के नाम से भी जाना जाता है, जटामांसी ठण्डी जलवायु में उत्पन्न होती है, यह हर जगह आसानी से नहीं मिलती, इसे जटामांसी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसकी जड़ में बाल जैसे तन्तु लगे होते हैं।

जटामांसी को मांसी, बालछड , जटामांही , पहाडी लोग भूतकेश आदि नामों से जाना जाता हैं।

ये पहाड़ों पर पैदा होती है, इसके रोयेंदार तने तथा जड़ ही दवा के रूप में उपयोग में आती है, इसकी जड़ों में बड़ी तीखी तेज महक होती है, ये दिखने में काले रंग की किसी साधू की जटाओं की तरह होती है।

मस्तिष्क और नाड़ियों के रोगों के लिए ये राम बाण औषधि है, ये धीमे लेकिन प्रभावशाली ढंग से काम करती है।

पागलपन , हिस्टीरिया, मिर्गी, नाडी का धीमी गति से चलना, मन बेचैन होना, याददाश्त कम होना, इत्यादि इन सारे रोगों की यही अचूक दवा है।

ये त्रिदोष को भी शांत करती है और सन्निपात के लक्षण ख़त्म करती है।

इसके सेवन से बाल काले और लम्बे होते हैं।

इसके काढ़े को रोजाना पीने से आँखों की रोशनी बढ़ती है।

चर्म रोग , सोरायसिस में भी इसका लेप फायदा पहुंचाता है।

दांतों में दर्द हो तो जटामांसी के महीन पावडर से मंजन कीजिए।

नारियों के मोनोपाज के समय तो ये सच्ची साथी की तरह काम करती है।

इसका शरबत दिल को मजबूत बनाता है, और शरीर में कहीं भी जमे हुए कफ को बाहर निकालता है।

मासिक धर्म के समय होने वाले कष्ट को जटामांसी का काढा ख़त्म करता है।

मुख्य मंत्री पर हमले की हम कड़ी निंदा करते हैं, हमलावर का पूर्व में अपराधिक घटनाओं में शामिल होने से लगता है यह कोई सुनियोजित साजिश हो सकती है -- वीरेन्द्र सचदेवा

सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज सुबह अपने निवास कार्यालय में जन सुनवाई कर रहीं दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता पर हुए हमले की कड़ी निंदा की है और कहा है की जिस तरह हमलावर की एक दो दिन पहले से मुख्य मंत्री के सरकारी एवं निजी आवास की रेकी करने की सी.सी.टी.वी. फुटेज सामने आई है उससे यह सम्भावना लगती है की यह एक सोची समझी साजिश हो सकती है।

उन्होंने कहा है की लोकतंत्र में हिंसा की कोई जगह नही है और हमारी मुख्य मंत्री या पार्टी ऐसे हमले से भयभीत नही होने वाले। भाजपा के नेता अपना सार्वजनिक जनसंवाद पहले से अधिक सघनता से जारी रखेंगे।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की हमले का सही कारण तो पुलिस जांच पूर्ण होने पर ही सामने आयेगा पर प्रारम्भिक जानकारी अनुसार यह हमलावर पूर्व में भी दो बार अपराधिक घटनाओं में संलिप्त रह चुका है जो हमे यह शक करने का कारण देता है है की यह कोई सुनियोजित साजिश भी हो सकती है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है मुख्य मंत्री पर हमले के बाद दिल्ली आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने जिस तरह की विडिओ पोस्ट सोशल मीडिया पर डाली वह निंदनीय है और कहीं ना कहीं हमलावर को नैतिक समर्थन देने के समान है। पूर्व मे हमने देखा है की कई इस तरह की घटनाएं करने वाले आम आदमी पार्टी से जुड़े निकले हैं अतः सौरभ भारद्वाज का इस तरह का ट्वीट कर हमलावर अपरोक्ष प्रोत्साहन समझ से परे है।

जलवायु परिवर्तन: बुजुर्गों के समक्ष जीवन का संध्या काल बिताने की चुनौती

अमरपाल सिंह वर्मा

जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण की चुनौती नहीं रह गया है बल्कि यह मानवीय स्वास्थ्य पर एक गंभीर संकट बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) की हाल में जारी एक नई रिपोर्ट में बुजुर्गों पर मंडरा रहे जानलेवा संकट की चेतावनी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक बुजुर्ग लोग खास तौर पर जलवायु परिवर्तन के कारण गम्भीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना कर रहे हैं। यह रिपोर्ट पूरी दुनिया के बुजुर्गों
पर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का खुलासा करती है। भारत जैसे देश में, जहां बुजुर्गों की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, वहां जलवायु परिवर्तन के स्वास्थ्य पर प्रभाव और भी अधिक चिंताजनक होते जा रहे हैं। बुजुर्ग न केवल शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं बल्कि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी उम्र के साथ घटती जाती है। ऐसे में वे भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों, शीत लहरों, वायु प्रदूषण और नई उभरती बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी में इजाफा हो रहा है। यह बुजुर्गों के लिए प्रमुख स्वास्थ्य जोखिम है क्योंकि लू और अत्यधिक तापमान के दौरान उनके शरीर की तापमान नियंत्रित करने की क्षमता कम हो जाती है।

वर्ष 2022 की द लैंसेट काउंटडाउन रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2000-2004 और 2017-2021 के दौरान जलवायु परिवर्तन से भारत में गर्मी से संबंधित मौतों में 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इनमें बुजुर्गों की संख्या अधिक है क्योंकि उनकी शारीरिक क्षमता जलवायु बदलाव को झेलने में कम होती है। पिछले कुछ वर्षों में उत्तरी राज्यों सहित भारत के कई हिस्सों में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप बढ़ा है। गर्मियों में तापमान 45 से 50 डिग्री तक पहुंच जाता है। जलवायु परिवर्तन से वायु गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। यह स्थिति अस्थमा और दिल की बीमारी से जूझते बुजुर्गों के लिए यह परिस्थिति जानलेवा साबित हो जाती है क्योंकि उनकी त्वचा और शरीर की तापमान संतुलन क्षमता कम हो चुकी होती है, जिससे लू लगने, डिहाइड्रेशन और हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण जहां गर्मी के दिन बढ़ते चले जा रहे हैं, वहीं सर्दियों में भी अत्यधिक ठंड पडने लगी है। शीत लहर के कारण बुजुर्गों को हाइपोथर्मियां, रक्तचाप में गिरावट, तथा जोड़ों के दर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खासकर उत्तर भारत में दिसंबर-जनवरी की सर्दियां उनके लिए घातक साबित हो सकती हैं।

जलवायु परिवर्तन के चलते मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसे रोगों का प्रसार बढ़ा है। बुजुर्गों के लिए ये रोग अधिक घातक सिद्ध हो सकते हैं। मौसम जनित प्रभावों से उनमें तनाव, अकेलापन और अवसाद की स्थिति बनती है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) की हाल में जारी रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि 1990 के दशक से अब तक 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों में तापलहर के कारण होने वाली मौतों में लगभग 85 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट के अनुसार ताप लहरें, बाढ़ और बर्फ के पिघलने जैसे जलवायु परिवर्तन के सबसे घातक प्रभावों में से एक हैं। इनका सामना लिए तैयार रहना होगा। वह भी खास तौर पर बुजुर्गों जैसे सबसे संवेदनशील वर्गों की सुरक्षा के लिए यह जरूरी है।

रिपोर्ट के अनुसार बुजुर्ग लोग अक्सर पुरानी बीमारियों, चलने- फिरने में कठिनाई या शारीरिक कमजोरी से जूझते हैं, वो भीषण गर्मी में जानलेवा खतरे का सामना करते हैं। ये खतरे तब और बढ़ जाते हैं जब वो प्रदूषित, भीड़भाड़ वाले शहरों या तटीय इलाकों में रहते हैं, जहां बुज़ुर्गों की आबादी ज़्यादा है और समुद्र का स्तर लगातार बढ़ रहा है।

हमारे देश में पहले तो दिल्ली, पटना, लखनऊ, कानपुर, जयपुर, जोधपुर जैसे बड़े शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यू) 'खतरनाक' श्रेणी में पहुंचता था, अब तो राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ समेत विभिन्न छोटे शहर भी इस स्थिति में आने लगे हैं। जाहिर है, समस्या बढ़ती ही जा रही है। भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों की संख्या अब लगभग 14 करोड़ तक पहुंच चुकी है और यह संख्या 2050 तक दोगुनी होकर 34 करोड़ 60 लाख हो जाने का अनुमान है। एक ओर जहां बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, वहीं जलवायु परिवर्तन का असर भी तेज हो रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बुजुर्गों को बचाने के लिए जरूरी कदम उठाने ही होंगे। जलवायु परिवर्तन भारत में बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए एक नया संकट बन कर उभरा है। हीटवेव, वायु प्रदूषण और संक्रामक रोगों के बढ़ते खतरे ने बुजुर्गों को गंभीर संकट में डाल दिया है।

जरूरत इस बात की है कि सरकारें, नीति निर्माता, स्वास्थ्य कर्मी और समाज के लोग मिलकर ऐसे समाधान खोजें जो बुजुर्गों को जलवायु परिवर्तन के बदलावों से सुरक्षित रख सकें। यूएनईपी की रिपोर्ट में इसके लिए शहरों को प्रदूषण मुक्त, सुदृढ़ और हर किसी के लिए सुलभ बनाने की सिफारिश की गई है, जहां हरित क्षेत्रों की पर्याप्त मौजूदगी हो। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि इसके लिए प्रमुख रणनीतियों में सुनियोजित शहरी विकास, सामुदायिक आधारित आपदा जोखिम प्रबंधन, और बुजुर्ग आबादी के लिए जलवायु संबंधी सूचनाओं तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित की जाए।

जलवायु परिवर्तन की आंच सबसे पहले और सर्वाधिक गहराई से बुजुर्ग शरीर को महसूस होती है। यह वह वर्ग है जिसने देश को दशकों तक अपने श्रम, ज्ञान और सेवा से समृद्ध किया है। अब जरूरत है कि हम उन्हें एक ऐसा वातावरण दें जहां वे जीवन का संध्या काल अच्छे स्वास्थ्य के साथ बिता सकें। यह केवल एक स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि एक नैतिक जिम्मेदारी है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

कार्यस्थल पर स्त्रियों का संघर्ष: मर्यादा ही असली परीक्षा

शम्भू शरण सत्यार्थी

बिहार के सिवान जिले की महिला अधिकारी की घटना ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया . वे अपने दफ़्तर में नियम-क़ानून लागू कर रही थीं लेकिन कुछ कर्मचारियों ने उनके साथ धक्का-मुक्की, अभद्र भाषा और अपमानजनक व्यवहार किया. बात बढ़ी तो महिला अधिकारी को ही समझौता करने की सलाह दी गई.यह केवल एक घटना नहीं है बल्कि उन हज़ारों कहानियों का हिस्सा है, जिन्हें महिलाएँ रोज़ाना कार्यस्थल पर झेलती हैं.

भारतीय महिलाएँ और कामकाजी यात्रा

आई एल ओ (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन) की रिपोर्ट (२०24) के अनुसार भारत में कुल महिला श्रम भागीदारी दर २१% है जो विश्व औसत (47%) से कहीं कम है.

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन सी आर बी, २०२३) के अनुसार कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के 13,400 से अधिक केस दर्ज किए गए जिनमें से अधिकांश शिकायतें महानगरों से आईं.

ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में महिलाएँ शिकायत ही नहीं दर्ज करतीं क्योंकि समाज और परिवार उन्हें चुप रहने की सलाह देता है.

जब महिलाएँ टकराईं अन्याय से

. रोहतक (हरियाणा) – एक सरकारी स्कूल की महिला प्रिंसिपल ने शिकायत की कि उनके सहकर्मी शिक्षक उनके आदेश नहीं मानते और बार-बार उन्हें "घर जाकर रसोई संभालो" कहकर अपमानित करते हैं.

बंगलुरु (कर्नाटक) – एक आईटी कंपनी की इंजीनियर ने शिकायत दर्ज कराई कि उनके मैनेजर ने देर रात कॉल पर अश्लील बातें कीं. पॉश जांच कमेटी बनी लेकिन अंततः केस दबा दिया गया.

पटना (बिहार) – बैंक की महिला शाखा प्रबंधक को तब स्थानांतरण का सामना करना पड़ा, जब उन्होंने वरिष्ठ अधिकारी के खिलाफ उत्पीड़न की शिकायत दर्ज की.

मुंबई (महाराष्ट्र) – एक एयरलाइन कंपनी की एयर होस्टेस ने कहा कि उन्हें प्रमोशन देने के बदले 'पर्सनल डिनर' का प्रस्ताव मिला. उन्होंने विरोध किया और नौकरी छोड़नी पड़ी.

ये उदाहरण बताते हैं कि समस्या केवल छोटे कस्बों की नहीं है, बल्कि कॉर्पोरेट दुनिया और आधुनिक शहरों में भी उतनी ही गहरी है.

समस्या की जड़ कहाँ है?

पितृसत्ता की मानसिकता – अभी भी कई पुरुष मानते हैं कि स्त्री केवल घर तक सीमित है। जब वही स्त्री आदेश देती है, तो उनकी 'पुरुष-इगो' आहत हो जाती है.

कानून का डर न होना – पॉश कानून (२०१३) बनने के बावजूद अधिकतर संस्थानों में इंटरनल कम्प्लेंट कमिटी केवल नाम की होती है.

महिलाओं की चुप्पी – बदनामी, नौकरी जाने का डर और परिवार का दबाव महिलाओं को शिकायत दर्ज करने से रोकता है.

'मर्यादा' का बोझ – समाज चाहता है कि महिला हर हाल में 'संस्कारी' और 'संयमी' दिखे. ग़ुस्सा करना या विरोध करना उन्हें 'उद्दंड' बना देता है.

नए दौर की महिलाएँ : बदलाव की मिसालें

सुप्रीम कोर्ट वकील इंदु मल्होत्रा ने पॉश कानून पर कई ऐतिहासिक दलीलें दीं जिससे महिलाओं के पक्ष में निर्णय आए.

स्पेस साइंटिस्ट रितु करिधल (ईसरो) ने मिशन मंगल का नेतृत्व किया और कहा – "कार्यस्थल पर हमें स्त्री नहीं, केवल पेशेवर समझा जाए."

दिल्ली की मेट्रो महिला ड्राइवरें – शुरुआती दिनों में यात्रियों की हँसी उड़ानी पड़ी लेकिन आज वे सैकड़ों जानों की ज़िम्मेदारी संभाल रही हैं.

ये उदाहरण दिखाते हैं कि बदलाव संभव है, बशर्ते समाज उनका साथ दे.

रास्ते जो निकल सकते हैं

कानून का सख़्त पालन – हर संस्थान में पॉश कमेटी सक्रिय रूप से काम करे, शिकायत करने वाली महिला की गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित हो.

संवेदनशीलता प्रशिक्षण – पुरुष कर्मचारियों और प्रबंधन को जेंडर सेंसिटिविटी वर्कशॉप कराई जाए.

महिलाओं का नेटवर्क – कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों का समूह बने, ताकि वे अकेली न पड़ें.

लोकतंत्र का भविष्य: तकनीक की रोशनी या अंधेरा? [स्वतंत्र इच्छा की कैद: चुनावी प्रक्रिया पर एआई का शिकंजा]

लोकतंत्र का मूलभूत आधार खतरे में है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), जो कभी मानव प्रगति का स्वर्णिम प्रतीक थी, अब उसी लोकतंत्र की नींव को खोखला करने का हथियार बन चुकी है। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, जो जनता की सच्ची आवाज को सत्ता के शिखर तक ले जाते हैं, अब एआई-जनित डीपफेक, भ्रामक समाचारों और माइक्रो-टारगेटिंग के जाल में फंस चुके हैं। यह तकनीक न केवल मतदाताओं के मन को चुपके से प्रभावित कर रही है, बल्कि उनकी स्वतंत्र इच्छा को बंधक बनाकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को ही अपहरण कर रही है।

एआई की असाधारण शक्ति इसके डेटा विश्लेषण और वैयक्तिकृत सामग्री सृजन की क्षमता में निहित है। एक्स, फेसबुक और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया मंचों पर कार्यरत एल्गोरिदम यह तय करते हैं कि आपको क्या देखना है। ये एल्गोरिदम आपकी उम्र, रुचियों और राजनीतिक झुकाव का गहन विश्लेषण कर ऐसी सामग्री परोसते हैं, जो आपके विचारों को सूक्ष्म रूप से ढाल देती है। 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में कैंब्रिज एनालिटिका द्वारा 87 मिलियन फेसबुक उपयोगकर्ताओं के डेटा के दुरुपयोग का उदाहरण इसका जीवंत प्रमाण है। इस डेटा के आधार पर माइक्रो-टारगेटेड विज्ञापनों ने अनिर्णीत मतदाताओं को प्रभावित किया। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार, इस हेरफेर ने 2-5% मतदाताओं के व्यवहार को बदला, जो एक अत्यंत करीबी चुनाव में निर्णायक सिद्ध हुआ। यह हेरफेर इतना परिष्कृत और सूक्ष्म है कि मतदाता को इसका आभास तक नहीं होता, फिर भी यह उनके निर्णयों को गुप्त रूप से नियंत्रित करता है।

डीपफेक तकनीक ने लोकतंत्र के लिए खतरे को और भी भयावह बना दिया है। एआई-जनित नकली वीडियो और ऑडियो इतने जीवंत और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं कि सामान्य व्यक्ति उन्हें वास्तविकता से अलग करने में असमर्थ रहता है। 2024 के रोमानिया राष्ट्रपति चुनाव में एक डीपफेक ऑडियो, जो रूस-समर्थित प्रभाव अभियान का हिस्सा था, ने पहले दौर के मतदान को रद्द करने के लिए बाध्य किया। इसी तरह, 2023 में स्लोवाकिया के एक चुनाव में डीपफेक ऑडियो ने एक उम्मीदवार की छवि को कलंकित कर जनता का विश्वास तोड़ा। मिशिगन विश्वविद्यालय के शोध के अनुसार, 64% लोग डीपफेक को पहली नजर में वास्तविक मान लेते हैं। ये घटनाएँ न केवल उम्मीदवारों की प्रतिष्ठा को नष्ट करती हैं, बल्कि मतदाताओं के सत्य तक पहुँचने के मूलभूत अधिकार को ही कुचल देती हैं।

एआई-संचालित बॉट्स और स्वचालित अभियान लोकतंत्र के लिए एक और गंभीर चुनौती बनकर उभरे हैं। ये बॉट्स झूठी सूचनाओं को बिजली की गति से फैलाते हैं और कृत्रिम जन समर्थन का भ्रम रचते हैं। 2024 के भारतीय लोकसभा चुनाव में, एक्स पर वायरल हुए डीपफेक वीडियो और भ्रामक मीम्स ने मतदाताओं के बीच भारी भ्रम और अविश्वास को जन्म दिया। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में 64 देशों के चुनावों में एआई-जनित सामग्री ने जनमत को गहरे रूप से प्रभावित किया। ये बॉट्स न केवल सूचना तंत्र को दूषित करते हैं, बल्कि सामाजिक ध्रुवीकरण और अविश्वास को बढ़ावा देकर लोकतंत्र की एकता और अखंडता को चूर-चूर करते हैं।

माइक्रो-टारगेटिंग के माध्यम से एआई व्यक्तिगत डेटा का उपयोग कर मतदाताओं के मन को गुप्त रूप से नियंत्रित करता है, उनकी स्वतंत्र इच्छा को हथियार बना लेता है। 2022 के ब्राजील चुनाव में एक डीपफेक वीडियो, जिसमें एक पत्रकार को गलत पोल परिणाम बताते दिखाया गया, ने लुला के समर्थकों के बीच भ्रम और अविश्वास की आंधी मचा दी। ऑक्सफोर्ड इंटरनेट इंस्टीट्यूट के अनुसार, 2016 से 2024 तक 81 देशों में एआई-संचालित प्रचार अभियानों ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया। यह तकनीक मतदाताओं को केवल वही सामग्री दिखाती है, जो उनकी मौजूदा धारणाओं को मजबूत करती है या उन्हें चुपके से बदल देती है, जिससे निष्पक्ष सूचना का मूलभूत अधिकार नष्ट हो जाता है।

एआई ने गलत सूचना को एक खतरनाक हथियार में बदल दिया है, जो अब पहले से कहीं अधिक सस्ता और सहज हो गया है। जहाँ पहले जनमत को प्रभावित करने के लिए विशाल रैलियों और महंगे प्रचार अभियानों की आवश्यकता होती थी, वहीं अब महज कुछ हजार रुपये में सोशल मीडिया पर झूठ का तूफान खड़ा किया जा सकता है। 2023 में भारत में एक जांच ने खुलासा किया कि डिजिटल एजेंसियाँ 10,000 रुपये से भी कम में वायरल अभियान चला सकती हैं, जो छोटे और कम संसाधन वाले दलों को नष्ट करने की ताकत रखता है। यह लोकतंत्र को तकनीकी और वित्तीय शक्ति के चंगुल में जकड़ रहा है, जिससे जनता की आवाज दबने का खतरा मंडरा रहा है।

लोकतंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही अनिवार्य हैं, लेकिन एआई-आधारित प्रचार में ये गायब हैं। 2019 के यूरोपीय चुनाव में 53% फेसबुक विज्ञापनों में प्रायोजक की जानकारी नहीं थी। यह "अदृश्य प्रचार" निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को कमजोर करता है। इस खतरे से निपटने के लिए सख्त कदम जरूरी हैं। पहला, सरकारों को डिजिटल प्रचार के लिए स्पष्ट नियम बनाना होगा। यूरोपीय संघ का डिजिटल सर्विसेज एक्ट (2022) एक मिसाल है, जो सोशल मीडिया कंपनियों को गलत सूचना रोकने के लिए बाध्य करता है। भारत में भी ऐसे कानून चाहिए। दूसरा, हर डिजिटल विज्ञापन में प्रायोजक और उद्देश्य की जानकारी अनिवार्य हो। तीसरा, डिजिटल साक्षरता अभियान जरूरी हैं। भारत में केवल 38% लोग ऑनलाइन सामग्री की प्रामाणिकता परख पाते हैं।

वैश्विक सहयोग इस संकट से निपटने की रीढ़ है, क्योंकि इंटरनेट की सीमाहीन प्रकृति के कारण किसी एक देश के नियम नाकाफी हैं। 2024 में रूस और चीन से संचालित परिष्कृत अभियानों ने अफ्रीकी और एशियाई देशों के चुनावों को अपने नापाक इरादों का शिकार बनाया, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ खतरे में पड़ गईं। यूनेस्को की "रेकमेंडेशन ऑन द एथिक्स ऑफ एआई" (2021) जैसे वैश्विक ढांचे इस दिशा में सशक्त कदम हैं, जो एआई के नैतिक उपयोग को बढ़ावा देते हैं। फिर भी, इन प्रयासों को और अधिक समन्वित और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है, ताकि वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र की रक्षा हो सके।

हालाँकि, सबसे बड़ी ताकत जनता के जागरूक और विवेकपूर्ण मन में निहित है। तकनीक चाहे कितनी भी उन्नत हो, लोकतंत्र का असली आधार नागरिकों की सूझबूझ और सजगता है। यदि नागरिक बिना सोचे-समझे सूचनाओं को स्वीकार करते रहेंगे, तो लोकतंत्र का ढाँचा चरमराने लगेगा। लेकिन यदि वे सवाल उठाएँ, तथ्यों की गहन जाँच करें और सच को झूठ से अलग करने का संकल्प लें, तो कोई भी एल्गोरिदम या कृत्रिम बुद्धिमत्ता उनकी स्वतंत्र इच्छा को दबा नहीं सकती। यह जागरूकता ही वह दीपक है, जो तकनीक के अंधेरे तूफान में लोकतंत्र की लौ को जलाए रखेगा।

एआई एक दोधारी तलवार है, यह मानवता के लिए अभूतपूर्व अवसरों का सृजनकर्ता है, मगर अनियंत्रित होने पर लोकतंत्र का काल बन सकता है। 2024 के वैश्विक चुनावों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि समय तेजी से हाथ से निकल रहा है। केवल सख्त कानून, पूर्ण पारदर्शिता और जागरूक नागरिकों का अटल संकल्प ही लोकतंत्र की रक्षा कर सकता है। यदि हम अब भी नहीं चेते, तो जनता की स्वतंत्र इच्छा एल्गोरिदम के ठंडे, यांत्रिक जाल में कैद होकर एक भयावह भ्रम बन जाएगी, और लोकतंत्र का स्वर्णिम स्वरूप हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जीएसटी में टीडीएस विधि लागू करने से विवादों में आएगी भारी कमी

पंकज जायसवाल

इस बार स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले के भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने अबकी दिवाली में GST को लेकर एक बड़ा दीवाली गिफ्ट देने की घोषणा की तो पूरा देश झूम उठा. इसके बाद ही वित मंत्रालय ने जीएसटी के दो ही दर 5 फीसदी और 18 फीसदी का प्रस्ताव भेज दिया. इस पहल का स्वागत किया जाना चाहिए. चूँकि सरकार सुधार करने की सोच ही रही है, मेरा मानना है कि सरकार को इनपुट टैक्स क्रेडिट की विसंगतियों के चलते इसका क्रेडिट लेने वाले उन व्यापारियों को जो अपने वेंडर के बिल का जीएसटी के साथ पूरा भुगतान करने के बाद भी जब कई साल बाद जीएसटी विभाग का नोटिस आ जाता है तो व्यापारी हैरान परेशान हो जाता है, का भी समाधान करना चाहिए. चूँकि वह बिल के साथ जीएसटी तो वेंडर को दे ही चुका होता है लेकिन जब उसके वेंडर की गलती से उसके पास इसी इनपुट टैक्स क्रेडिट मय उच्च ब्याज दर के साथ भुगतान का नोटिस आता है तो वह परेशान हो जाता है. उसे लगता है कि मैंने तो वैलिड बिल पर वेंडर के भुगतान के साथ तो जीएसटी भर दिया है और जब भरा था तो वेंडर जीएसटी पोर्टल पर वैलिड और एक्टिव वेंडर था. अगर बाद में वह नहीं भरता है या उसका रजिस्ट्रेशन निरस्त हो जाता है तो यह तो विभाग की समस्या है. उसे यह हमारे ऊपर क्यों धकेल रहें हैं. आजकल ऐसे नोटिस बहुत आ रहें हैं. इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) की समस्या वास्तविक है. बहुत से व्यापारी वेंडर को वैलिड GST नंबर और इनवॉइस के साथ पूरा भुगतान कर देते हैं परंतु यदि वेंडर सरकार को टैक्स जमा नहीं करता या उसका रजिस्ट्रेशन बाद में रद्द हो जाता है तो खरीदार को ITC से वंचित कर दिया जाता है। यह वास्तव में व्यापारियों के लिए अन्यायपूर्ण और कैश फ्लो पर बोझ डालने वाला नियम की तरह हो जाता है। ऐसा नहीं है कि इसका समाधान नहीं है. इसका समाधान है जीएसटी को भी आयकर के टीडीएस के प्रावधान की तरह कर देना. सरकार को इस लगायत सुधार कर B२B सौदों के लिए जीएसटी में भी शत प्रतिशत टीडीएस का प्रावधान लाना चाहिए और इनपुट टैक्स क्रेडिट को आटोमेटिक रिफंड में बदल देना चाहिए. इससे जीएसटी की चोरी और इनपुट टैक्स क्रेडिट की गड़बड़ी दोनों रुक जाएगी. व्यापारियों की वर्किंग कैपिटल और नॉन पेमेंट से होने वाली पेनाल्टी की समस्या भी खत्म हो जाएगी क्योंकि बहुत से जीएसटी इसलिए नहीं भुगतान हो पा रहें हैं क्योंकि बिल देने के बाद पार्टियों से भुगतान काफी देर से आता है, उनकी देनदारी आज की तारीख में फंसी रहती है जबकि जीएसटी को अगले महीने भरना ही पड़ता है चाहे पैसा आये या ना आये और सामने वाली पार्टियाँ तो इनपुट टैक्स क्रेडिट लेकर अपना कॅश फ्लो बचा लेती हैं लेकिन पार्टियों का भुगतान देर से आता है.

अगर जीएसटी के भुगतान की जिम्मेदारी इनकम टैक्स के टीडीएस की तरह जीएसटी टीडीएस के रूप में सप्लाई प्राप्त करने वाले व्यक्ति के ऊपर डाल दी जाती है तो जीएसटी भुगतान करना काफी आसान हो जायेगा. इनपुट टैक्स क्रेडिट को लेकर विवाद शून्य हो जायेगा और सरकार का जीएसटी कर संग्रह बढ़ जायेगा . आयकर की तरह सप्लाई प्राप्त करने वाला व्यक्ति पोर्टल पर जाकर उस बिल के जीएसटी को जो वह पहले अपने सप्लायर को भुगतान कर रहा था, उसे वह उसके जीएसटी नंबर के सामने पोर्टल द्वारा भर दे जिससे सप्लायर के पोर्टल पर उसके जीएसटी का भुगतान अपडेट हो जायेगा। इससे बिक्री पर जीएसटी स्वतः ही जब भुगतान हो जायेगा तो उसे अपने इनपुट पर भुगतान किये गए जीएसटी का रिफंड क्लेम पैदा होगा जिसे आटोमेटिक कर भुगतान किया जा सकता है. इस प्रक्रिया में जब तक बी२बी का सौदा होगा, जीएसटी के सरकार को भुगतान की जिम्मेदारी आयकर की तरह भुगतानकर्ता की हो जाएगी. सिर्फ बी२सी सौदे में ही ग्राहक जीएसटी का भुगतान व्यापारी को और व्यापारी सरकार को करेगा. इससे इनपुट के व्यर्थ के विवादों का खात्मा हो सकता है. GST को TDS मॉडल जैसा बनाने का विचार व्यावहारिक है. व्यापारियों की वर्किंग कैपिटल की समस्या कम होगी। आज व्यापारी को कैश फ्लो न मिलने के बावजूद GST अगले महीने भरना पड़ता है जबकि ग्राहक देर से भुगतान करता है। यदि जिम्मेदारी ग्राहक पर डाल दी जाए तो व्यापारी को इस बोझ से राहत मिलेगी। टैक्स विवाद और नोटिस कम होंगे। ITC mismatches के कारण जो अनावश्यक नोटिस और ब्याज/पेनाल्टी लगते हैं, वह लगभग समाप्त हो जाएंगे।

इसकी कुछ चुनौतियाँ भी आयेंगी, जैसे B२B सौदों में जटिलता बढ़ सकती है. हर ग्राहक को अपने-अपने वेंडर के लिए पोर्टल पर GST जमा करना होगा या टीडीएस रिटर्न की तरह एक नया रिटर्न भरना पड़ेगा। छोटे व्यापारियों और MSMEs के लिए यह प्रक्रिया बढ़ सकती है। कैश फ्लो का दबाव ग्राहक पर शिफ्ट होगा. अभी सप्लायर पर दबाव है. TDS-जैसा GST लागू करने पर खरीदार को तुरंत GST भुगतान करना पड़ेगा चाहे उसने सप्लायर का बिल क्लियर किया हो या नहीं। सिस्टम और पोर्टल अपग्रेड की आवश्यकता पड़ेगी. GSTN को इस तरह के TDS-जैसे मैकेनिज़्म को लागू करने के लिए पूरी तरह रीडिज़ाइन करना पड़ेगा।

मेरा मानना है कि यही मौका है माननीय प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इसे लागू कर व्यर्थ के टैक्स विवादों से देश के व्यापारियों को बचा सकते हैं. यह सबसे बड़ा दिवाली गिफ्ट हो जायेगा और इससे सरकार का टैक्स कलेक्शन भी बढ़ जायेगा.

दक्षिणी दिल्ली में पत्रकारों को मिला नया मंच

'साउथ दिल्ली पत्रकार संघ' की कार्यकारिणी गठित वरिष्ठ पत्रकार राजनारायण मिश्रा बने अध्यक्ष

परिवहन विशेष न्यूज

दक्षिणी दिल्ली। आखिरकार लंबे संघर्षों के बाद पत्रकारों का अपना संगठन साउथ दिल्ली पत्रकार संघ का गठन ज्यादातर ग्रुप से जुड़े दक्षिणी दिल्ली के पत्रकारों की मौजूदगी में गठित हुआ जिसमें प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रोनिक मीडिया और विशिष्ट पत्रकारों के साथ फ्रीलांस पत्रकार, यूट्यूब पत्रकार एवं वीकली न्यूजपेपर पत्रकारों के साथ उनके अखबारों के संपादकों ने भाग लिया और दक्षिणी दिल्ली में पत्रकारों का सशक्त संगठन बनाने में अपनी अपनी महत्वपूर्ण भागेदारी को निभाया।

साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की यह तीसरी बैठक थी जो विश्वकर्मा कॉलोनी पुल प्रहलादपुर में आयोजित हुए जिसमें संगठन की कार्यकारणी समस्त ग्रुप के 50 से भी ज्यादा पत्रकारों के बीच चुनी गई। सभी पत्रकारों के बीच सभी पदों पर चुनाव कराए गए ओर अपनी अपनी दावेदारी पत्रकारों ने पद के हिसाब से रखी। सभी पत्रकारों ने अपना अपना वोट देकर संगठन की कार्यकारणी को चुना और एक सशक्त कार्यकारणी का गठन किया ओर दक्षिणी दिल्ली के इतिहास में पहली बार पत्रकारों का यह संगठन बन कर तैयार हुआ है जो आने वाले समय में पत्रकारों के लिए एक मिशाल बनेगा। चुनाव के बाद जो नतीजे आए वह इस प्रकार से है साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की टीम में सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर वरिष्ट पत्रकार पूर्व सहारा न्यूज एवं डी न्यूज के संपादक राजनारायण मिश्रा को चुना गया उनका लम्बा अनुभव संगठन को मजबूती प्रदान करेगा साथ ही वरिष्ट उपाध्यक्ष पद पर मोमना बेगम एवं सुनील परिहार के साथ हुंकार न्यूज से आशु आस मुहम्मद चुने गई ओर उपाध्यक्ष पद पर वरिष्ट पत्रकार रियासत अली, दीपक कुमार एव गिरीश कुमार को चुना गया। साउथ दिल्ली पत्रकार संघ के चुनाव में महासचिव पद पर वरिष्ट पत्रकार एव दक्षिणी दिल्ली में एक लम्बा अनुभव जिनका है पत्रकार अजीत कुमार चुने गए साथ ही मीडिया संयोजक एव प्रवक्ता पद पर अनुभवी एव दक्षिणी दिल्ली की पत्रकारिता में जनप्रचित चेहरा पत्रकार दीप सिलोड़ी को चुना गया। सचिव के

पद पर युवा पत्रकार स्वतंत्र सिंह भुल्लर साथ ही सह सचिव के लिए महिला पत्रकार बीना देवी जोशी एव रमेश भाई को चुना गया। कोसा अध्यक्ष के लिए वरिष्ट पत्रकार शरद कुमार सागर एवं संगठन सचिव के लिए साहिल संभव मंसूरी ओर प्रचार प्रसार सचिव अनुभवी पत्रकार कुंदन सिंह सहित संगठन संयोजक महेंद्र कुमार एवं सांस्कृतिक एवं खेलकूद सचिव युवा पत्रकार जितेंद्र दिवाकर को कार्यकारणी में जगह मिली ओर साथ ही कार्यकारणी सदस्यों में जो पत्रकार बंधु चुने गए उनमें निम्नलिखित पत्रकार थे जो इस प्रकार से है शुगुफता परवीन, मनोज सिंह, शमशुदीन सिद्दीकी, अजीत सिंह भूषण, मनोज कुमार ओर दीपक सिंह।साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की निर्वनिवाचित कार्यकारणी अध्यक्ष एवं समस्त टीम का मनोबल बढ़ाने मुख्य अतिथि सुरेन्द्र बिधूड़ी संयोजक स्वाभिमान देश का संगठन एवं दक्षिणी दिल्ली सांसद प्रतिनिधि भी पहुंचे और उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता एव पत्रकारों की बैठक में अपना पूर्ण सहयोग देने वाले मुकेश शर्मा एव उनके साथ आए हुए अतिथियों के साथ मिलकर नवनिर्वाचित अध्यक्ष का गुलदस्ते एव शाल के साथ सम्मान किया ओर विश्वास दिलाया कि एक बहुत सुंदर पहल पत्रकारों द्वारा की गई है हम इसका समर्थन करते है और पत्रकारों के साथ हमारा पूरा सहयोग रहेगा।

आपको बता दे कई सालों से प्रयास किया जा रहा था कि साउथ दिल्ली पत्रकार संघ बनाया जाए लेकिन कहीं कारणवश संयोग नहीं बन रहा था लेकिन फिर से पहल की गई ओर इसबार संगठन की विचारधारा को स्पष्ट रखा गया कि यह संगठन पत्रकारों के हितों की रक्षा के साथ उनके सुख दुख और परिवार के साथ हर मुसीबत में साथ रहेगा और पत्रकारों के मान सम्मान के लिए लड़ाई लड़ेगा। पत्रकारों की शक्ति में ही संगठन की मजबूती है एकता है और एकजुटता दिखती है यही सोच के साथ दक्षिणी दिल्ली के ज्यादातर पत्रकार बंधु समय इस ग्रुप से जुड़े ओर 50 से भी ज्यादा पत्रकार बंधु फिलहाल जुड़े हुए है जिन्होंने मिलकर साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की कार्यकारणी के चुनाव का एक सुर में सफलतापूर्ण गठन करने में अहम भूमिका निभाई।अध्यक्ष राज नारायण मिश्रा ने कहा कि हमारी प्रथम प्राथमिकता रहेगी कि संगठन को मजबूती के साथ दक्षिणी दिल्ली में खड़ा करना ओर संगठन की विचारधारा पर चलते हुए पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ अपने पद का निर्वाह करते हुए सभी को एक साथ एकता के सूत्र में पिरोना का रहेगा।दक्षिणी दिल्ली के सभी पत्रकार बंधुओ का तह दिल से धन्यवाद की उन्होंने मुझ पर विश्वास जताया और उनको विश्वास दिलाना चाहता हु कि पत्रकारों के लिए मेरा पूरा जीवन समर्पित रहेगा और उनका सुख दुख अब से मेरा सुख दुख रहेगा।साथ ही उनकी हर कसौटी पर खरा उतरूंगा यह विश्वास भी सभी पत्रकार बंधुओ को देना चाहता हु।आगे इस अवसर पर संगठन ने नवनिर्वाचित महासचिव अजीत कुमार ने कहा कि पत्रकारों ने बड़ी जिम्मेदारी मेरे कंधों पर डाली है उस जिम्मेदारी को बखूबी निभाऊंगा और अध्यक्ष एव समस्त कार्यकारणी के साथ तालमेल बना कर साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की विचारधारा को आगे बढ़ाएंगे साथ ही संगठन के लिए पूरी तरह से समर्पित रहूंगा अपनी हर जिम्मेदारियों को निस्वार्थ भाव से निभाऊंगा। आगे साउथ दिल्ली पत्रकार संघ के युवा एवं अनुभवी पत्रकार दीप सिलोड़ी जो मीडिया संयोजक एव प्रवक्ता पद पर चुने गए उन्होंने कहा कि आज बड़ी खुशी हो रही है कि हम लोगों की मेहनत रंग लाई और साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की पहली कार्यकारणी का गठन हुआ। जो सोच संगठन की है उसको लेकर आगे बढ़ेंगे और पत्रकारों के मान सम्मान एव परिवार के सुख दुख के साथ उनके हक की लड़ाई में पूरा संगठन उनके साथ खड़ा रहेगा एव यह भी संगठन की जिम्मेदारी होगी कि सभी पत्रकार बंधु पत्रकारों के नियमों के दायरे में रह कर दक्षिण दिल्ली में पत्रकारिता करे और पत्रकारिता के नियमों का उल्लंघन कोई पत्रकार बंधु ना करे उसपर भी ध्यान दिया जाएगा। संगठन में मुझे सचिव पद पर चुना गया है सभी पत्रकार बंधुओ का तह दिल से धन्यवाद करता हु और विश्वास दिलाना चाहता हु की आपकी उम्मीदों पर हम लोग खरा उतरेंगे। साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की कार्यकारणी में ज्यादातर सभी को ध्यान में रखते हुए साउथ, साउथ ईस्ट एवं साउथ वेस्ट एरिया के पत्रकारों को जगह दी गई है और एक सूत्र में सभी पत्रकारों को जोड़ा गया है।दक्षिणी दिल्ली के पुल प्रहलादपुर के विश्वकर्मा कॉलोनी में भारी संख्या में पत्रकार बंधु बैठक में पहुंचे थे और समर्थकों के बीच चुनी हुए समस्त साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की कार्यकारणी का भव्य स्वागत अतिथियों द्वारा किया गया।आए हुए सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा ने धन्यवाद किया ओर सभी वरिष्ट, सहयोगी पत्रकारों का भी धन्यवाद किया कि पहली बार दक्षिणी दिल्ली में पत्रकार संगठन बना ओर उसके गवाह हम सब पत्रकार बंधु बने और संगठन में ही शक्ति है सभी ने इस मंत्र पर अमल किया। उम्मीद यह संगठन पत्रकारों के हितों के लिए कार्य करेगा और नई सोच नई उम्मीद के साथ दक्षिणी दिल्ली में पत्रकार संगठन की नींव को मजबूत करने में कारगार साबित होगा।

बुजुर्ग – संस्कृति के संरक्षक, जीवन के मार्गदर्शक

[एक स्नेहिल स्पर्श से बदल सकता है बुजुर्गों का जीवन]

उन चेहरों पर समय की लकीरें नहीं, बल्कि जीवन की अमर गाथाएँ अंकित हैं। उनकी आँखों में समाया है अनुभवों का अथाह सागर, और उनके हाथों में बसी है हमारी संस्कृति की नींव। हमारे बुजुर्ग—हमारी जड़ें, हमारा अभिमान, हमारी अमूल्य धरोहर। 21 अगस्त को मनाया जाने वाला विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक आह्वान है—उन अनमोल आत्माओं को सम्मान देने का, जिनके कंधों पर हमारा वर्तमान टिका है। यह दिन हमें झकझोरता है, रुकने को मजबूर करता है और सवाल उठाता है: क्या हम सचमुच अपने बुजुर्गों को वह प्यार, सम्मान और समय दे पा रहे हैं, जिसके वे सच्चे हकदार हैं?

बुजुर्ग हमारे समाज का वह जीवंत दर्पण हैं, जो अतीत की गहराइयों को उजागर करते हैं और भविष्य की राह रोशन करते हैं। उनके अनुभवों में छिपा है वह अनमोल ज्ञान, जो ग्रंथों में नहीं समाता। उन्होंने युद्धों के दंश झेले, आजादी के लिए संघर्ष किया, और बदलते भारत के हर युग को आत्मसात किया। उनके किस्सों में बसती हैं वे सीखें, जो हमें जीवन की जटिल राहों पर दिशा देती हैं। फिर भी, आज की आपाधापी भरी दुनिया में हम अक्सर उनकी उपस्थिति को नजरअंदाज कर देते हैं। उनकी अनकही कहानियाँ, अनसुनी इच्छाएँ और अनदेखी जरूरतें आधुनिकता की चमक-दमक में कहीं गुम हो जाती हैं।

क्या हमने कभी उनकी अनकही इच्छाओं के गहरे अर्थ को सच्चे मन से टटोलने की कोशिश की? शायद वे चाहते हैं कि कोई उनकी जवानी के सुनहरे किस्सों को दिल की गहराइयों से सुने। शायद वे अपने अनुभवों के अनमोल खजाने को नई पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते हैं। या फिर, शायद उनकी ख्वाहिश बस इतनी-सी है कि कोई उनके साथ बैठे, चाय की चुस्कियों के बीच उनकी बातों को आत्मीयता और अपनत्व से सुने। विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस हमें यह एहसास दिलाता है कि उनकी ये छोटी-छोटी इच्छाएँ उतनी ही अनमोल हैं, जितना उनका हमारे जीवन और समाज में अमर योगदान।

आज के दौर में हमारे बुजुर्ग कई अनदेखी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। डिजिटल युग की चकाचौंध में उनकी भागीदारी एक अनसुलझा प्रश्न बनी हुई है। स्मार्टफोन और इंटरनेट के इस तीव्र गति वाले समय में कई बुजुर्ग तकनीक की जटिलताओं से अनजान हैं, जिसके चलते वे ऑनलाइन स्वास्थ्य सुविधाओं, बैंकिंग सेवाओं या सामाजिक मंचों तक पहुँच नहीं बना पाते। यह डिजिटल खाई उनके लिए एक नया अकेलापन लेकर आई है, जो उनकी दुनिया को और सिमटा देता है। इसके साथ ही, मानसिक स्वास्थ्य जैसे गंभीर मसले पर हमारा समाज खामोश रहता है। अकेलापन, अवसाद, और स्मृति से जुड़ी समस्याएँ बुजुर्गों के लिए गहरी चुनौतियाँ हैं, पर इन पर खुलकर बात करने का साहस हममें कम ही दिखता है। हमें ऐसी संवेदनशील व्यवस्थाएँ गढ़नी होंगी, जो उनकी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक जरूरतों को न केवल समझें, बल्कि उन्हें पूरी तरह संबोधित करें।

भारत, जहाँ परिवार और संस्कृति हमारी आत्मा का आधार हैं, वहाँ बुजुर्गों का स्थान हमेशा से पवित्र और पूजनीय रहा है। लेकिन बदलते दौर की चुनौतियों के बीच हमें अपनी परंपराओं को नई दृष्टि और संवेदनशीलता के साथ पुनर्जनन करना होगा। हमें अपनी नई पीढ़ी को यह सिखाना होगा कि बुजुर्गों का सम्मान केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि एक गहरा जीवन मूल्य है, जो हमारी पहचान को मजबूती देता है। कई बुजुर्ग आज भी अपने अथाह ज्ञान, कला, और अनुभवों के खजाने से समाज को समृद्ध करने की इच्छा रखते हैं। हमें उन्हें ऐसा मंच प्रदान करना होगा, जहाँ उनकी प्रतिभा न केवल नई पीढ़ी तक पहुँचे, बल्कि उसे प्रेरणा और दिशा भी दे।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि बुजुर्गों की देखभाल हमारी साझा नैतिक जिम्मेदारी है। सरकार को ऐसी नीतियाँ गढ़नी होंगी जो किफायती स्वास्थ्य सुविधाएँ, सामाजिक सुरक्षा, और सम्मानजनक जीवन की गारंटी दें। सामुदायिक केंद्रों का निर्माण, जहाँ बुजुर्ग एक साथ समय बिता सकें, उनकी बातें साझा कर सकें, और सामाजिक-मानसिक जरूरतों को पूरा कर सकें, एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। और हमारा योगदान? एक स्नेहपूर्ण फोन कॉल, एक आत्मीय मुलाकात, या उनकी छोटी-सी इच्छा को पूरा करना—ये छोटे-छोटे प्रयास उनके जीवन में अपार खुशी और अर्थ ला सकते हैं।

उम्र महज एक संख्या है, पर उनके जुनून और रचनात्मकता की कोई सीमा नहीं। आज भी कई बुजुर्ग अपने अटूट जोश और प्रेरक कर्मों से समाज को नई दिशा दे रहे हैं। वे लेखक बनकर अमर कहानियाँ रच रहे हैं, सामाजिक कार्यकर्ता बनकर परिवर्तन की लौ जला रहे हैं, या अपने परिवार को एकजुट रखकर नई पीढ़ी को जीवन के मूल्यों का पाठ पढ़ा रहे हैं। हमें उनकी इन अनमोल क्षमताओं को न केवल पहचानना होगा, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित कर एक मंच देना होगा, जहाँ उनकी प्रतिभा समाज को और समृद्ध करे।

इस विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर एक पवित्र संकल्प लें, हम अपने बुजुर्गों को न केवल सम्मान और स्नेह देंगे, बल्कि उनकी अनकही इच्छाओं और अनसुनी जरूरतों को दिल से समझेंगे। वे हमारी जड़ें हैं, जिनके बिना हमारा वजूद अधूरा है। उनकी कहानियों को आत्मीयता से सुनें, उनके अनुभवों से जीवन की गहरी सीख लें, और उनके जीवन को प्रेम, सम्मान और खुशियों से सजाएँ। यह दिन केवल उत्सव का नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत का प्रतीक है—एक ऐसे समाज के निर्माण का, जहाँ हर बुजुर्ग को वह प्यार, गरिमा और सम्मान मिले, जिसके वे सच्चे हकदार हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

महावन क्षेत्र में बरेली हाईवे पर केमिकल टैंकर पलटने से लगी आग को बड़ी मशक्कत के बाद दमकल विभाग एवं सिविल डिफेंस ने पाया आग पर काबू

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: मथुरा में महावन क्षेत्र में बरेली हाईवे पर बुधवार सुबह एक केमिकल से भरा टैंकर मनोहरपुर गांव के पास बेकाबू होकर पलट गया। पलटने के बाद केमिकल से भरे टैंक फट गए। जिससे भीषण आग लग गई। धमाके की आवाज और आग की लपटे देखकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। टैंकर राया की ओर से नेशनल हाईवे की तरफ जा रहा था। लोगों ने दमकल विभाग एवं सिविल डिफेंस मथुरा को सूचना दी। इसके बाद दमकल की पांच गाड़ियां एवं सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम के 20 जवान और रिफाइनरी की टीम भी मौके पर पहुंची। आग पर काबू पाने की कोशिश में जुटे एफएसओ किशन सिंह और फायरमैन शकीरा झुलस गए। दमकल अधिकारी ने बताया कि टैंकर में केमिकल भरा होने के कारण से आग लगातार भड़क रही है। उस पर काबू पाना बेहद मुश्किल हो रहा है। टैंकर में कुल चार टैंक थे। जिनमें से एक फट चुका है। जबकि बाकी टैंको में भी धमाका होने का खतरा बना हुआ है। आग को काबू में करने के लिए दमकल विभाग, पुलिस प्रशासन एवं सिविल डिफेंस की टीम और रिफाइनरी की टीम ने बड़ी मशक्कत के बाद टैंकर में लगी आग पर काबू पा लिया गया है ।ग्रामीणों का कहना है कि टैंकर पलटने और उसमें धमाका होने की आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई दी। आग की लपटे और धुंआ दूर से ही दिखाई दे रहा था। अधिकारी लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं और आग पर काबू बड़ी मशक्कत के बाद काबू पा लिया गया है। हादसे के चलते हाईवे पर यातायात प्रभावित हुआ है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। प्रशासन एवं सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक ने लोगों से मौके के आसपास ना जाने की अपील की है।

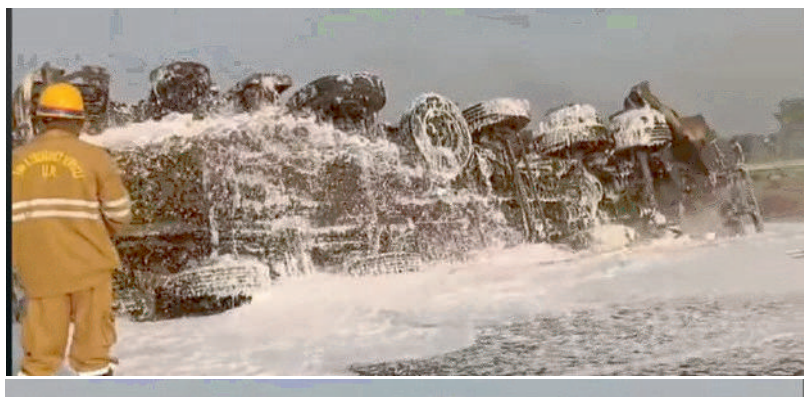

मंत्रियों और विधायकों के वेतन भत्ते में बढोत्तरी से यूपी सरकार ने उड़ाया गरीबों का मजाक : राकेशमणि

सुनील बाजपेई

कानपुर। योगी आदित्यनाथ की अगुवाई वाली उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मंत्रियों के वेतन भत्ते में 38 प्रतिशत व विधायकों के वेतन भत्ते में 41 प्रतिशत बढोत्तरी के खिलाफ देश के चर्चित श्रमिक संगठन हिंद मजदूर किसान पंचायत ने जोरदार मोर्चा खोल दिया है।

हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश महामत्री राकेशमणि पाण्डेय ने इसकी घोर निंदा करते हुए कहा कि टैक्स देने वाले लोगों के हित में खर्च किए जाने वाले पैसे को मंत्रियों विधायकों के वेतन भत्तों को बढ़ाने में खर्च करना गरीबों का मजाक उड़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

हिंद मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय महासचिव राकेश मणि पांडेय ने इस मुद्दे पर सत्ता पक्ष के साथ ही विपक्ष की भी निंदा की इसे बेहद दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि यह दोनों ही एक सुर में इसे स्वीकार करते हैं।

उन्होंने कहा कि इसका स्पष्ट मतलब यह है कि जो पार्टियां गरीब वर्गों की सहायता के लिए सदन के बाहर व अन्दर शोर मचाती रहती हैं। उसके लोग भी इस मलाई को लेने के लिए आतुर रहते हैं। उन्होंने कहा कि एक ओर जहां स्कूल पर स्कूल बन्द किये जा रहे, नई भर्तियों पर रोक है और आये दिन छटनी व बेरोजगारी फैल रही है। वहीं दूसरी ओर सरकार

मंत्रियों विधायकों के वेतन भत्ते बढ़ोतरी जैसा निंदनीय कार्य कर रही है।

अनेक सफल मजदूर आंदोलन के भी अगुवा कार राकेश मणि पांडे ने कहा कि एक ओर

सरकार आर्थिक विपन्नता का रोना भी रोती है और दूसरी ओर अनाज सनाप लाखों करोड़ों का हितलाभ मंत्रियों व विधायकों को उनके वेतन भत्ते बढ़ोतरी के रूप में दिया जा रहा है।

हिंद मजदूर किसान पंचायत के बड़े पदाधिकारी नेता राकेश मणि पांडेय ने यह भी कहा कि जबतक देश के सभी नागरिकों को मुफ्त और एक समान शिक्षा, चिकित्सा और आवास की समस्या हल नहीं होती है, तब तक आजादी का कोई महत्व नहीं रह जाता है।

उन्होंने का ऐसा किए जाने से देश के आजादी कराने वालों ने जो परिकल्पना की थी वह धूमिल हो गयी है और अब तो चुनाव में भी लाखों करोड़ो खर्च करने वाले ही सामने आते हैं। जिससे साबित होता है कि पूरे देश में अब धन बल और पशुबल की राजनीति पर हावी हो गयी है। न्याय पालिका भी समुचित न्याय कर पाने में असमर्थ है।

एनआईआईटी से वैशाली शर्मा जी ने साइबर क्राइम से कैसे जागरूक हो सकते हैं, इस बारे में जानकारी दी। बच्चों और अध्यापिकाओं ने ध्यान से सुना और अपने विचार भी साझा किए। धन्यवाद वैशाली जी (एनआईआईटी)।

जिले भर में ट्रैक्टर से स्टंट करने वाले पुलिस लाखों समझने के बाद नहीं आ रहे बाजफेसबुक पर बेखौफ डाल रहे वीडियो और ट्रैक्टर बाजी को शर्तें लगा कर रहे टोचन बदायूं जिले का वीडियो वायरल।

ब्रह्मलीन स्वामी गोकुलानंद महाराज का त्रिदिवसीय तिरोभाव महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

भगवद् प्राप्त संतों व भक्तों का भूमि है श्रीधाम वृन्दावन : महामंडलेश्वर साध्वी राधिका साधिका पुरी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित श्री कपिल कुटीर सांख्य योग आश्रम में चल रहा ब्रह्मलीन संत प्रवर स्वामी गोकुलानंद महाराज का त्रिदिवसीय तिरोभाव महोत्सव विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ ।सर्वप्रथम संतों व भक्तों के द्वारा ब्रह्मलीन स्वामी गोकुलानंद महाराज की प्रतिमा का श्रीहरिनाम संकीर्तन के मध्य पूजन-अर्चन किया गया ।साथ ही उनकी महाआरती की गया ।तत्पश्चात आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए महामंडलेश्वर साध्वी राधिका साधिका पुरी जटा वाली मां ने कहा कि श्रीधाम वृन्दावन भगवद् प्राप्त संतों व भक्तों का भूमि है ।यहां वही मनुष्य आ पाते हैं, जिन पर भगवान श्रीकृष्ण और श्रीराधा रानी की कृपा होती है ।ब्रह्मलीन स्वामी गोकुलानंद महाराज भी श्रीकृष्ण और श्रीराधा रानी के परम कृपापात्र थे ।उन्होंने ब्रज में साधनारत रहकर कई बार प्रभु की लीलाओं का दर्शन किया था।

चिंतामणि कुंज के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानन्द गिरि महाराज व महामण्डलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज ने कहा कि साधु-सन्त कोई साधारण मनुष्य नहीं अपितु स्वयं अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं। सन्त ही हमें प्रभु की लीलाओं, उनके स्वरूप व अस्तित्व का आभास कराते हैं ।इसीलिए हमें संतों की शरण में जाना चाहिए,जिससे हमारा कल्याण हो सके।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने कहा कि स्वामी गोकुलानंद महाराज ब्रज की बहुमूल्य निधि थे ।उन्होंने ईश्वर प्रदत्त आलौकिक शक्ति से अनेकानेक व्यक्तियों का कल्याण किया।

इस अवसर महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. सत्यानंद सरस्वती (अधिकारी गुरूजी), महामण्डलेश्वर स्वामी वेदानंद महाराज, वरिष्ठ भाजपा नेता रामदेव सिंह भगौर, प्रमुख समाजसेवी देवीसिंह कुंतल, भागवताचार्य साध्वी आशानन्द शास्त्री, पवन गौतम, साध्वी पूर्णिमा साधिका, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, स्वामी भुवनानंद महाराज, पप्पू सरदार, राजू शर्मा, रामप्रकाश सक्सेना, प्रेम मन्दिर के जनसंपर्क अधिकारी अजय त्रिपाठी, डॉ. विनय लक्ष्मी सक्सेना, बी.के. सूतल, पूनम उपाध्याय,साध्वी कमला नमिता साधिका, साध्वी कमला साधिका आदि की उपस्थिति विशेष रही ।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया ।महोत्सव का समापन महामण्डलेश्वरों, श्रीमहन्तों व महन्तों के सम्मान एवं संत,ब्रजवासी, वैष्णव सेवा और वृहद भंडारे के साथ हुआ ।इससे साथ ही विश्व कल्याणार्थ चल रहा वृहद महायज्ञ भी पूर्ण हुआ ।जिसमें देश-विदेश से आए समस्त भक्त-श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य अपनी आहुतियां दीं।

ट्रंप का टैरिफ वार:- रूस-चीन- भारत (आरसीआई) त्रिकोण का नई वैश्विक शक्ति संरचना की ओर कदम बढ़ा-वैश्विक पश्चिमी समूह सख़्ते में?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था इस समय जिस मोड़ पर खड़ी है, वहाँ हर कदम और हर निर्णय आने वाले दशकों की शक्ति- संतुलन की रूपरेखा तय कर रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हाल में उठाए गए टैरिफ वार के कदमों ने न केवल भारत बल्कि एशियाई परिदृश्य में गहरी अनिश्चितता पैदा कर दी है ।भारत को अब यह समझना पड़ा है कि एकपक्षीय अमेरिकी दबाव और संरक्षणवाद के बीच अपनी अर्थव्यवस्था को टिकाऊ और सशक्त बनाए रखने के लिए बहुस्तरीय रणनीतिक साझेदारियाँ आवश्यक हैं ।अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति-संतुलन कभी स्थिर नहीं रहता। बदलते भू-राजनीतिक हालात, आर्थिक टकराव, सामरिक हित और व्यापारिक रणनीतियाँ नए गठबंधन गढ़ती और पुराने समीकरण तोड़ती रहती हैं। 21वीं सदी के तीसरे दशक में, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आक्रामक आर्थिक नीतियों और टैरिफ वार ने वैश्विक व्यापार पर गहरा असर डाला है। यही नहीं, इन नीतियों ने एशिया में एक नए त्रिकोणीय गठबंधन- रूस,चीन और भारत (आरसीआई) ,के उभरते स्वरूप को भी जन्म दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में अगस्त 2025 के मध्य दिनों में कई ऐसे घटनाक्रम घटे जिन्होंने भारत-चीन-रूस त्रिकोण (आरसीआई) को मजबूती की दिशा में निर्णायक आगे धकेल दियाहै। 18 और 19 अगस्त को चीनी विदेश मंत्री का भारत दौरा, 19 अगस्त को भारतीय विदेश मंत्री का मास्को जाना और 31 अगस्त को प्रधानमंत्री का बीजिंग दौरे की संभावना,ये सब घटनाएँ संकेत देती हैं कि भारत अपनी विदेश नीति में लचीलापन और व्यावहारिकता दोनों को नया आयाम दे रहा है।

साथियों बात अगर हम ट्रंप के साथ टैरिफ वार और भारत के सामने खड़ी चुनौती को समझने की करें तो,ट्रंप प्रशासन का टैरिफ वार मूलतःअमेरिकी उद्योगों को बचाने और घरेलू नौकरियों को संरक्षित करने की आक्रामक रणनीति है। लेकिन इसने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को झकझोर दिया है। भारत पर भी इसका असर पड़ा है, क्योंकि अमेरिका भारत के लिए बड़े निर्यात बाज़ारों में से एक है। ट्रंप ने विशेष रूप से भारतीय स्टील, दवाओं, आईटी सेवाओं और मैन्युफैक्चरिंग गुड्स पर 27 अगस्त से टैरिफ की धमकी दी है। इस अनिश्चितता ने भारतीय उद्योगों को नई साझेदारियाँ तलाशने के लिए मजबूर कर दिया है ।भारत समझ गया है कि केवल अमेरिका और यूरोप पर निर्भर रहना जोखिमपूर्ण है। यही कारण है कि चीन और रूस जैसे देशों के साथ सहयोग को नई प्राथमिकता मिल रही है ।चीनी विदेश मंत्री से पहले दिन बैठक होने के अगले ही दिन भारतीय विदेश मंत्री मास्को रवाना हुए। यह समय-निर्धारण यूं ही नहीं था। इसने स्पष्ट किया कि नई दिल्ली बीजिंग और मॉस्को दोनों के साथ लगातार संवाद बनाए रखना चाहती है ।मॉस्को में भारतीय विदेश मंत्री की वार्ता का मुख्य एजेंडा संभवतः ऊर्जा व्यापार, रक्षा सहयोग और डॉलर के विकल्प के रूप में राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने पर केंद्रित रहने की संभावना है। रूस ने अमेरिका के प्रतिबंधों का सामना करने के बाद चीन और भारत दोनों की ओर झुकाव तेज किया है। वहीं भारत भी यह समझता है कि तेल और रक्षा क्षेत्र में रूस एक भरोसेमंद साझेदार बना रह सकता है ।पिछले एक दशक में रूस से संबंध और अधिक मजबूत हुए हैं। दोनों देशों ने ऊर्जा,रक्षा और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आपसी निर्भरता बढ़ाई है ।अमेरिका और यूरोप द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने रूस को चीन की ओर और नज़दीक ला दिया ।भारत के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है। एक ओर वह अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ आर्थिक व तकनीकी साझेदारी चाहता है, वहीं दूसरी ओर रूस और चीन के साथ ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामरिक रिश्तों को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकत। यही कारण है कि भारत ने रूस-चीन के त्रिकोणीय ढांचे में अपनी भूमिका को संतुलित और रणनीतिक तरीके से परिभाषित करना शुरू किया है,जो रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम भारत, रूस और चीन,तीनों देश अपनी- अपनी जरूरतों और चुनौतियों से घिरे हैं होने की करें तो,भारत को अमेरिका के टैरिफ और तकनीकी प्रतिबंधों से निकलने के लिए वैकल्पिक बाजारों और साझेदारियों की ज़रूरत है ।चीन अमेरिका के सीधे व्यापार युद्ध से जूझ रहा है और एशियाई देशों के साथ गठबंधन मजबूत करना चाहता है ।रूस पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण ऊर्जा और रक्षा बाजार को एशिया में स्थिर करना चाहता है ।इन तीनों की आवश्यकताएँ मिलकर आरसीआई त्रिकोण को आकार देती हैं। यह गठबंधन केवल सामरिक ही नहीं बल्कि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से भी संतुलन साध सकता है ।आरसीआई त्रिकोण यदि मजबूत होता है, तो यह अमेरिका और यूरोप केंद्रित व्यवस्था के सामने एक नई धुरी स्थापित कर सकता है। यह न केवल टैरिफ वार का जवाब होगा बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था (मल्टीपॉलर वर्ल्ड आर्डर) को भी नई गति देगा ।भारत की भागीदारी इस त्रिकोण को खास बनाती है क्योंकि भारत के पास जनसांख्यिकीय लाभ, तकनीकी क्षमता और भू- राजनीतिक महत्व है। चीन के पास आर्थिक ताकत और रूस के पास ऊर्जा-रक्षा संसाधन हैं। यदि ये तीनों समन्वित होते हैं, तो यह वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की आवाज़ को और मजबूत बना सकता है ।अमेरिका की आक्रामक टैरिफ नीति ने अनजाने में ही रूस, चीन और भारत को एक दूसरे के और करीब ला दिया है। जुलाई 2025 की घटनाओं ने इस संभावना को और प्रबल किया है कि आने वाले वर्षों में एक नया त्रिकोणीय ढांचा आरसीआई, वैश्विक राजनीति का निर्णायक तत्व बनेगा। भारत के लिए चुनौती यह होगी कि वह अपनी स्वायत्त विदेश नीति बनाए रखते हुए इस गठबंधन का हिस्सा बने और साथ ही अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के साथ भी संतुलन साधे। विश्व राजनीति के इस संक्रमणकाल में, एशियाई शक्तियों का यह त्रिकोण केवल व्यापार या रक्षा तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि 21वीं सदी के भू-राजनीतिक नक्शे को गहराई से प्रभावित करेगा।

अतः अगर हम आपके पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे किट्रंप का टैरिफ का रस्किन भारत आईसीआई त्रिकोण का नई वैश्विक शक्ति संरचना की ओर कदम बढ़ा ।ट्रंप की टैरिफ नीतियों ने एशिया में एक नए त्रिकोणीय गठबंधन-रूस, चीन और भारत (आरसीआई)-के उभरते स्वरूप को भी जन्म दिया है ।वैश्विक बदलते भू-राजनीतिक हालात, आर्थिक टकराव, सामरिक हित और व्यापारिक रणनीतियाँ नए गठबंधन गढ़ती और पुराने समीकरण तोड़ती रहती हैं।

2027 तक भारत में लॉन्च होंगी 15 नई हाइब्रिड SUV, लिस्ट में Maruti, Hyundai से लेकर Mahindra तक की गाड़ियां

भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं क्योंकि ये फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस का संतुलन बनाती हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की तरह इनमें रेंज की चिंता नहीं होती। भारतीय बाजार में 2027 तक 15 नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च होंगी। Maruti Suzuki Mahindra Hyundai Kia और Honda जैसी कंपनियां इस दौड़ में शामिल हैं जो विभिन्न हाइब्रिड मॉडल्स पेश करने की तैयारी में हैं।

नई दिल्ली। भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से पॉपुलर हो रही है, क्योंकि यह फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस के बीच बेहतर संतुलन बनाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों के विपरीत, हाइब्रिड गाड़ियों में रेंज की चिंता नहीं होती है और न ही उन्हें व्यापक चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होती है। इसे देखते हुए भारतीय बाजार में 15 नई हाइब्रिड SUV साल 2027 तक लॉन्च होंगी। आइए विस्तार में जानते हैं कि भारत में कौन सी हाईब्रिड गाड़ियां लेकर आने वाली है।

2027 तक आने वाली 15 हाइब्रिड SUV की लिस्ट

आगामी हाइब्रिड SUV (Upcoming Hybrid SUV) संभावित लॉन्च (Expected Launch)

Maruti Escudo 3 सितंबर, 2025
Maruti Fronx Hybrid 2026
Mahindra XUV3XO Hybrid 2026
Mahindra Range Extender SUVs 2026–2027
New-Gen Hyundai Creta 2027
Hyundai Ni1i (7-seater) 2027
New-Gen Kia Seltos 2027
Kia Q4i (3-row SUV) 2027
Honda CR-V 2025 के अंत तक
Honda Elevate Hybrid दिवाली 2026
Honda 7-Seater SUV 2027
New-Gen Renault Duster 2026
Renault Boreal 2026–2027
Nissan C-Segment SUV 2026
Nissan 7-Seater SUV 2026–2027

Maruti Suzuki की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

भारत की सबसे बड़ी यात्री वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की Grand Vitara पर बेस्ड एक नई मिड-साइज SUV पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी इसे 3 सितंबर, 2025 को लॉन्च करने वाली है। इसे 1.5L पेट्रोल-हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके अलावा, 2026 में मारुति अपनी इन-हाउस विकसित स्ट्रांग हाइब्रिड सिस्टम को फ्रोंक्स हाइब्रिड में पेश करेगी, जिसमें कंपनी की सीरीज हाइब्रिड प्रणाली के साथ 1.2L Z12E पेट्रोल इंजन होगा।

Mahindra की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

महिंद्रा एंड महिंद्रा 2026 में अपनी XUV 3XO कॉम्पैक्ट SUV के एक स्ट्रांग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ हाइब्रिड सेगमेंट एंट्री में कदम रखने की योजना बना रही है। इस मॉडल में एक 1.2L टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन के साथ एक हाइब्रिड सिस्टम भी होगा। Mahindra BE 6 और XUV.e9 को भी हाइब्रिड सिस्टम के साथ लाने की तैयारी चल रही है। इसमें साल 2026 या 2027 तक रेंज एक्सटेंडर हाइब्रिड पावरट्रेन हो सकते हैं।

Hyundai और Kia की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

Hyundai मोटर इंडिया अपनी दो हाइब्रिड SUV को लाने की तैयारी कर रही है। इसमें एक नई जनरेशन की क्रेटा हाइब्रिड के साथ ही एक 7-सीटर SUV लाने की तैयारी कर रही है। इन दोनों मॉडलों के 2026 तक आने की उम्मीद है।

Hyundai के साथ ही Kia भी हाइब्रिड सेगमेंट में एंट्री की तैयारी कर रही है। कंपनी नई जनरेशन की सेल्टोस को हाइब्रिड सिस्टम के साथ ला सकती है, जिसके साल 2027 तक लॉन्च होने की संभावना है। सके बाद एक बिल्कुल नई 3-रो वाली SUV भी आएगी, जिसमें हाइब्रिड तकनीक होगी।

होंडा का हाइब्रिड लाइन-अप

होंडा कार्स इंडिया द्वारा अपनी लोकप्रिय वैश्विक हाइब्रिड SUV, जेडआर-वी (ZR-V), को 2025 के अंत तक पेश करने की उम्मीद है। एलिवेट SUV का एक हाइब्रिड वर्जन दिवाली 2026 के आसपास आ सकता है। कंपनी एक नई 7-सीटर SUV पर भी काम कर रही है, जो होंडा के नए मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर आधारित होगी।

विनफ़ास्ट लाएगी नैनो से भी छोटी इलेक्ट्रिक कार, "एमजी धूमकेतु" को देगी कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

वियतनामी वाहन निर्माता Vinfast जल्द ही भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी VF 6 और VF 7 को लॉन्च करेगी। कंपनी Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट भी दायर किया है जो टाटा नैनो से भी छोटी होगी। इस 2-डोर इलेक्ट्रिक कार में 14.7 kWh का बैटरी पैक और 20 kW की इलेक्ट्रिक मोटर होगी जो 170 किमी की रेंज देगी। इसका मुकाबला MG Comet से होगा।

नई दिल्ली। Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी दो इलेक्ट्रिक SUV VF 6 और VF 7 को लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी बुकिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने हाल ही में Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट दायर किया है। यह एक छोटी इलेक्ट्रिक कार होने वाली है। इस इलेक्ट्रिक कार की साइज टाटा नैनो से भी छोटा होने वाला है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला MG Comet से देखने के लिए मिलेगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vinfast की यह छोटी इलेक्ट्रिक कार किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

स्टाइलिंग और फीचर्स

वियतनामी बाजार में, Vinfast Minio Green को एक व्यावसायिक इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में ऑफर किया जाता है। इसकी लंबाई 3,090 मिमी है। इसे 2-डोर ऑल-इलेक्ट्रिक सुपरमिनी सेगमेंट में पेश किया जाता है। इसे टॉल-बॉय प्रोफाइल दिया गया है, जो लोगों का काफी आसानी से ध्यान खींचती है। इसमें क्लोज्ड-ऑफ ग्रिल, अर्ध-वृत्ताकार-स्टाइल की हेडलाइट्स और प्रमुख बम्पर डिजाइन दिया गया है। इसमें छोटा बोनट, सर्कुलर व्हील आर्च, 13-इंच के पहिए और पारंपरिक दरवाजे के हैंडल दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ EV में एक शार्क फिन एंटीना, एक फ्लैट विंडस्क्रीन और वर्टिकली स्टैक्ड टेल लैंप भी मिलता है। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन में लेकर आया जाएगा।

Vinfast Minio Green का इंटीरियर

इसमें डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दिया गया है, जो इंफोटेनमेंट सिस्टम के रूप में भी काम करता है। इसमें डैश, दरवाज़े के हैंडल और अपहोल्स्ट्री पर नीले एक्सेंट के साथ एक ग्रे इंटीरियर थीम दिया गया है। बाकी फीचर्स के रूप में रोटरी डायल, कुछ फिजिकल बटन और एक फ्लैट बॉटम 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। इसके साथ ही 4-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, फैब्रिक सीट अपहोल्स्ट्री और डे-एंड-नाइट इंटीरियर रियरव्यू मिरर भी मिलता है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए ड्राइवर एयरबैग, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं।

परफॉरमेंस और रेंज

Vinfast Minio Green में 14.7 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर 20 kW होगी, जो 27 PS की पावर और 65 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करेगा। Minio Green की टॉप स्पीड 80 किमी/घंटा है। NEDC मानकों के अनुसार, रेंज 170 किमी है। EV 12 kW तक की चार्जिंग को सपोर्ट करती है।

मारुति ऑल्टो बनी मॉनसून किंग, पानी से भरी सड़क को आसानी से किया पार

गुवाहाटी में भारी बारिश के कारण जलमग्न सड़कों पर एक मारुति सुजुकी ऑल्टो ने शानदार प्रदर्शन किया। एसयूवी के सामने अक्सर फीकी लगने वाली ऑल्टो ने बाढ़ग्रस्त सड़कों पर आसानी से नेविगेट किया। वायरल वीडियो में ऑल्टो घुटनों तक गहरे पानी से गुजरती हुई दिखाई दी। ऑल्टो के हल्के डिजाइन और सटीक हैंडलिंग ने इसे जलमग्न सड़कों पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद की।

नई दिल्ली। मानसून के मौसम में गुवाहाटी में जमकर बरिश होती है। हाल में वहां पर इतनी ज्यादा बारिश हुई ही अंडरपास की सड़क पूरी तरह से डूब गई है। इस दौरान वहां पर कुछ ऐसा हुआ, जिसे देखकर हर कोई हैरान रह गया। शहर की जलमग्न सड़कों और अराजकता के बीच, एक मारुति सुजुकी ऑल्टो अप्रत्याशित हीरो बनकर उभरी, जिसने बाढ़ग्रस्त सड़कों पर आसानी से नेविगेट किया। अक्सर महिंद्रा थार और टोयोटा फॉर्च्यूनर जैसी एसयूवी (SUV) के सामने फीकी लगने वाली ऑल्टो ने साबित कर दिया कि शहरी बाढ़ से निपटने के लिए सिर्फ बड़ा होना ही काफी नहीं है।

जलमग्न सड़क से आसानी से निकली Alto

वायरल वीडियो में Alto गुवाहाटी के सबसे व्यस्त इलाकों में से एक में घुटनों तक गहरे पानी से गुजरती हुई दिखाई दी। छोटी सी दिखने वाली यह कार, जिसे अक्सर शहर में चलने के लिए एक एंट्री-लेवल वाहन माना जाता है, उसने अविश्वसनीय स्थिरता और नियंत्रण दिखाया। ऑल्टो के बाढ़ग्रस्त सड़कों से गुजरने के वीडियो सोशल मीडिया पर तुरंत वायरल हो गया है, जिसे हजारों लाइक्स और कमेंट्स मिले। इसके साथ ही लोगों ने अल्टो की तारीफ भी की है।

क्यों Alto ने किया कमाल?

Alto जलमग्न सड़क से आसानी से निकलने को लेकर कहा जा रहा कि थार और फॉर्च्यूनर जैसी एसयूवी ऑफ-रोड और कठिन इलाकों के लिए बनाई गई हैं, वहीं ऑल्टो का बाढ़ में प्रदर्शन स्मार्ट ड्राइविंग और कॉम्पैक्ट वाहन की गतिशीलता के महत्व को बताता है। इसके हल्के डिजाइन, छोटे आकार और सटीक हैंडलिंग ने इसे उन जगहों पर रुकने से बचाया, जहां बड़े वाहन संघर्ष कर रहे थे। इसने जलमग्न सड़क अपनी पकड़ को बनाए रखा।

लोगों का रिएक्शन

Alto का जलमग्न सड़क से आसानी से निकलने का वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रहा है। इसको लेकर सोशल मीडिया पर एक यूजर ने लिखा कि "हमने थार और फॉर्च्यूनर को ऐसा करते देखा है, लेकिन ऑल्टो को एक्शन में देखना तो नेक्स्ट लेवल है!" दूसरे यूजर ने लिखा कि "लॉर्ड ऑल्टो नो मर्सी मोड में है! जब यह छोटी लीजेंड मौजूद है तो एसयूवी की किसको जरूरत है?"

2026 केटीएम 690 एंड्यूरो आर और 690 एसएमसी आर पेश; नए इंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजाइन से लैस

KTM ने 690 Enduro R और 690 SMC R मोटरसाइकिलें पेश की हैं जिनमें नया इंजन इलेक्ट्रॉनिक्स एर्गोनॉमिक्स और स्टाइलिंग अपडेट हैं। 79hp पावर और 73Nm टॉर्क के साथ इनमें अपडेटेड TFT डिस्प्ले KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग और कॉर्नरिंग ABS जैसे फीचर्स हैं। सितंबर 2025 में ग्लोबल लॉन्च की उम्मीद है भारत में लॉन्च की तारीख अभी अज्ञात है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। KTM ने अपनी दो मोटरसाइकिल 690 Enduro R और 690 SMC R को पेश किया है। यह दोनों ही बाइक को पूरी तरह से बदला हुआ इंजन, नए इलेक्ट्रॉनिक्स, अपडेटेड एर्गोनॉमिक्स और नए स्टाइलिंग के साथ लेकर आया गया है। इसके बाद भी यह अपनी अलग ऑफ-रोड और सुपरमोटो पहचान को बरकरार रखती है। आइए जानते हैं कि यह दोनों बाइक किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

इंजन में हुआ बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को इंजन बदलाव के साथ लेकर आया गया है। इसके साथ ही क्रैंककेस, क्लच और स्टेटर कवर, ऑयल-डिलीवरी सिस्टम और फ्यूल पंप के डिजाइन में भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें अपडेटेड वाल्व टाइमिंग दी गई है। इससे इसने लेटेस्ट मानदंडों का पालन करते हुए 79hp की पावर और 73Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जो पिछले मॉडल से 5hp ज्यादा है।

इसके साथ ही कंपन को कम करने के लिए रबर इंजन माउंट्स पेश किए गए हैं। इसमें से सरल इंटेक लेआउट के लिए सेकेंडरी एयर सिस्टम को हटा दिया गया है और ज्यादा कॉम्पैक्ट मफलर के साथ एग्जॉस्ट को फिर से तैयार किया गया है। इसमें नई 65-डिग्री ट्विस्ट ग्रिप के कारण थ्रॉटल रिएक्शन को तेज किया गया है।

अपडेटेड टेक्नोलॉजी

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R के लिए बड़ा अपडेट पुराने LCD डैश को एक 4.2-इंच के कलर TFT डिस्प्ले से बदल दिया गया है। इसमें KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग, USB-C चार्जिंग, संगीत और कॉल कंट्रोल, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें नए बैकलिट स्विचगियर और एक डेडिकेटेड ABS-ऑफ बटन के साथ जोड़ा गया है।

राइडर एड्स में अब लीन-सेंसिटिव कॉर्नरिंग ABS और कॉर्नरिंग MTC मानक रूप से दिया गया है, जिसमें Enduro R में एक रैली मोड जोड़ा गया है, जो एडजस्टेबल ट्रैक्शन और मोटर-स्लिप रेगुलेशन देता है। SMC R को लॉन्च कंट्रोल, 5-स्टेज एंटी-व्हीली, स्लिप एडजस्टर और सुपरमोटो-विशिष्ट ABS सेटिंग्स के साथ एक ट्रैक मोड के साथ लेकर आया गया है।

डिजाइन और चेसिस में बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R में अब नई LED हेडलाइट, टेल-लाइट और इंडिकेटर दिया गया है। इसके चेसिस में बदलाव किया गया है और स्टील ट्रेलिस फ्रेम को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसमें सस्पेंशन ट्यूनिंग अपग्रेड किया गया है।

Enduro R को अपग्रेड बॉडीवर्क, LED लाइटिंग, नए इन-मोल्ड ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसमें ट्रांसफर्ड सेंटर-स्टैंड माउंट दिया गया है। दोनों WP सस्पेंशन और एक स्टील ट्रेलिस फ्रेम का इस्तेमाल पहले की तरह जारी रखा गया है।

कम होगी लॉन्च?

नई KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को सितंबर 2025 में ग्लोबल लेवल पर लॉन्च किया जाएगा। अभी तक इन दोनों के भारत में लॉन्च की तारीख और कीमत की जानकारी सामने नहीं आई है।

नई येज्दी रोडस्टर पुरानी के मुकाबले कितनी बदली?

येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को नए फीचर्स और डिजाइन बदलावों के साथ लॉन्च किया है। इसमें कटा हुआ रियर फेंडर और स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट है। नई स्प्लिट-सीट राइडर की पसंद के अनुसार हटाई जा सकती है। टायर को 130/80-17 से बढ़ाकर 150/70-17 किया गया है। बाइक में 34cc लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 29.1hp की पावर देता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होती है।

नई दिल्ली। येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को लॉन्च किया है। इसे कई नए फीचर्स के साथ लेकर आया गया है, इसके साथ ही इसके डिजाइन में भी कई बदलाव किए गए हैं। इसके डिजाइन में बदलाव की वजह से इसकी स्टाइल को बदलते हैं और इसके चलाने के तरीके को भी बदल सकते हैं। हम यहां पर आपको विस्तार में बता रहे हैं कि नई Yezdi Roadster पुरानी के मुकाबले कितनी बदली है?

नई Yezdi Roadster में एक कटा हुआ रियर फेंडर और एक स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट होल्डर दिया गया है, जो इसे एक बोल्ड और ज्यादा बॉबर इंसपायर लुक देने का काम करता है। इसमें नई मॉड्यूलर स्प्लिट-सीट दी गई है, जो राइडर के पसंद के आधार पर पीछे की सीट को पूरी तरह से हटाने की अनुमति देती है। इसके सामने की तरफ बदलाव काफी कम है, लेकिन में नया हैंडलबार और एडजस्टेबल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें हैंडलबार, क्रैश गार्ड, वाइजर और टूरिंग गियर सहित 20 से ज्यादा एक्सेसरीज के कई कॉम्बिनेशन के साथ छह फैक्ट्री कस्टम किट भी पेश किया जा रहा है।

2025 Yezdi Roadster का चेसिस

बदलावों में मजबूत फ्रेम और एक चौड़ा रियर टायर शामिल है। इसमें सबसे बड़ा बदलाव पीछे की तरफ देखने के लिए मिलता है। इसमें टायर अब 130/80-17 से बढ़कर 150/70-17 हो गया है, जिससे बाइक को एक मजबूत लुक और एक बड़ा संपर्क क्षेत्र मिलता है जो ट्रैक्शन और कॉर्नरिंग स्थिरता में सुधार करेगा। इसके सामने का टायर 100/90-18 यूनिट ही रहता है।

नई Yezdi Roadster में पहले की तरह ही डबल-क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसे अपडेटेड मैन्युफैक्चरिंग के जरिए मजबूत किया गया है। इसमें नया सबफ्रेम दिया गया है। इसका सस्पेंशन और ब्रेक में काफी हद पहले जैसा ही है, हालांकि इसमें अपग्रेड स्प्रिंग और डैम्पिंग रेट दिया गया है।

बाकी बदलावों की बात करें तो ऊंचाई में 5 मिमी की बढ़ोतरी करके 795 मिमी हो गई है, जबकि कर्ब वजन 183.4 किलोग्राम हो गया है। Yezdi फ्यूल के बिना कर्ब वजन बताती है, इसलिए 12.5-लीटर टैंक 90 प्रतिशत तक भरा होने पर, वास्तविक आंकड़ा 190-192 किलोग्राम के करीब होना चाहिए।

2025 Yezdi Roadster का इंजन

नई Roadster में संशोधित गियरिंग के साथ Alpha2 इंजन मिलता है। इसमें 34cc लिक्विड-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Alpha2 का इस्तेमाल किया गया है, जो 29.1hp की पावर और 29.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन प्रत्येक मॉडल के लिए अलग तरह से ट्यून किया गया है, इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई Roadster का अपने सिबलिंग्स से एक अलग कैरेक्टर होगा। इसमें रियर स्प्रोकेट लगाकर फाइनल ड्राइव रेशियो को भी अपग्रेड किया गया है, जिससे कम स्पीड पर राइडबिलिटी में सुधार देखने के लिए मिल सकता है।

2025 Yezdi Roadster की कीमत

नई Roadster की कीमत पुराने की तुलना में 4,000 रुपये महंगी है। नई Yezdi Roadster की एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये तक पहुंचती है। यह कीमतें वेरिएंट और कलर ऑप्शन के ऊपर निर्भर करती है। इसे दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और Premium है। Standard वेरिएंट को चार कलर ऑप्शन, जबकि Premium को एक सिंगल, ब्लैक-आउट पेंट स्कीम लेकर आया गया है। Premium में एक फ्लैट हैंडलबार, ब्लैक-आउट रिम और एक चिकनी असेंबली में इंटीग्रेटेड टेल-लाइट/टर्न-इंडिकेटर यूनिट दी गई है।

सोचिए, आप किसे फॉलो कर रहे हैं : लोकप्रियता नहीं, आदर्श ही जीवन की दिशा तय करते हैं

डॉ सत्यवान सौरभ

फॉलो करना केवल सोशल मीडिया पर बटन दबाना नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन की दिशा तय करता है। करोड़ों लोग किसी को फॉलो करें, इसका अर्थ यह नहीं कि वह सच्चा आदर्श है। पान–गुटखा बेचने वाला खुद गुटखा नहीं खाता, यही दिखावे और सच्चाई का अंतर है। असली प्रेरणा हमें शहीदों, महापुरुषों और भारतीय संस्कृति से लेनी चाहिए, क्योंकि वही हमारे जीवन को सार्थक बनाते हैं। सोच–समझकर फॉलो कीजिए, क्योंकि आपका चयन ही आने वाली पीढ़ियों का रास्ता तय करेगा।

आज का युग सोशल मीडिया का युग है। यहाँ हर व्यक्ति कहीं न कहीं किसी का फॉलोवर है और किसी न किसी का आदर्श चुनता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि आखिर हम किसे फॉलो कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। करोड़ों फॉलोअर्स वाले लोग अक्सर केवल एक या दो को ही फॉलो करते हैं। यह संकेत देता है कि असली प्रेरणा संख्याओं से नहीं बल्कि चयन से आती है। जैसे पान–गुटखा बेचने वाला व्यक्ति विज्ञापन में लाखों लोगों को खाने की प्रेरणा देता है, लेकिन खुद उस ज़हर को नहीं छूता। इसका अर्थ यही है कि जो सामने दिख रहा है, वही सच्चाई नहीं होता। जो हमें प्रेरणा देने का दावा करते हैं, उनके जीवन में वही मूल्य हों, यह ज़रूरी नहीं।

हमारे समाज में फॉलो करने की संस्कृति नई नहीं है। पहले के समय में लोग गुरुओं को, विचारधारा को या अपने आदर्श नायकों को फॉलो करते थे। परन्तु तब यह चयन गहरी समझ और अनुभव के आधार पर होता था। आज की डिजिटल दुनिया में यह चयन अक्सर केवल बाहरी चमक–दमक, लोकप्रियता, दिखावटी लाइफ़स्टाइल और आकर्षण पर आधारित हो गया है। लाखों की भीड़ किसी व्यक्ति को फॉलो करती है, लेकिन यह नहीं सोचती कि वह व्यक्ति वास्तव में समाज को क्या दे रहा है। क्या उसका जीवन दूसरों के लिए उदाहरण है, या केवल मनोरंजन और व्यर्थ का समय खर्च करने का साधन। यही सबसे बड़ा प्रश्न है जिस पर हर व्यक्ति को विचार करना चाहिए।

हमारे शहीदों और महापुरुषों ने कभी भी लोकप्रियता के लिए त्याग नहीं किया। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ जैसे वीरों ने अपने जीवन का हर क्षण देश के लिए समर्पित किया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि उन्हें कितने लोग फॉलो कर रहे हैं, बल्कि उनका ध्यान केवल इस पर था कि उनकी प्रेरणा से कितने लोग सही मार्ग पर चलें। उनके आदर्श ही असली प्रेरणा हैं जिन्हें हमें फॉलो करना चाहिए।

आज सोशल मीडिया पर सितारे अपनी फिल्मों, फैशन या जीवनशैली से करोड़ों फॉलोवर बटोरते हैं। मगर क्या उनकी चमक हमारे जीवन की अंधेरियों को मिटा सकती है? क्या उनकी जीवनशैली को फॉलो करना हमारे लिए व्यावहारिक है? क्या उनका दिखाया गया रास्ता हमारे भविष्य को सुरक्षित कर सकता है? शायद नहीं। क्योंकि जो व्यक्ति अपने जीवन में आराम, विलासिता और दिखावे को ही सर्वोपरि मानता है, वह आम आदमी के संघर्षों को कभी समझ ही नहीं सकता। उनके संदेश हमारे जीवन को दिशा नहीं दे सकते, केवल मनोरंजन भर कर सकते हैं।

इसके उलट हमारी संस्कृति हजारों वर्षों से हमें सिखाती रही है कि असली आदर्श वही है जो हमारे जीवन को उपयोगी दिशा दे। गीता का संदेश केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के हर संघर्ष में हमें प्रेरणा देता है। उपनिषद हमें ज्ञान की ओर ले जाते हैं, विवेकानंद हमें आत्मविश्वास देते हैं, गांधी हमें सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाते हैं, डॉ. भीमराव अंबेडकर हमें समानता और अधिकारों का बोध कराते हैं। यह सभी व्यक्तित्व ऐसे हैं जिनका अनुसरण करना न केवल हमारे लिए बल्कि पूरे समाज के लिए लाभकारी है।

सोचने की बात यह है कि हम किसे अपना नायक बना रहे हैं। एक फर्जी लाइफ़स्टाइल दिखाने वाला सेलिब्रिटी या अपने प्राण न्यौछावर कर देने वाला शहीद? वह व्यक्ति जो केवल मनोरंजन करता है या वह महापुरुष जो हमारी आत्मा को झकझोरता है और हमें कर्मठ, साहसी और जागरूक बनाता है।

फॉलो करना केवल बटन दबाने का नाम नहीं है। फॉलो करना मतलब है किसी की सोच, उसके विचारों और उसके जीवन को अपने जीवन का हिस्सा बनाना। अगर हम किसी ऐसे व्यक्ति को फॉलो करते हैं जिसकी जीवनशैली खोखली है, तो हम भी धीरे-धीरे उसी खोखलेपन का हिस्सा बन जाते हैं। लेकिन अगर हम किसी महान व्यक्तित्व को फॉलो करते हैं, तो हमारे जीवन में भी उनकी महानता की झलक दिखाई देने लगती है।

आज के समय में युवाओं के लिए यह सबसे बड़ा चैलेंज है कि वे किसे अपना आदर्श मानें। दुनिया दिखावे की ओर भाग रही है, परन्तु हमें यह तय करना है कि हम दिखावे के पीछे भागेंगे या असली मूल्यों को अपनाएँगे। हमें यह समझना होगा कि असली स्टार वही है जो हमारे अंधेरों में रोशनी लेकर आए, न कि वह जो केवल चमकते मंच पर रोशनी में दिखे।

जब हम भारतीय शहीदों और संस्कृति को फॉलो करते हैं, तो हम न केवल अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं, बल्कि भविष्य को भी सुरक्षित बनाते हैं। संस्कृति हमें सिखाती है कि जीवन का लक्ष्य केवल भोग नहीं बल्कि त्याग और सेवा है। शहीद हमें सिखाते हैं कि राष्ट्रहित से बड़ा कोई धर्म नहीं। इनसे प्रेरणा लेने का अर्थ है अपने जीवन को सार्थक दिशा देना।

याद रखिए, भीड़ हमेशा सही दिशा में नहीं जाती। कभी-कभी भीड़ अंधेरे में भी दौड़ती है। समझदार वही है जो सोचकर तय करे कि उसे किस दिशा में जाना है। अगर करोड़ों लोग किसी को फॉलो कर रहे हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह व्यक्ति महान है। महान वही है जो बिना फॉलोवर के भी अपने जीवन से दूसरों को प्रेरणा देता है।

इसलिए आज आवश्यकता है कि हम अपने चयन पर गंभीरता से विचार करें। किसी को फॉलो करने से पहले यह प्रश्न अवश्य पूछें कि क्या यह व्यक्ति मेरे जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है? क्या इसकी प्रेरणा मेरे समाज और देश के लिए उपयोगी है? क्या इसकी दिशा मुझे आगे बढ़ने में मदद करेगी? अगर उत्तर हाँ है, तो निःसंकोच उसे फॉलो करें। और यदि उत्तर नहीं है, तो भले ही उसके लाखों–करोड़ों फॉलोवर हों, हमें साहसपूर्वक उसे अनदेखा करना चाहिए।

फॉलो करना केवल व्यक्तिगत चयन नहीं है, यह समाज की दिशा भी तय करता है। यदि एक पीढ़ी गलत आदर्शों को फॉलो करेगी तो उसकी आने वाली पीढ़ियाँ भी उसी दिशा में भटकेंगी। और यदि एक पीढ़ी शहीदों और संस्कृति को फॉलो करेगी, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी उन्हीं मूल्यों से प्रेरित होंगी। यही वह शक्ति है जो राष्ट्र को मज़बूत बनाती है।

अंत में यही कहना उचित होगा कि जीवन में आदर्श चुनते समय आँखें बंद नहीं करनी चाहिए। पान–गुटखा बेचने वाला खुद गुटखा नहीं खाता, यह सच हमें चेताता है कि दिखावे और वास्तविकता में बड़ा अंतर होता है। सोशल मीडिया पर चमकते चेहरे हमेशा सच्चाई नहीं होते। असली सच्चाई हमारे शहीदों के बलिदान में, हमारी संस्कृति की गहराई में और हमारे महापुरुषों की शिक्षाओं में है।

तो सोचिए, आप किसे फॉलो कर रहे हैं। क्योंकि आपका चयन ही आपके जीवन की दिशा तय करता है। भीड़ का हिस्सा बनने से बेहतर है कि सही रास्ते का यात्री बनें। और सही रास्ता वही है जो हमारे भारतीय शहीदों, संस्कृति और महान परंपरा की ओर ले जाता है।

मोबाइल स्क्रीन, जंक फूड और बदलती जीवनशैली ने छीनी मासूमियत, समाज और परिवार को तुरंत कदम उठाने की जरूरत

विजय गर्ग

बचपन को जीवन का सबसे सुंदर और बेफिक्र समय माना जाता है, लेकिन आज का बचपन पहले जैसा नहीं रहा। जहां कभी बच्चे खुले मैदानों में खेलते, कहानियों की दुनिया में खोए रहते और घर के बुजुर्गों से जीवन के मूल्य सीखते थे, वहीं अब मोबाइल स्क्रीन, जंक फूड और तेज रफ्तार जीवनशैली ने उनकी मासूमियत को समय से पहले छीन लिया है।

स्मार्टफोन और टैबलेट बच्चों के लिए मनोरंजन का मुख्य साधन बन गए हैं। डिजिटल गेम्स और वीडियो की आदत बच्चों को असली दुनिया से दूर कर रही है। घंटों स्क्रीन पर समय बिताने से न केवल उनकी शारीरिक सक्रियता कम हो रही है, बल्कि आँखों, दिमाग और मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर पड़ रहा है। फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक और पैकेट वाले स्नैक्स स्वाद में भले ही लुभावने हों, लेकिन इनमें मौजूद अधिक कैलोरी, नमक, शक्कर और प्रिजर्वेटिव्स बच्चों के शरीर में मोटापा, हार्मोनल असंतुलन और पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर रहे हैं। इनका लगातार सेवन बच्चों की प्राकृतिक वृद्धि को रोकता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय कम हो गया है। पढ़ाई, ट्यूशन और प्रतियोगिता की दौड़ में बच्चे खेल और रचनात्मक गतिविधियों से दूर हो रहे हैं। इस कमी को अक्सर स्क्रीन और जंक फूड भर देते हैं, लेकिन ये आदतें लंबे समय में बच्चों की सोच, स्वास्थ्य और व्यवहार पर नकारात्मक असर छोड़ती हैं।

यह समय आ गया है कि समाज और परिवार मिलकर बच्चों के बचपन को संवारने के लिए ठोस कदम उठाएं। डिजिटल समय सीमा तय करें और बच्चों को बाहरी खेलों और शारीरिक गतिविधियों में शामिल करें। घर का बना पौष्टिक भोजन प्राथमिकता दें और जंक फूड को कभी-कभार तक सीमित रखें। माता-पिता का समय और संवाद बच्चों की भावनात्मक सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार है। बच्चों को एक सकारात्मक सामाजिक वातावरण दें, जिसमें वे अच्छे मूल्यों और आदतों को अपनाएं। यह केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ी के संतुलित और स्वस्थ विकास का सवाल है। यदि हम आज सतर्क नहीं हुए, तो कल हमें एक ऐसी पीढ़ी का सामना करना पड़ेगा, जिसका बचपन अधूरा और जीवन असंतुलित होगा ।

बचपन सिर्फ उम्र का नहीं, बल्कि अनुभव, संस्कार और सीख का नाम है। इसे बचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, ताकि हमारे बच्चे न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ हों, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी सशक्त बनें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अविस्मरणीय गंतव्य शादी

विजय गर्ग

एक गंतव्य शादी आपके और आपके मेहमानों के लिए एक यादगार यात्रा अनुभव के साथ अपनी शादी को जोड़कर अपनी शादी का जश्न मनाने का एक रोमांचक तरीका है। यह एक ऐतिहासिक यूरोपीय महल में एक उष्णकटिबंधीय समुद्र तट पर एक छोटे, अंतरंग समारोह से लेकर भव्य संबंध तक हो सकता है। गंतव्य शादी की योजना के लिए मुख्य कदमः

अपना बजट निर्धारित करें: यह आपकी योजना की नींव है। एक गंतव्य शादी आपकी पसंद के आधार पर पारंपरिक शादी की तुलना में कम या ज्यादा महंगी हो सकती है। अपने लिए यात्रा और आवास में कारक याद रखें, और तय करें कि क्या आप अपने मेहमानों के खर्चों में योगदान देंगे।

एक अतिथि सूची बनाएं: आपकी अतिथि सूची सीधे आपके बजट और स्थल चयन को प्रभावित करेगी। एक पारंपरिक शादी की तुलना में एक छोटे अतिथि की गिनती के लिए तैयार रहें, क्योंकि हर कोई यात्रा करने में सक्षम नहीं होगा।

एक स्थान और स्थान चुनें: अनुसंधान गंतव्य जो आपकी दृष्टि और बजट के साथ संरेखित होते हैं। जैसे कारकों पर विचार करें:

कानूनी आवश्यकताएं: हर देश और राज्य में अलग-अलग विवाह कानून होते हैं। कुछ को प्रतीक्षा अवधि, रक्त परीक्षण या अन्य विशिष्ट दस्तावेजों की आवश्यकता हो सकती है। कई जोड़े अपने गृह देश में एक कानूनी नागरिक समारोह और प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए अपने गंतव्य पर एक प्रतीकात्मक समारोह का विकल्प चुनते हैं।

जलवायु और मौसम: हर किसी के लिए सुखद अनुभव सुनिश्चित करने के लिए तूफान या बरसात के मौसम सहित मौसम के पैटर्न की जांच करें।

यात्रा और पहुंच: उड़ान विकल्प और स्थानीय परिवहन सहित अपने मेहमानों के लिए यात्रा की आसानी पर विचार करें।

एक नियोजक को किराए पर लें: एक गंतव्य वेडिंग प्लानर एक अमूल्य संसाधन है। वे आपको दूर से स्थानीय सीमा शुल्क, भाषा बाधाओं और विक्रेता अनुबंधों को नेविगेट करने में मदद कर सकते हैं। एक योजनाकार की तलाश करें जिसके पास आपके चुने हुए गंतव्य के साथ अनुभव हो।

अपने स्थान और प्रमुख विक्रेताओं को सुरक्षित करें: एक बार जब आपके पास कोई स्थान और तारीख हो, तो अपने स्थान और अन्य आवश्यक विक्रेताओं को एक फोटोग्राफर, वीडियोग्राफर और अधिकारी की तरह बुक करें।

अपने मेहमानों को सूचित करें: बहुत सारे नोटिस के साथ ₹तिथियों को बचाएं₹ भेजें (10-12 महीने पहले की सिफारिश की जाती है) ताकि मेहमान अपनी यात्रा और समय की योजना बना सकें। आवास, यात्रा रसद और घटनाओं की एक अनुसूची के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ एक शादी की वेबसाइट बनाएं।

रसद प्रबंधित करें: जैसे-जैसे तारीख करीब आती है, आपको विवरणों को अंतिम रूप देना होगा जैसे:

अतिथि आवास: किसी होटल में कमरे बंद करें या बुकिंग को आसान बनाने के लिए अपने मेहमानों का सहारा लें।

वेलकम बैग: स्थानीय मानचित्र, स्नैक्स और घटनाओं के शेड्यूल के साथ स्वागत बैग बनाने पर विचार करें।

पासपोर्ट और वीजा: सुनिश्चित करें कि आपके और आपके मेहमानों के पास वैध पासपोर्ट और कोई आवश्यक वीजा है। कुछ देशों को आपकी यात्रा की तारीखों के बाद कम से कम छह महीने के लिए पासपोर्ट मान्य होने की आवश्यकता होती है। इन चरणों पर ध्यान देकर, आप अपने और अपने प्रियजनों के लिए एक सुंदर और अविस्मरणीय गंतव्य शादी का अनुभव बना सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड, "खाद्य पदार्थ सीधे वजन बढ़ाने और धीमी वजन घटाने से जुड़े होते हैं

विजय गर्ग

प्रसंस्कृत भोजन खाकर आप अधिक वजन कम कर सकते हैं, यह दावा गलत है। वास्तव में, वैज्ञानिक अध्ययनों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इसके विपरीत पाया है। सबूतों के बढ़ते शरीर से पता चलता है कि अत्यधिक संसाधित, या ₹अल्ट्रा-प्रोसेस्ड₹ खाने से खाद्य पदार्थ सीधे वजन बढ़ाने और वजन कम करने से जुड़े होते हैं। यहां बताया गया है कि क्यों प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ वजन घटाने में बाधा डाल सकते हैं:

उच्च कैलोरी सेवन: अध्ययनों से पता चला है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड डाइट पर लोग न्यूनतम रूप से संसाधित आहार पर प्रति दिन की तुलना में प्रति दिन काफी अधिक कैलोरी का उपभोग करते हैं, तब भी जब खाद्य पदार्थ चीनी, वसा और फाइबर जैसे पोषक तत्वों के लिए मेल खाते हैं।

तेज़ खाने की दर: अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों को अक्सर अत्यधिक स्वादिष्ट और जल्दी से खाने में आसान होने के लिए इंजीनियर किया जाता है, जिससे आपके शरीर को संकेत देने का मौका मिलने से पहले ओवरकॉन्सुलेशन हो सकता है कि आप भरे हुए हैं।

कम तृप्ति: पूरे खाद्य पदार्थों की तुलना में, अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ आम तौर पर फाइबर और प्रोटीन में कम होते हैं, जो परिपूर्णता की भावनाओं को बढ़ावा देने और भूख को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण पोषक तत्व हैं।

भूख नियंत्रण पर प्रभाव: अनुसंधान से पता चलता है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ मस्तिष्क के इनाम केंद्रों को प्रभावित कर सकते हैं और मजबूत cravings का कारण बन सकते हैं, जिससे वजन घटाने की योजना से चिपके रहना कठिन हो जाता है।

पोषण की कमी: जबकि कुछ प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ विटामिन और खनिजों के साथ दृढ़ होते हैं, उनमें अक्सर पोषक तत्वों के पूर्ण स्पेक्ट्रम की कमी होती है, जैसे कि फाइबर, जो पूरे खाद्य पदार्थों में पाए जाते हैं। इन आवश्यक घटकों में कमी वाला आहार समग्र स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और वजन प्रबंधन को अधिक कठिन बना सकता है।

₹अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड₹ क्या हैं? संसाधित और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। कई खाद्य पदार्थ प्रसंस्करण के कुछ रूप से गुजरते हैं, जैसे चॉपिंग, कुकिंग या फ्रीजिंग। हालांकि, अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ औद्योगिक रचनाएँ हैं जिनमें अक्सर संपूर्ण खाद्य सामग्री नहीं होती है। इनमें आमतौर पर कृत्रिम स्वाद, संरक्षक, पायसीकारी और अतिरिक्त चीनी, नमक और अस्वास्थ्यकर वसा की एक उच्च मात्रा जैसे योजक शामिल होते हैं। उदाहरणों में शर्करा युक्त पेय, पैकेज्ड स्नैक्स और कई रेडी-टू-ईट भोजन शामिल हैं। प्रभावी ढंग से वजन कम करने के लिए और समग्र स्वास्थ्य के लिए, विशेषज्ञों के बीच आम सहमति न्यूनतम रूप से संसाधित, सब्जियों, फलों, साबुत अनाज, दुबला प्रोटीन और स्वस्थ वसा जैसे पूरे खाद्य पदार्थों से भरपूर आहार पर ध्यान केंद्रित करना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

उपहार के आयाम : विजय गर्ग

उपहार लेना और देना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। जब कोई हमें उपहार देता है तो हमारा मन अत्यधिक प्रसन्न होता है। सामान्य स्थितियों में उपहार देने वाले के प्रति हम अतिरिक्त अनुराग का अनुभव करते हैं। यही कारण है कि जब हम किसी के प्रति अपना प्रेम, स्नेह, आभार, शुभकामना, सम्मान व्यक्त करना चाहते हैं, तो उपहार देकर करते हैं। पारंपरिक नजरिए से देखें तो उपहार एक सुंदर तरीका है किसी को धन्यवाद, आभार या शुभकामनाएं देने का । उपहार हमारी हमारी कृतज्ञता, आत्मीयता को सहज ही दूसरे तक पहुंचा देते हैं। हमारे मन में उनके लिए कितना स्नेह, आदर या फिर कौन- सी भावनाएं हैं, यह प्रदर्शित करते हैं। रिश्तों को मजबूत बनाते हैं और एक दूसरे से मजबूती से जोड़े रखते हैं । उपहार देना दूसरों के प्रति हमारे परवाह करने का एक तरीका भी है, जो सामने वाले को बताता है कि वह हमें याद है, हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है । उपहार भावनाओं को व्यक्त करने के साथ-साथ स्थायी रिश्ते और यादें बनाने का एक सशक्त माध्यम है और रिश्तों को दीर्घायु बनाने का सुंदर साधन है हालांकि ऐसा नहीं है कि अगर कोई व्यक्ति किसी मौके पर अपने किसी प्रिय को उपहार नहीं दे सका तो इससे उसकी अहमियत कम हो जाएगी या इसी से उसकी संवेदना का पैमाना तय किया जाएगा। मगर जो बातें समाज में चलन में होती हैं, हम उसी के आधार पर स्थितियों का आकलन करते । दरअसल, अलग- अलग व्यक्ति द्वारा दिया गया उपहार अलग-अलग भावनाएं अभिव्यक्त करता है। मसलन, अगर उपहार गुरु से मिलता है तो वह प्रेरणा और प्रोत्साहन दर्शाता है। माता - पिता से मिला उपहार उनके निस्वार्थ प्रेम को प्रदर्शित करता है और अपने से आयु में छोटे अनुजों द्वारा प्राप्त उपहार हमारे प्रति सम्मान को दिखाता है ।

उपहार देना तभी सार्थक होता है जब इसके साथ हमारी भावनाएं भी स्नेह से भरी और पवित्र हों। अगर हम स्वार्थवश किसी को कोई वस्तु उपहार दे रहे हैं, तो हमें उतनी आत्म संतुष्टि या खुशी नहीं मिल सकती है, जितनी निस्वार्थ भाव से उपहार देने पर मिलती है। अगर हम किसी को उपहार देते हैं और बदले में किसी चीज की आशा रखते हैं तो यह उपहार किसी भी तरीके से नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसे लेन-देन या सौदा माना जाएगा या फिर व्यवसाय भी कहा जा सकता है। ऐसे उपहार का संबंध आत्मीयता से न के बराबर होता है ।

विवाह से लेकर त्योहार, जन्मदिन, वर्षगांठ, गृह प्रवेश के अवसरों पर हम अपने सगे-संबंधियों या दोस्तों को उपहार देते रहते हैं। उपहार कितना महंगा है और कितना सस्ता है, प्रेम में यह बिल्कुल महत्त्वपूर्ण नहीं होता है। दोस्त, परिवार या किसी संबंधी के प्रति प्रेम में सिर्फ मनोभाव का महत्त्व होता है। जरूरी नहीं है कि हम किसी को सोना-चांदी या महंगे ब्रांडेड कपड़े, गैजेट उपहार दें, तभी हम किसी का हृदय जीत पाएंगें। दिल से दिया गया छोटा-सा उपहार भी सोने-चांदी और महंगे उत्पाद ज्यादा अनमोल हो जाता है और हम उसे जीवन भर संभाल कर रखते हैं। दिल से दिया गया उपहार हमेशा किसी महंगे उपहार बेहतर होता है। चाहे वह साधारण कार्ड या हस्तलिखित नोट ही क्यों न हो। उसमें सबसे ज्यादा महत्त्व रखता है उपहार देने के पीछे कितना लगाव और प्रेम छिपा है।

सही भावना के साथ दिए गए उपहार बरसों बीत जाने के बाद भी भावनात्मक रूप से अनमोल ही बने रहते हैं । जैसे बचपन में जब हम अपने सगे-संबंधियों में से किसी को कोई खिलौना दिए रहते हैं, तो बड़े हो जाने के बाद भी खिलौने को देख कर उस व्यक्ति की मधुर याद ताजा हो जाती है। रिश्ते को प्राणवायु मिल जाता है, वह पुनर्जीवित हो जाता है। जबकि बड़े हो जाने के बाद उनका मूल्य हमारे लिए कुछ भी नहीं रह जाता है, लेकिन भावनात्मक याद और लगाव बरसों बाद भी रह जाता है ।

विज्ञान के पहलू से देखें तो हमारा मस्तिष्क देने की क्रिया पर सकारात्मक क्रिया-प्रतिक्रिया देता है, जिससे हम बहुत ज्यादा खुशी महसूस करते हैं। खुशी का हार्मोन 'डोपामाइन' किसी को कुछ देने पर सक्रिय हो जाता है और हमें उतनी ही खुशी महसूस होती है, जितनी कि जब हम अपने मनपसंद व्यक्ति से मिलते हैं या अपना मनपसंद भोजन खाते हैं। मस्तिष्क में आक्सीटोसिन का स्राव होता है, जो सामाजिक बंधन और विश्वास को मजबूत करता है और फिर न्यूरान्स के सक्रिय होने से हम खुशी महसूस करते हैं। एक अध्ययन में यह भी पाया गया है कि जो लोग दूसरों पर पैसा खर्च करते हैं, वे उन लोगों की तुलना में ज्यादा खुश रहते हैं, जो खुद पर पैसा खर्च करते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है । हम सभी देखते हैं कि हमारे माता-पिता जब हमें उपहार देते हैं या कोई भी वस्तु देते हैं तो वे हमसे ज्यादा प्रसन्न होते हैं। इसीलिए जब भी किसी को उपहार देना हो तो पूरे आदर, मन और दिल के साथ ही देना चाहिए, ताकि वह जीवन भर उसकी कोमल याद में बना रहे । हमारा देना न सिर्फ उस व्यक्ति की प्रसन्नता का कारक होगा, बल्कि हमारे लिए भी प्रसन्नता का कारक बनेगा । उस व्यक्ति से जिंदगी भर दोस्ती, पारिवारिक संबंध, प्रेम संबंध गहरा रहेगा। कई बार जो बातें हम अपने मुंह से नहीं कह पाते हैं, हमारा उपहार बहुत सटीकता के साथ सामने वाले के समक्ष प्रकट कर देता है। यह बिना बोले दिल से दिल को जोड़ने की कला है। हम उपहार देकर किसी के लिए अपना प्रेम और स्नेह व्यक्त कर सकते हैं। रिश्तों को मजबूत कर सकते हैं। अपनी कृतज्ञता और आत्मीयता व्यक्त सकते हैं। खुशी और सकारात्मकता फैला सकते हैं। अपने बंधनों को और मजबूत कर सकते हैं । सहानुभूति और परवाह प्रदर्शित कर सकते हैं। एक सकारात्मक प्रभाव बना सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आरटीआई एक्ट-2005 के तहत आवेदन सादे कागज पर भी किया जा सकता है

बरवाला

आरटीआई कार्यकर्त्ता विरेन्द्र पूनिया ने कहा कि आरटीआई एक्ट-2005 के तहत आवेदन सादे कागज पर भी किया जा सकता है और उसे लिखने के लिए कोई विहित प्रारूप नहीं है। आवेदक से सूचना का अनुरोध करने के लिए कोई कारण देने की अपेक्षा नहीं की जाती, उससे केवल उसकी सम्पर्क दूरभाष संख्या व पता देने की अपेक्षा की जाती है, ताकि मांगी गई सूचना लोक सूचना अधिकारी द्वारा समय पर भेजी जा सके। सूचना प्राप्त करने के लिए प्रक्रिया निर्धन और समाज के साधनहीन वर्ग को उसका अत्यधिक उपयोग करने के लिए सक्षम बनाने के लिए अधिनियम में अत्यधिक साधारण बनाई गई है।

यह अधिनियम में प्रस्तुत की गई धारा 6 का मूल स्वरूप था। नागरिक सूचना प्राप्त करने के लिए लोक सूचना अधिकारी या सहायक लोक सूचना अधिकारी के समक्ष आवेदन पेश करेगा। आवेदन को उस लोक प्राधिकारी के लोक सूचना अधिकारी के समक्ष पेश किया जाना चाहिए, जिसकी अधिकारिता के अधीन आवेदन की विषय-वस्तु आती है। जब आवेदन को सूचना के लिए लोक प्राधिकारी के समक्ष पेश किया जाता है, जिसे अन्य लोक प्राधिकारी द्वारा धारण किया जाता है, तब लोक प्राधिकारी, जिसके समक्ष आवेदन किया गया है, उस लोक प्राधिकारी को, जिसके पास सूचना है, आवेदन अन्तरित करने के कर्तव्य के अधीन है।

सूचना मांगने के लिए आवेदन प्रक्रिया क्या है? लिखित रूप में या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अंग्रेजी या हिंदी में आवेदन करें।

सूचना मांगने का कारण बताना आवश्यक नहीं है।

10 रुपये का शुल्क नकद या डिमांड ड्राफ्ट, पोस्टल ऑर्डर या बैंकर चेक के माध्यम से भुगतान करें। (यदि गरीबी रेखा से नीचे की श्रेणी से संबंधित नहीं हैं)।

जानकारी प्राप्त करने की समय सीमा क्या है?

आवेदन की तिथि से 30 दिन

किसी व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता से संबंधित सूचना के लिए 48 घंटे

यदि सूचना के लिए आवेदन सहायक लोक सूचना अधिकारी को दिया जाता है, तो उपरोक्त प्रतिक्रिया समय में 5 दिन जोड़े जाएंगे।

यदि किसी तीसरे पक्ष के हित शामिल हैं तो समय सीमा 40 दिन होगी (अधिकतम अवधि + पक्ष को प्रतिनिधित्व करने के लिए दिया गया समय)।

निर्दिष्ट अवधि के भीतर सूचना प्रदान करने में विफलता एक इनकार माना जाएगा।

सूचना क्या है?

सूचना किसी भी रूप में कोई भी सामग्री है। इसमें रिकॉर्ड, दस्तावेज़, ज्ञापन, ईमेल, राय, सलाह, प्रेस विज्ञप्तियां, परिपत्र, आदेश, लॉगबुक, अनुबंध, रिपोर्ट, कागज़, नमूने, मॉडल, किसी भी इलेक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध डेटा सामग्री शामिल हैं। इसमें किसी भी निजी निकाय से संबंधित जानकारी भी शामिल है, जिसे किसी भी वर्तमान कानून के तहत सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

विरेन्द्र पूनिया आरटीआई कार्यकर्त्ता

भाजपायी चुनाव आयोग

(आलेख : राजेंद्र शर्मा)

सोशल मीडिया में पिछले कुछ हफ्तों से एक मजाक चल रहा था। चुनाव आयोग ने इसका जोरदार तरीके से खंडन किया है कि उसने भाजपा में विलय कर लिया है ; आयोग ने कहा है कि वह भाजपा सरकार का बाहर से ही समर्थन करता रहेगा ! मुख्य चुनाव आयुक्त, ज्ञानेश कुमार की पहली खुली प्रेस कान्फ्रेंस के बाद ऐसा लगता है कि उस मजाक को अपडेट करने का समय आ गया है। चुनाव आयोग अब और बाहर से समर्थन नहीं देता रह सकता है। 'विदेशी घुसपैठ' के खतरों को देखते हुए, उसने भाजपा में विलय का फैसला कर लिया है। व्यवहार में वर्तमान चुनाव आयोग के इस फैसले का ऐलान जिस संवाददाता सम्मेलन में किया गया है, वह कहने को तो पूरे चुनाव आयोग की ही प्रेस कान्फ्रेंस थी। तीनों चुनाव आयुक्त मंच पर मौजूद भी थे। लेकिन, बोलने का काम सिर्फ मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने ही किया। इसलिए, अभी निश्चयपूर्वक यह कहना मुश्किल है कि चुनाव आयोग के भाजपा में इस विलय में, पूरे चुनाव आयोग की पूर्ण सहमति है या नहीं !

बेशक, चुनाव आयोग ने अब भी भाजपा में विलय की औपचारिक घोषणा नहीं की है। उल्टे उसने संवाददाता सम्मेलन में तो इसका भी दावा करने की कोशिश की है कि वह न पक्ष में है, न विपक्ष में, वह तो निष्पक्ष है। लेकिन, संवाददाता सम्मेलन में मुख्य चुनाव आयुक्त की प्रस्तुति और सवालों के जवाब का जो मुख्य स्वर था, उसने निष्पक्षता के इस दावे का मजाक ही बनाकर रख दिया। चुनाव आयोग का यह संवाददाता सम्मेलन, चुनावों के मामले में उसकी निष्पक्षता और विशेष रूप से मतदाता सूचियों की गड़बड़ियों के संबंध में लगातार सघन होते संदेहों और बढ़ते सवालों की पृष्ठभूमि में हो रहा था। इन सवालों में एक ओर अगर बिहार पर थोपी गयी एसआईआर नाम की अभूतपूर्व प्रक्रिया को लेकर बेशुमार सवाल हैं, तो दूसरी ओर पिछले चुनावों की मतदाता सूचियों को और इसलिए, चुनावों को लेकर गंभीर सवाल भी हैं।

ये बाद वाले सवाल, महाराष्ट्र के विधानसभाई चुनाव के समय से तथा खासतौर पर उस चुनाव में भाजपा-नीत मोर्चे की अप्रत्याशित जीत के बाद से लगातार उठते रहे थे। फिर भी इन सवालों को, कर्नाटक की बंगलूरु सेंट्रल लोकसभा सीट के अंतर्गत, महादेवपुरा विधानसभाई सीट की मतदाता सूची के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर, इसी महीने के शुरू में संसद में विपक्ष के नेता, राहुल गांधी द्वारा लगाए गए मतदाता सूचियों में गड़बड़ी के जरिए, चुनाव में धांधली के आरोपों ने, एक नयी धार दे दी है। इसी की पृष्ठभूमि में बिहार में, जहां मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण या एसआईआर की प्रक्रिया जारी है और इस प्रक्रिया से निकलकर तैयार की

जाने वाली अंतिम मतदाता सूचियों के आधार पर, इसी साल के आखिरी महीनों में विधानसभाई चुनाव होने जा रहे हैं, इंडिया गठबंधन द्वारा जिस रोज नेता विपक्ष, राहुल गांधी की अगुआई में 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरूआत की जा रही थी, ठीक वही दिन तथा समय, चुनाव आयोग ने अपनी इस लड़ाकू-मुद्रावाली प्रेस कान्फ्रेंस के लिए चुना था।

ऐसे में चुनाव अयोग का नेता विपक्ष द्वारा उठाए गए सवालों का गंभीरता से तथा भरोसा पैदा करने वाले तरीके से जवाब देने के बजाय, चुनौती और धमकी के स्वर में यह कहना कि दो ही विकल्प हैं, या तो (राहुल गांधी या अन्य सवाल उठाने वाले) एक हफ्ते में एफिडेविट दें या देश से माफी मांगें, और कोई विकल्प नहीं है ; दिखाता है कि निष्पक्ष एंपायर या रेफरी की भूमिका को छोड़कर, आयोग ने 'खिलाड़ी' की भूमिका संभाल ली है। वह अपनी भूमिका विपक्ष के विपक्ष यानी सत्तापक्ष के खिलाड़ी की ही मान रहा है। इस संबंध में अगर कोई कसर रह भी गयी थी, तो उसे इस सवाल पर चुनाव आयोग की बहुत ही मुखर चुप्पी ने दूर कर दिया कि जब राहुल गांधी जैसे ही सवाल, सत्ताधारी पार्टी के प्रवक्ता की हैसियत से, अनुराग ठाकुर ने उठाए थे और वास्तव में भाजपा सांसद ने तो छः-छः संसदीय क्षेत्रों में मतदाता सूचियों में लाखों वोटों की हेरा-फेरी के जरिए चुनाव गड़बड़ी के आरोप लगाए थे, तब उनके साथ, उनके आरोपों के साथ चुनाव आयोग का सलूक, राहुल गांधी के साथ उसके सलूक से इतना भिन्न क्यों था ? क्या अनुराग ठाकुर के आरोपों को चुनाव आयोग अपना 'घरेलू' या 'अंदरूनी' मामला समझता है, जिनका असली मकसद तो उसकी गड़बड़ियों पर पर्दा डालना ही है। चुनाव आयोग के अपना पक्ष चुन लेने का इससे स्पष्ट सबूत और क्या होगा ?

अब तक करीब सभी जान चुके हैं कि राहुल गांधी ने महादेवपुरा विधानसभाई सीट की खुद चुनाव आयोग द्वारा ही फोटो प्रिंटआउट के रूप में दी गयी मतदाता सूची के विश्लेषण के आधार पर, करीब छः लाख मतदाताओं में से एक लाख से ज्यादा मतदाताओं के मामले में गड़बड़ियां पकड़ी थीं और इनके आधार पर इन मतदाताओं की वैधता पर सवाल उठाए थे। इन गड़बड़ियों में फर्जी पता, छोटे-छोटे घरों में साठ-साठ, अस्सी-अस्सी रजिस्टर्ड वोट, कई-कई जगहों पर रजिस्टर्ड वोट, फार्म-6 के जरिए नये वोटर के तौर पर बनाए गए, सत्तर-सत्तर, अस्सी-अस्सी साल की उम्र के पहली बार के वोटर, बिना तस्वीर के या इतनी छोटी तस्वीर वाले वोटर, जिनकी तस्वीर से किसी की पहचान हो ही नहीं सकती है, आदि शामिल हैं। किसी निष्पक्ष रैफरी की सामान्य प्रतिक्रिया तो यही होती कि बड़े पैमाने की जिन गड़बड़ियों को इंगित किया गया है, उनका स्वतः संज्ञान लेकर आयोग जांच कराएगा और त्रुटियों को दूर करेगा, ताकि चुनाव और निष्कलंक हो सकें। लेकिन, चुनाव आयोग ने तो शुरू से ही गड़बड़ियों को इंगित करने वालों के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख अपनाया, जैसे उसी की चोरी पकड़ी गयी हो और उन्हें डरा-धमका कर, 'सब चंगा सी' की मुद्रा प्रदर्शित करने की कोशिश की। याद रहे कि ऐसा सिर्फ राहुल गांधी द्वारा लगाए गए आरोपों के मामले में ही नहीं किया गया, बल्कि बिहार की एसआईआर प्रक्रिया के पहले चरण में हुई भारी गड़बड़ियों को ढांपने के लिए, और पहले से यही किया जा रहा था। इस सिलसिले में प्रतिष्ठित पत्रकार, अजीत अंजुम के खिलाफ बाकायदा एफआईआर तक दायर करायी गयी थी।

चुनाव आयोग की ऐसी ही झगड़ालू स्तर प्राधिकार वाली प्रतिक्रिया, गड़बड़ियों के इन भंडाफोड़ों के संदर्भ में और भी बलपूर्वक उठी इसकी मांगों पर देखने को मिली कि मतदाता सूचियां, मशीन रीडेबल या डिजिटल फार्मेट में मुहैया करायी जाएं, न कि सिर्फ इमेज फार्मेट में, जिसमें अब दी जाने लगी हैं। मशीन रीडेबल फार्मेट में कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटैलीजेंस की मदद से, विशाल सूचियों को भी आसानी से छाना जा सकता है और उनकी तरह-तरह की गड़बड़ियों को पकड़ा जा सकता है। जहां चुनाव आयोग के पास इस फार्मेट में सूची उपलब्ध होने के बावजूद, मतदाता सूचियों में इस तरह की गड़बड़ियों का बने रहना, उसकी लापरवाही से लेकर गड़बड़ियों में मिलीभगत तक की ओर इशारा करता है, वहीं विपक्ष के मांगने पर भी चुनाव आयोग का ऐसे फार्मेट में सूचियां न देने की जिद पकड़ना, आयोग की मिलीभगत के ही संदेहों को बढ़ाता है। इसके बावजूद, ज्ञानेश कुमार ने न सिर्फ मशीन रीडेबल फार्मेट में मतदाता सूचियां देने से अपने इंकार को उचित ठहराने की कोशिश की है, इसके लिए निजता के अधिकार के उल्लंघन से लेकर, सुप्रीम कोर्ट के आदेश तक की झूठी दलीलें दी हैं। सच्चाई यह है कि इस तरह के फार्मेट में सूचियां उपलब्ध कराने में निजता के अधिकार का कोई उल्लंघन देखने के बजाय, सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में एसआईआर प्रक्रिया में ड्राप हुए 65 लाख लोगों की सूची देने के अपने आदेश में, विशेष रूप से इसका निर्देश दिया है कि सूची मशीन रीडेबल फार्मेट में दी जाए। दूसरी ओर, चुनाव आयोग मतदाता सूची के फार्मेट को पर्दापोशी का हथियार बनाने पर किस कदर वजिद है, इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि बिहार में एसआईआर के पहले चरण के अंत में 1 अगस्त को कच्ची मतदाता सूची, मशीन रीडेबल फार्मेट में डाल दी गयी थी। लेकिन, चार-पांच दिन में ही चुनाव आयोग को अपनी 'गलती' का एहसास हो गया और उसने इस कच्ची सूची का फार्मेट बदलकर मशीन नान-रीडेबल कर दिया।

मशीन रीडेबल सूचियों के खिलाफ चुनाव आयोग की निजता के अधिकार की दलील इसलिए और भी बेतुकी है कि सूची के मशीन रीडेबल फार्मेट में, दूसरे फार्मेट के अलावा कोई अतिरिक्त जानकारी तो होती नहीं है, जो निजता के अधिकार के पहलू से दोनों सूचियों में कोई अंतर हो। दोनों प्रकार की सूचियों में अंतर इतना ही होता है कि मशीन रीडेबल सूची न मिलने से, कांग्रेस पार्टी को एक महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची की छानबीन कर गड़बड़ियों का पता लगाने में चार महीने से ज्यादा लग गए। दूसरी ओर, संभवतः किसी प्रकार से मशीन रीडेबल फार्मेट में सूची उपलब्ध होने के बल पर, अनुराग ठाकुर के लिए सिर्फ छः दिन में छः लोकसभाई क्षेत्रों की मतदाता सूचियों का, उसी प्रकार की गड़बड़ियों के लिए विश्लेषण करना संभव हो गया। इसी प्रकार, मतदान की वीडियोग्राफी का रिकार्ड उपलब्ध न कराने के लिए ज्ञानेश कुमार ने जो 'बहन-बहुओं-बेटियों' की वीडियोग्राफी नहीं देने की दलील दी है, और भी ज्यादा खोखली है। मतदान केंद्र की वीडियोग्राफी में ऐसा क्या हो सकता है, जिसका चुनाव आयोग के सिवा किसी और का देखना आपत्ति का कारण हो सकता हो। जाहिर है कि ये सब धांधलियों को ढांपने के बहाने हैं।

हैरानी की बात नहीं है कि ऐसे चुनाव आयोग से बिहार में एसआईआर प्रक्रिया के थोपे जाने की जरूरत से लेकर, उस प्रक्रिया में पहले ही उजागर हो चुकी गड़बड़ियों तक, एक भी सवाल का विश्वसनीय जवाब नहीं दिया गया है। एक-एक वोटर के साथ, गरीब वोटरों के साथ 'चट्टान की तरह खड़े रहने' की डॉयलागबाजी को छोड़कर, चुनाव आयोग न तो इसका जवाब दे पाया है कि कैसे भारी संख्या में मृतक कच्ची मतदाता सूचियों में पहुंच गए हैं, जबकि और भी बड़ी संख्या में जिंदा वोटर, सूची से बाहर कर दिए गए हैं। यहां तक कि आयोग यह तक नहीं बता पाया कि बिहार में कितने संभावित वोटरों के फार्म संबंधित दस्तावेजों के साथ प्राप्त हुए हैं तथा कितने के बिना संबंधित दस्तावेजों के और कितने के मतदाता फार्म पर बीएलओ ने नॉन-रिकमंडेड पर निशान लगाया है। यह भी कि इन नॉन-रिकमंडेड या बिना दस्तावेज के फार्म वालों का क्या होगा ? इन हालात में जब चुनाव आयोग ज्यादा से ज्यादा सत्तापक्ष की चोरी की चौकीदारी का काम कर रहा है, बिहार की राजनीतिक रूप से जागरूक जनता विपक्ष की 'वोटर अधिकार यात्रा' को अभूतपूर्व समर्थन नहीं दे, तो ही हैरानी की बात होगी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

प्रेम पच्चीसा (भाग - 6)

रोहन और माया स्कूटर संभालते सामने से अचानक, एक तेज रफ्तार से आती कार ने सामने से रास्ता काटा। रोहन ने ब्रेक लगाने की कोशिश की, लेकिन सड़क पर बिखरे रेत के कारण स्कूटर फिसल गया। तीनों सड़क पर गिर पड़े। माया ने राशि को कसकर पकड़ रखा था, लेकिन राशि के माथे पर एक गहरा खरोंच लग गया, और वह जोर-जोर से रोने लगी। रोहन के हाथ और घुटने छिल गए, जबकि माया का कंधा थोड़ा चोटिल हुआ। आसपास के लोग दौड़कर आए। एक बुजुर्ग दुकानदार ने तुरंत अपनी दुकान से पानी की बोतल और साफ कपड़ा लाकर राशि के माथे को साफ किया। "जल्दी अस्पताल ले जाओ, बच्ची को टांके लग सकते हैं," उसने चिंतित स्वर में कहा। रोहन और माया, जो अभी भी सदमे में थे, ने राशि को गोद में उठाया और पास के एक ऑटो में बैठकर नजदीकी अस्पताल की ओर बढ़े।

अस्पताल में डॉक्टर ने राशि की जांच की। सौभाग्य से, खरोंच गहरी नहीं थी, और टांकों की जरूरत नहीं पड़ी। डॉक्टर ने घाव को साफ करके एक पट्टी बांध दी और कुछ दवाइयां लिखीं। "बच्ची ठीक है, लेकिन अगले कुछ दिन उसे आराम की जरूरत है," डॉक्टर ने कहा। रोहन और माया ने राहत की सांस ली, लेकिन उनकी आंखों में अपराधबोध और डर साफ दिख रहा था।

घर लौटते समय, माया ने राशि को सीने से लगाए रखा, जबकि रोहन चुपचाप ऑटो की खिड़की से बाहर देख रहा था। उसने माया की ओर देखा और धीरे से कहा, "मुझे और सावधान रहना चाहिए था।" माया ने उसका हाथ थाम लिया और बोली, "ये हम दोनों की गलती नहीं है। अब हमें और सतर्क रहना होगा।"

उस रात, जब राशि सो गई, रोहन और माया ने आपस में बात की। उन्होंने फैसला किया कि वे अब स्कूटर पर राशि को लेकर नहीं जाएंगे और हमेशा हेलमेट व सेफ्टी गियर का इस्तेमाल करेंगे। यह हादसा उनके लिए एक सबक बन गया, जिसने उन्हें जिंदगी की नाजुकता और अपने परिवार की सुरक्षा का महत्व सिखाया।

सूर्योदय के पूर्व रोहन अपने किचिन गार्डन में तथागत गौतम बुद्ध की ओर आँखें बंद करके सोच रहा था कि चलते जीवन में घटनाएं एकाएक कैसे घटती हैं । आदमी बे - खबर लगातार भाग रहा है , कोई रोजी - रोटी के लिए तो किसी को अपनी प्रेम की तलाश है । कोई कुर्सी के लिए मरा जा रहा तो किसी तो किसी को मोक्ष की खोज़ करना है । तथागत भी एक रात यशोधरा और राहुल को छोड़कर जीवन का सच जानने निकल गए थे। उनकी तपस्या को सुजाता की एक प्याली खीर ने ने कैसे नया मोड़ दिया कि गौतम बोले- जीवन पढ़ार्थ है , हर आदमी बीमार होगा, बूढ़ा होकर , मृत्यु को प्राप्त करेगा फिर जीवन से डरने वाली बात क्या है ? बस अत दीपो भव ,,,अर्थात हर इंशान को अपना दिआ खुद बनकर जलना होगा ।

रोहन के गहन चिंतन को माया ने तोड़ दिया- चाय वाला ,,,चाय की प्याली लिए सामने खड़ी पत्नी कि बात सुनकर रोहन मुस्करा दिया । इसी समय रोहन के मोबाईल कि रिंग टोन बजी,,,

(भाग 7)

- राजेन्द्र रंजन गायकवाड

सुझाव से समाधान तक: अमृतसर से शुरू हुआ "राइज़िंग पंजाब" अभियान

अमृतसर, (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान के औद्योगिक क्रांतिकारी विज़न के अंतर्गत पंजाब में उद्योगों को नया प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से आज उद्योग एवं बिजली मंत्री श्री संजीव अरोड़ा ने अमृतसर से "राइजिंग पंजाब – सुझाव से समाधान तक" कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर अमृतसर, गुरदासपुर, तरनतारन, बटाला और पठानकोट के उद्योगपतियों से औद्योगिक नीति पर सुझाव प्राप्त किए गए तथा उनकी समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया गया।

कैबिनेट मंत्री ने उपस्थित उद्यमियों का स्वागत करते हुए कहा कि पंजाब के सभी बड़े शहरों में इस प्रकार के विशेष आयोजन किए जाएंगे और आज इसकी शुरुआत अमृतसर से की गई है। उन्होंने कहा कि इस पहल का उद्देश्य नई उद्योग-हितैषी नीतियों के बारे में जागरूकता फैलाना, निवेश के लिए बेहतर माहौल तैयार करना और सरकार व उद्योग जगत के बीच सीधा संवाद कायम करना है। उन्हें विश्वास है कि यह कदम पंजाब में नए निवेश, अधिक रोजगार और खुशहाली के नए द्वार खोलेगा।

उद्योगपतियों को संबोधित करते हुए श्री अरोड़ा ने कहा कि वे बातें करने में नहीं, बल्कि काम करने में विश्वास रखते हैं। उद्योगपतियों के सुझाव उन्होंने नोट कर लिए हैं और कार्यवाही कुछ ही दिनों में होगी। उन्होंने अमृतसर को गुरु नगरी, पंजाब का गेटवे बताते हुए कहा कि यह शहर दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर बनेगा। साथ ही उन्होंने अमृतसर की मेहमाननवाज़ी और यहाँ की हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री की अपार संभावनाओं की सराहना की और इसे बढ़ावा देने के लिए कार्य करने का आश्वासन दिया।

कैबिनेट मंत्री ने बताया कि पंजाब स्टेट इंडस्ट्री एवं एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन द्वारा हाल ही में जारी की गई पाँच महत्वपूर्ण अधिसूचनाएँ किसी भी अन्य राज्य सरकार ने नहीं दीं, जो हमारी सरकार ने उद्योग जगत के लिए लागू की हैं। उन्होंने कहा कि निवेशक पंजाब सरकार की नीतियों की सराहना करते हैं और हमारा कर्तव्य है कि हम उद्योग जगत की समस्याओं का समाधान करें। आप हमारे ब्रांड एंबेसडर हैं और आपकी समस्याओं का हल करना हमारी जिम्मेदारी है।

उन्होंने आगे कहा कि उद्योगपति सरकार को टैक्स देते हैं, नौजवानों को रोजगार उपलब्ध कराते हैं, इसलिए उनका ध्यान रखना विभाग का फर्ज़ है। इस अवसर पर उन्होंने अमृतसर में यूनिटी मॉल बनाने, इंडस्ट्रियल पार्कों और फोकल प्वाइंट्स में फायर ब्रिगेड की गाड़ियों की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। साथ ही ईएसआई अस्पताल को केंद्र सरकार से फंड लेकर और अधिक उन्नत बनाने का आश्वासन भी दिया।

श्री अरोड़ा ने यह भी घोषणा की कि लंबे समय से उपेक्षित गोइंदवाल साहिब के औद्योगिक क्षेत्र को एक इंडस्ट्रियल हब के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने माजहे के उद्योगपतियों को आगामी पंजाब इन्वेस्ट समिट (13-14 मार्च 2026, मोहाली) में भाग लेने का निमंत्रण भी दिया।

इस अवसर पर डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने शहर में पहुंचे कैबिनेट मंत्री, वरिष्ठ अधिकारियों और उद्योगपतियों का स्वागत किया और भरोसा दिलाया कि अमृतसर प्रशासन हर कदम पर उद्योग जगत के साथ खड़ा है और मिलकर औद्योगिक विकास को गति देगा।

इस मौके पर पंजाब स्टेट इंडस्ट्री और एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन की एमडी श्रीमती सुरभि मलिक तथा इन्वेस्ट पंजाब के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री राहुल चाबा ने अपने-अपने विभागों की नीतियाँ और कार्यक्रम विस्तार से साझा किए।

कार्यक्रम में विधायक श्रीमती जीवन ज्योत कौर, विधायक श्री जसविंदर सिंह रामदास, श्री वैभव महेश्वरी, श्री करमजीत सिंह रिंटू, पुलिस कमिश्नर श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर, श्री प्रभावीर बराड़, श्री जस्करण बदेशा, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता सहित अमृतसर के प्रमुख उद्योगपति श्री प्यारे लाल सेठ, श्री समीर जैन, श्री संदीप खौसला, श्री कमल डालमिया, श्री अशोक सेठी, श्री कृष्ण कुमार कुक्कू, श्री सुरिंदर दुग्गल, श्री राजेश सूरी, श्री राजन महेरा, श्री संजीव महाजन, श्री कुलदीप सिंह, श्री गुरसिमरन सिंह और अन्य अधिकारी व उद्योगपति उपस्थित रहे।

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने देशभर के व्यापारियों से किया स्वदेशी अपनाने का आह्वान

स्वदेशी उत्पादों का प्रोत्साहन राष्ट्र निर्माण की आधारशिला – वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना
वे अधिक से अधिक भारत में निर्मित वस्तुएं बेचें और जनता को स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए प्रेरित करें
स्वदेश भारत की आत्मा हैर और यह आत्मा तभी जागृत होगी जब हर नागरिक देशी वस्तुओं को प्राथमिकता देगा
जब देश की 140 करोड़ जनता विदेशी उत्पादों को त्यागकर भारतीय वस्तुओं को अपनाएगी, तभी भारत की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर बनेगी और भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरेगा।

आगरा, संजय सागर सिंह। वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने स्वदेशी उत्पादों के प्रोत्साहन को राष्ट्र निर्माण की आधारशिला बताते हुए देशभर के व्यापारियों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक भारत में निर्मित वस्तुएं बेचें और जनता को स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि "स्वदेश भारत की आत्मा है" और यह आत्मा तभी जागृत होगी जब हर नागरिक देशी वस्तुओं को प्राथमिकता देगा।

राजेश खुराना ने यह विचार आगामी स्वदेश जन जागरण अभियान के संदर्भ में व्यक्त किए, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 1 सितंबर से पूरे प्रदेश में शुरू किया जाएगा। इस अभियान की पूर्व संध्या पर २३ अगस्त को दिल्ली में एक भव्य सम्मेलन का आयोजन हो रहा है, जिसमें केंद्रीय उद्योग मंत्री पीयूष गोयल, कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल, और दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सहित कई प्रमुख नेता देश भर से आमंत्रित व्यापारियों को संबोधित करेंगे। इस अभियान का उद्देश्य व्यापारियों और आमजन को देश में निर्मित वस्तुओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। श्री खुराना ने कहा, "आजादी से पहले स्वतंत्रता सेनानियों ने जो स्वदेशी आंदोलन शुरू किया था, आज प्रधानमंत्री मोदी उसे एक नए स्वरूप में आगे बढ़ा रहे हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "जब देश की 140 करोड़ जनता विदेशी उत्पादों को त्यागकर भारतीय वस्त्र, जूते, घड़ियां, मोबाइल, लैपटॉप जैसी वस्तुओं को अपनाएगी, तभी भारत की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर बनेगी और भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरेगा।"

राजेश खुराना ने सरकार की व्यापारी हितैषी नीतियों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि जीएसटी के सरलीकरण, 18% और 5% स्लैब जैसे प्रस्तावों से व्यापारी वर्ग में उत्साह है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि पूर्ववर्ती सरकारों के समय व्यापारी वर्ग असुरक्षा के माहौल में व्यापार करता था, लेकिन आज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कानून का राज स्थापित हुआ है।

उन्होंने कहा, "आज माफिया और अपराधी या तो जेल में हैं या पलायन कर चुके हैं। भाजपा सरकार ने भयमुक्त शासन दिया है जो 'रामराज्य' की अवधारणा के निकट है।"

राजेश खुराना ने यह भी बताया कि भाजपा सरकार ने व्यापारियों के सर्वांगीण विकास के लिए व्यापारी कल्याण बोर्ड की स्थापना, नई एक्सप्रेसवे परियोजनाएं, रेल और हवाई सेवाओं के विस्तार, तथा उन्नत आधारभूत संरचनाओं का निर्माण कर व्यापार को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

जहाजगढ़ में लोगों को आ रही सभी समस्याएं अब होगी दूर:चेयरमैन रिंटू; इंप्रूवमेंट ट्रस्ट द्वारा रोड वाइंडिंग, पार्किंग स्टैंड बनाने का किया उद्घाटन

अमृतसर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू और पूर्वी विधानसभा क्षेत्र से विधायक जीवनजोत कौर ने मिलकर जहाजगढ़ में लोगों को आ रही समस्याओं को लेकर लगभग 2 करोड़ रुपयो की लागत से रोड वाइंडिंग, पार्किंग स्टैंड बनाने के विकास कार्य का उद्घाटन किया। इस अवसर पर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि जहाजगढ़ क्षेत्र के दुकानदारों और यहां पर आने वाले लोगों को पहले परेशानियों से गुजरना पड़ता था। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र से पहले दुकानदारों की मदद से सभी अवैध कब्जे हटाए गए। सुपर सकर मशीनों के माध्यम से सीवरेज डिजल्टिंग करवाई गई। उन्होंने कहा कि अब इस क्षेत्र की सड़कों को चौड़ा करके बनाने का कार्य शुरू करवा दिया गया है। उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ ट्रक पार्किंग स्टैंड को भी इंटरलॉकिंग टाइलों के माध्यम से पक्का बनवाने का कार्य भी शुरू करवा दिया गया है। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि जहाजगढ़ क्षेत्र में लोगों को आ रही सभी समस्याएं अब दूर हो जाएगी। उन्होंने कहा कि इंप्रूवमेंट ट्रस्ट शहर का विकास करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। विधायक जीवनजोत कौर ने कहा कि जहाजगढ़ क्षेत्र के दुकानदार आ रही समस्या को लेकर उनसे पहले मिले थे। उन्होंने कहा कि दुकानदारों को सभी समस्याओं का हल करने का वायदा किया था। जिसे अब पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सीवरेज डिसिल्टिंग के साथ-साथ सड़कों का निर्माण और पार्किंग स्टैंड बनने के उपरांत इंप्रूवमेंट ट्रस्ट द्वारा इस मार्केट की सफाई व्यवस्था को भी बेहतर बना दिया जाएगा। इस अवसर पर जहाजगढ़ मार्केट के दुकानदारों ने चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू और विधायक जीवनजोत कौर का धन्यवाद किया।

रेस्टोरेंट के मेन्यू से सीखें पोर्टफोलियो डाइवर्सिफिकेशन

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

[लेखक पिछले 18 वर्षों से वाणिज्य-अर्थशास्त्र के शिक्षक, वित्तीय एवं कर सलाहकार हैं]

जब आप किसी अच्छे रेस्टोरेंट में जाते हैं, तो सबसे पहली चीज़ जो आपके सामने आती है वह है - मेन्यू कार्ड। यह मेन्यू न सिर्फ उस रेस्टोरेंट की पहचान होता है, बल्कि आपके खाने की पसंद, पोषण और बजट के अनुरूप विकल्प भी प्रदान करता है। अब ज़रा सोचिए, अगर पूरा मेन्यू सिर्फ एक ही चीज़ से भरा हो - जैसे सिर्फ दाल या सिर्फ मिठाइयाँ - तो कैसा लगेगा ? न तो स्वाद में विविधता होगी, न ही पोषण में संतुलन और शायद आपका अनुभव भी अधूरा रह जाएगा। इसी तरह, अगर आपके निवेश पोर्टफोलियो में भी सिर्फ एक ही प्रकार की संपत्ति हो - जैसे सिर्फ शेयर, सिर्फ सोना या सिर्फ एफडी - तो न तो आपके फाइनेंशियल जीवन का पोषण होगा और न ही उसका स्वाद।

पोर्टफोलियो डाइवर्सिफिकेशन भी दरअसल एक वित्तीय मेन्यू है। इसमें आप अपनी आवश्यकताओं, जोखिम सहनशीलता और लक्ष्यों के अनुसार अलग-अलग निवेश साधनों को शामिल करते हैं। जैसे किसी भोजन में स्टार्टर, मुख्य कोर्स और मिठाई का तालमेल ज़रूरी होता है, वैसे ही निवेश में भी इक्विटी, डेब्ट, रियल एस्टेट, गोल्ड, म्यूचुअल फंड और कभी-कभी अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट्स का सही संतुलन ज़रूरी होता है।

अब मान लीजिए आप किसी रेस्टोरेंट में बैठे हैं और आपके सामने मेन्यू है जिसमें सूप से लेकर बिरयानी और मिठाई तक सब कुछ है। आप क्या करते हैं ? आप सोचते हैं कि भूख कितनी है, स्वाद क्या चाहिए और क्या कुछ नया ट्राई किया जाए या वही पुराना पसंदीदा खाना लें। ठीक यही बात निवेश के साथ भी होती है। अगर आपने पहले से ही कुछ शेयर लिए हैं और जोखिम भरे निवेशों में काफ़ी हिस्सा है, तो शायद अब आपको थोड़ा सुरक्षित फिक्स्ड इनकम विकल्पों की ज़रूरत हो।

मेन्यू में डेज़र्ट सिर्फ स्वाद के लिए होते हैं, लेकिन अगर आप सिर्फ डेज़र्ट ही खाते जाएं, तो जल्दी ही पेट में गड़बड़ी हो सकती है। निवेश की दुनिया में भी अगर आप केवल हाई-रिटर्न स्कीम्स या क्रिप्टोकरेंसी जैसे "स्वीट" विकल्पों पर ही भरोसा करें, तो आपका वित्तीय स्वास्थ्य भी बिगड़ सकता है। ज़रूरत है हर चीज़ का संतुलन बनाने की, ताकि निवेश का स्वाद भी बना रहे और पोषण भी पूरा होता रहे।

रेस्टोरेंट में कभी-कभी शेफ स्पेशल आता है - कुछ नया, जो बाकी मेन्यू से हटकर होता है। निवेश की दुनिया में भी 'शेफ स्पेशल' जैसे ऑप्शन होते हैं - जैसे रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (REIT), इंफ्रास्ट्रक्चर बांड्स या इंटरनेशनल फंड्स। इन विकल्पों को ज़रूरी नहीं कि हर कोई ले, लेकिन जो निवेशक ज़्यादा अनुभव रखते हैं या पोर्टफोलियो में कुछ अलग ढूंढ रहे हैं, उनके लिए ये ज़रूरी विकल्प हो सकते हैं।

अब बात करते हैं "थाली" की - एक ऐसा कॉन्सेप्ट जिसमें थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सब कुछ होता है। यह भारतीय निवेशकों के लिए आदर्श उदाहरण है। म्यूचुअल फंड की थाली में आपको एक साथ इक्विटी, डेट, लिक्विड और बैलेंस्ड फंड का स्वाद मिल सकता है। यह उन निवेशकों के लिए सही है जो सब कुछ एक प्लेट में चाहते हैं लेकिन संतुलन के साथ।

रेस्टोरेंट में कुछ लोग हर बार वही ऑर्डर करते हैं, वहीं कुछ लोग हर बार कुछ नया ट्राई करते हैं। निवेशकों में भी ऐसा ही व्यवहार देखा जाता है। कुछ लोग सुरक्षित एफडी से कभी बाहर नहीं आते, वहीं कुछ लोग हर बार नया ट्रेंड पकड़ने की कोशिश करते हैं। दोनों ही तरीकों में अति से बचना ज़रूरी है। न ही बदलाव से डरें, न ही हर बदलाव पर कूद पड़ें। पोर्टफोलियो को समय-समय पर रिव्यू करें, लेकिन हर बारीकी से बदलाव न करें जब तक ज़रूरी न हो।

कभी-कभी खाने के मेन्यू में "स्पाइसी" टैग भी लगा होता है - जो संकेत करता है कि यह डिश तीखी हो सकती है। निवेश की भाषा में "स्पाइसी" वे विकल्प हैं जो जोखिमपूर्ण होते हैं - जैसे स्मॉल-कैप स्टॉक्स, क्रिप्टो या लीवरेज्ड फंड्स। यह जरूरी नहीं कि ये खराब हों, लेकिन इनकी मात्रा सीमित होनी चाहिए और वो भी तब जब आपका वित्तीय स्वास्थ्य पहले से मजबूत हो।

अब ज़रा सोचिए कि रेस्टोरेंट में खाना ऑर्डर करते समय आप वेटर से सलाह लेते हैं या दोस्तों से राय करते हैं। उसी तरह निवेश में भी सलाह लेना बुरा नहीं, लेकिन अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। हर किसी की भूख, स्वाद और पाचन शक्ति अलग होती है - जैसे हर किसी का जोखिम प्रोफ़ाइल, वित्तीय लक्ष्य और समयावधि अलग होती है। इसलिए अपने पोर्टफोलियो का "मेन्यू" खुद तय करें, लेकिन जानकारी के साथ।

रेस्टोरेंट की एक और खूबी होती है - सीज़नल मेन्यू। कुछ आइटम्स सिर्फ सर्दियों में मिलते हैं, कुछ गर्मियों में। निवेश की दुनिया में भी सीज़नल अपॉर्च्युनिटीज़ होती हैं - जैसे टैक्टिकल इन्वेस्टमेंट, मार्केट करेक्शन में खरीदारी या बजट के बाद कुछ सेक्टर्स में तेजी। इन मौकों का लाभ वही लोग उठा सकते हैं जो सतर्क और सजग रहते हैं।

आख़िर में, रेस्टोरेंट में खाना खाते समय एक बात हम कभी नहीं भूलते - बजट। हम स्वाद और जेब दोनों का संतुलन बिठाते हैं। निवेश में भी यही ज़रूरी है। पोर्टफोलियो डाइवर्सिफिकेशन करते समय ज़रूरत से ज़्यादा महंगे या हाई-फीस प्रोडक्ट्स से बचना चाहिए। इसके बजाय कम लागत वाले, पारदर्शी और समय-समय पर रिव्यू किए गए विकल्पों को प्राथमिकता दें। रेस्टोरेंट का एक सफल अनुभव केवल स्वाद पर निर्भर नहीं करता, बल्कि माहौल, सेवा, समय और प्रस्तुति सब कुछ मिलकर एक संपूर्ण अनुभव बनाते हैं। ठीक उसी तरह, एक सफल निवेश यात्रा केवल रिटर्न पर नहीं, बल्कि रिस्क मैनेजमेंट, लक्ष्य निर्धारण, नियमित रिव्यू और अनुशासन पर निर्भर करती है।

इसलिए अगली बार जब आप किसी अच्छे रेस्टोरेंट में बैठें, तो ज़रा उस मेन्यू को वित्तीय नज़र से देखें। हो सकता है, आपको पोर्टफोलियो डाइवर्सिफिकेशन का कोई ऐसा स्वाद मिल जाए जो किताबों और सेमिनारों में नहीं मिलता। आखिरकार, पैसा और स्वाद - दोनों का सही तालमेल ही जीवन को संतुलित और सफल बनाता है।

मोना सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व में 'ऊर्जा – संबंधों की मजबूती' नामक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया

अमृतसर, (साहिल बेरी)

कार्यक्रम की शुरुआत प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना डॉ. मानसी सक्सेना की प्रस्तुति से हुई। उन्होंने अपनी नृत्य भंगिमाओं में अनुशासन, सौंदर्य और सुचोकता का अद्भुत मेल कर दर्शकों के लिए आत्ममंथन और गरिमा से भरा वातावरण निर्मित किया।

इसके बाद चर्चित अभिनेत्री एवं कंटेंट क्रिएटर निशा अग्रवाल वेलेचा तथा आध्यात्मिक गुरु मार्गदर्शिका मैत्रेयी सौनदर्या मंच पर विचार-विमर्श के लिए आईं। दोनों ने संबंधों में सच्चाई, जागरूकता और उपस्थित

होने के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने आधुनिक समाज में सच्चे रिश्ते बनाने की चुनौतियों और अवसरों पर भी प्रकाश डाला।

इस संवाद का संचालन फ्लो अमृतसर की चेयरपर्सन मोना सिंह ने स्पष्टता और दृढ़ता के साथ किया। उन्होंने चेतन संबंधों की अहमियत को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक एकजुटता की नींव बताया।

कार्यक्रम के दौरान फ्लो सदस्य एवं IRIA पंजाब स्टेट रक्षा और शक्ति कोऑर्डिनेटर डॉ. सोनाली किमत्तकर सोनी ने एक महत्वपूर्ण पहल की घोषणा की। यह पहल FLO पंजाब IRIA अध्यक्ष डॉ. नीलम गौबा और सोशल विंग सचिव डॉ. रीमान्शु बंसल के नेतृत्व में चल रहे "मिशन दीप" को सहयोग प्रदान करती है, जो फ्लो की सुरक्षा और सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

"ऊर्जा" एक मानवता-प्रधान मंच के रूप में सिद्ध हुआ, जिसने सच्चाई, जागरूकता और आदर के मूल्यों को दोहराते हुए मजबूत रिश्तों के निर्माण की महत्ता को और प्रबल किया।

झारखंड के दिवंगत शिक्षा मंत्री आवास पर सपत्नीक पहुंचे मुख्यमंत्री, दी श्रद्धांजलि

झारखंड अलग राज्य के समय शिबू सोरेन के संघर्ष मित्र रहे जमशेदपुर के नेता रामदास सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

जमशेदपुर ,मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज अपनी विधायक पत्नी कल्पना सोरेन सहित स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री स्व रामदास सोरेन के घोड़ाबांधा, जमशेदपुर स्थित आवास पहुंचे। अपने पिता के अलग झारखंड राज्य आन्दोलन में सहयोगी रहे दिवंगत रामदास सोरेन को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने शोकाकुल परिजनों से मिलकर अपनी गहरी संवेदना जताते हुए कहा दिवंगत आत्मा की शांति मिले तथा शोक संतप्त परिजनों को दुःख सहन करने की शक्ति देने की ईश्वर दे। विदित हो कि शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन जी का 15 अगस्त को नई दिल्ली स्थित एक अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया था। मुख्यमंत्री ने बीते दिनों को याद करते हुए कहा कि दिशोम गुरु और मेरे बाबा शिबू सोरेन के निधन के एक पखवाड़े के अंदर ही रामदास सोरेन के इस तरह चले जाने की पीड़ा मेरे लिए असहनीय है। मन व्याकुल और व्यथित है। उनका निधन इस राज्य के साथ मेरे लिए अपूरणीय क्षति है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिवंगत रामदास सोरेन ने संघर्ष से अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। उन्होंने स्मृति शेष दिशोम गुरु शिबू सोरेन के नेतृत्व में अलग झारखंड की खातिर हुए आंदोलन में अहम योगदान दिया था। उनका व्यवहार काफी सरल और सहज था। एक आंदोलनकारी के साथ उनका व्यापक सामाजिक सरोकार था। वे अपने सार्वजनिक जीवन में आम लोगों के दुःख -दर्द और समस्याएं दूर करने के लिए हमेशा खड़े रहे। वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व और कार्य सदैव उर्जा प्रदान करता रहेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री के रूप में रामदास सोरेन जी काफी बेहतर कार्य कर रहे थे। सरकारी विद्यालयों में बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए उन्होंने कई नई पहल की थी। सरकारी विद्यालयों में आधारभूत संरचना मजबूत करने का काम तेज गति से हो रहा था। गांव-देहात के गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ उनका समग्र विकास हो, इसपर उनका विशेष जोर था।

फ्रीडम फाइटर उत्तराधिकारी संगठन पंजाब का एक प्रतिनिधिमंडल, संगठन के प्रधान ज्ञान सिंह सग्गू की अध्यक्षता में डिप्टी कमिश्नर साक्षी साहनी जी से मिला

अमृतसर (साहिल बेरी)

प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री पंजाब के नाम एक माँग पत्र डिप्टी कमिश्नर को सौंपा, जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को नौकरियाँ देने, कैशलेस इलाज की सुविधा उपलब्ध कराने तथा चौथी पीढ़ी को भी फ्रीडम फाइटर परिवार में शामिल करने की माँग रखी गई।

इस अवसर पर संगठन के महासचिव करमजीत सिंह के.पी. ने डिप्टी कमिश्नर साक्षी साहनी को अवगत करवाया कि 15 अगस्त और 26 जनवरी के अवसर पर फ्रीडम फाइटर परिवारों को केवल सामान नहीं, बल्कि सम्मान दिया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि बीते 15 अगस्त को सुरक्षा और प्रशासन में आपसी तालमेल की कमी के कारण फ्रीडम फाइटर परिवारों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी।इस मौके पर रघुबीर सिंह बागी, सरोज नंदा, अमरजीत सिंह भाटिया, सुरिंदर कुमार, राज कुमार, प्रिंसिपल विनोद कपूर, नरेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

मालगाड़ी में लदा 1259बोरा एफ सी आई का चावल चोरी को लेकर टाटानगर में दो रेलवे क्लर्क धराये

चाहे रेल हो या सड़क तीनों सिंहभूम में सरकारी चावल का गवन आम समस्या

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड -झारखंड

टाटा नगर स्टेशन, जमशेदपुर के टाटानगर रेलवे यार्ड की लाइन पर खड़ी मालगाड़ी से 1259 बोरा चावल गबन के एक वर्ष पुराने मामले में आरपीएफ ने दो क्लर्क मुकेश कुमार और सूरज कुमार को पकड़ा है। पूछताछ और रेलवे अस्पताल में स्वास्थ्य जांच के बाद दोनों को चक्रधरपुर मंडल रेलवे के टाटानगर कैंप कोर्ट में पेश किया गया, जहां से मंगलवार को उन्हें घाघीडीह जेल भेज दिया गया।

बुधवार को चक्रधरपुर रेलवे अदालत में बचाव पक्ष के अधिवक्ता रतन लाल महतो दोनों की जमानत अर्जी दाखिल कर पक्ष रखेंगे। अधिवक्ता के अनुसार, दोनों आरोपियों के पास से आरपीएफ ने चावल जब्त नहीं किया है और न ही दोनों ने पूछताछ में इस मामले में कोई जानकारी दी है। इधर, गिरफ्तार रेलकर्मियों की कोर्ट में पेशी के दौरान कोर्ट परिसर में दर्जनों रेलकर्मी और महिलाएं जमा हो गईं, जिससे अफरातफरी का माहौल बन गया। रेलकर्मी आरपीएफ की जांच प्रक्रिया और कार्रवाई पर सवाल उठा रहे थे। टाटानगर आरपीएफ पोस्ट में मालगाड़ी के वैगन से 23 लाख से अधिक मूल्य के चावल चोरी का मामला 15 फरवरी को रेलवे एक्ट के तहत दर्ज किया गया था। चक्रधरपुर आरपीएफ के सहायक कमांडेंट ने कई बार टाटानगर पहुंचकर घटनास्थल की जांच की और रेलकर्मियों व सुरक्षा ड्यूटी जवानों से पूछताछ की थी। सोमवार को आरपीएफ ने रेलवे वाणिज्य क्लर्क मुकेश कुमार और सूरज कुमार को नोटिस देकर पूछताछ के लिए बुलाया और मंगलवार को उन्हें जेल भेज दिया।

बताया जाता है कि , चोरी हुआ चावल मार्च 2024 में ओडिशा के कांटाबाजी से पश्चिम बंगाल के कृष्णानगर भेजा जा रहा था, लेकिन तकनीकी खराबी के कारण मालगाड़ी की एक वैगन टाटानगर में अलग कर दी गई। बाद में उस वैगन को दूसरी मालगाड़ी में जोड़कर एफसीआई भेजा गया। निर्धारित वैगन खाली होने पर चावल लोड वैगन यार्ड में लौट आई और फिर दूसरी मालगाड़ी से जुड़कर कृष्णानगर पहुंची। वहां व्यवसायी ने बुक किया चावल नहीं मिलने की शिकायत ईस्टर्न रेलवे जोन से की। स्थानीय स्तर पर जांच के बाद शिकायत टाटानगर आरपीएफ को भेजी गई, जिसके आधार पर दोनों रेलकर्मी धराये।

शापुर नगर स्थित पंवार निवास पर सीरवी समाज जीडिमेटला के नवनिर्वाचित पदाधिकारी सह सचिव मंगलराम पंवार के सम्मान समारोह कार्यक्रम में उपस्थित भुण्डाराम बर्फा ,राजुराम लचेटा सोहनलाल हाम्बड़, चौथाराम पंवार,थानाराम पंवार, सुजाराम काग, भुराराम व समाज बन्धु।

बालू घाटों की नीलामी प्रक्रिया सितंबर के पहले सप्ताह तक पूर्ण करें :अलका तिवारी, मुख्य सचिव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,चीफ सेक्रेटरी झारखंड अलका तिवारी ने राज्य के सभी उपायुक्तों को तमाम व्यावसायिक बालू घाटों की नीलामी की प्रक्रिया सितंबर के पहले पखवाड़े तक पूर्ण कर लेने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि उपायुक्त नीलामी के पहले बालू घाटों की नई पॉलिसी को पूरी तरह समझ लें, ताकि नीलामी प्रक्रिया पारदर्शी हो और उस दौरान कोई तकनीकी समस्या नहीं आये। इसके लिए उन्होंने खनन पदाधिकारी सहित उपायुक्तों को भी बेसिक जानकारी के लिए प्रशिक्षित होने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इसका मकसद सिर्फ यह है कि उपायुक्त पूरी स्पष्टता और तैयारी के साथ नीलामी को संपन्न करा सकें। नई बालू नीति से सरकार की मंशा जहां उपभोक्ताओं को उचित कीमत पर बालू सर्वसुलभ कराना है, वहीं बालू के अवैध कारोबार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने और अन्य राज्यों से बालू के आवक को हतोत्साहित करना है।

इस बैठक में उपस्थित खान सचिव अरवा राजकमल व निदेशक ने कहा कि बालू घाटों की नीलामी में खान विभाग के साथ उपायुक्तों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। इसलिए सभी उपायुक्त इसे गंभीरता से लें और पूरी स्पष्टता तथा तैयारी के साथ नीलामी प्रक्रिया संपन्न करायें।

उन्होंने कहा कि 15 अक्टूबर के बाद से बालू घाटों से खनन पर ग्रीन ट्रिब्यूनल का प्रतिबंध खत्म होगा। उसके पहले बालू घाटों की नीलामी पूर्ण होने से खनन ससमय शुरू होगा और राज्य में बालू की किल्लत नहीं होगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि बालू का दर निर्धारण सरकार नहीं करेगी। लेकिन, बालू का वैध कारोबार हो, इसकी पूर्ण व्यवस्था प्रशासन करेगा। उपायुक्तों को यह अधिकार होगा कि नियम का अनुपालन नहीं करने वाले का ठेका रद्द कर सकें।

बालू घाटों को दो कैटेगरी में विभाजित किया गया है। पहली कैटेगरी में पांच हेक्टेयर से कम रकबा वाले बालू घाट होंगे। इनका संचालन ग्राम सभा के माध्यम से होगा। ऐसे 374 बालू घाट हैं। दूसरी कैटेगरी में 5 हेक्टेयर से अधिक रकबा वाले बालू घाटों की नीलामी होगी। इसके लिए छोटे-बड़े बालू घाटों को मिलाकर कुल 60 समूह बनाए गये हैं। किसी भी एक व्यक्ति को एक हजार हेक्टेयर से अधिक रकबा का बालू घाट नहीं दिया जाएगा और दो से अधिक समूह का ठेका भी नहीं दिया जाएगा। इसके पहले बालू घाटों की नीलामी की पूरी प्रक्रिया को पीपीटी के माध्यम से उपायुक्तों से साझा किया गया। खनन से जुड़े पर्यावरण के मसले पर सिया के सदस्य राजीव लोचन बख्शी ने विस्तार से प्रकाश डाला। जैप आईटी के प्रतिनिधियों ने नीलामी की तकनीकी प्रक्रिया को विस्तार से बताया, ताकि कोई उलझन नहीं रहे।

झारखंड में फर्जी डीड के साहारे फिर बेची गयी दस करोड़ रू की सरकारी जमीन , म्यूटेशन भी हो गया !

डी एम के निर्देश पर होने जा रहा एफ आई आर , दोषी अधिकारी कर्मचारी होगें तीन दिनों में चिन्हित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के धनबाद जिले में फिर एक बड़ा जमीन घोटाला सामने आया है। गोविंदपुर अंचल के भेलाटांड़ मौजा में सरकारी जमीन की फर्जी डीड तैयार कर उसे बेच दी गई। लगभग चार एकड़ जमीन की प्लॉटिंग करते हुए 38 लोगों को बेची गई। इस सरकारी जमीन की दाखिल-खारिज भी कर दी गई। लगभग दस करोड़ से अधिक मूल्य की इस सरकारी जमीन की रजिस्ट्री और म्यूटेशन करनेवालों की गर्दन अब फंसने वाली है। डीसी के निर्देश पर अपर समाहर्ता विनोद कुमार ने गोविंदपुर के सीओ को पत्र लिखकर एफआईआर करने का निर्देश दिया है। साथ ही जमीन की रजिस्ट्री करनेवाले सरकारी कर्मियों को चिह्नित करते हुए एक हफ्ते के अंदर रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया है।बीबीएमकेयू के पीछे भेलाटांड़ मौजा में चार एकड़ 10 डिसमिल सरकारी जमीन है। गैर आबाद खाता संख्या 271, प्लॉट संख्या 220 को फर्जी तरीके से नया खाता संख्या 273 और प्लॉट संख्या 220 बनाकर बेचा जा रहा है। अपर समाहर्ता ने जमीन की खरीद-बिक्री में शामिल फर्जी खतियानधारी अमरचंद्र गोराईं और पावर ऑफ एटर्नी होल्डर राजीव रंजन उर्फ रवि यादव के खिलाफ संबंधित थाने में 24 घंटे के अंदर एफआईआर कराने का आदेश गोविंदपुर के सीओ को दिया है। टुंडी विधायक मथुरा महतो की शिकायत पर जिला प्रशासन ने इसकी जांच कराई है।

उधर गोविंदपुर अंचल के पूर्व अवर निबंधक समेत कई कर्मियों की फंसेगी गर्दन अपर समाहर्ता ने गोविंदपुर सीओ को इस जमीन की डिजिटाइजेशन, दाखिल-खारिज, जमाबंदी, भू-स्वामित्व सर्टिफिकेट जारी करनेवाले पदाधिकारी और कर्मियों की सूची तीन दिनों के अंदर सौंपने का निर्देश दिया है। इस आदेश के बाद गोविंदपुर अंचल कार्यालय में हड़कंप मचा हुआ है। कई पूर्व व वर्तमान कर्मियों की गर्दन इस मामले में फंसनी तय है। अपर समाहर्ता ने गोविंदपुर के अवर निबंधक को भी पत्र लिख कर सरकारी जमीन की खरीद--बिक्री करने में शामिल तत्कालीन अवर निबंधक और संबंधित कर्मियों को चिह्नित करते हुए विभागीय कार्रवाई के लिए सात दिनों में प्रतिवेदन देने का निर्देश दिया।

ओडिशा के 4 पर्यटन स्थलों पर क्रूज सेवा की व्यवस्था

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : पर्यटक क्रूज़ से सैर करेंगे। केंद्र सरकार की ओडिशा के 4 पर्यटन स्थलों में क्रूज़-आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने की एक बड़ी योजना है। भितरकनिका वन, जोबरा, ललितगिरि - उदयगिरि - रत्नागिरि और बालासोर हिडन बीच में यह सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इन 4 पर्यटन स्थलों में रिवर क्रूज़ सर्किट चलाया जाएगा।इनका विकास केंद्र सरकार की क्रूज़ इंडिया मिशन योजना के तहत किया जाएगा। केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने राज्यसभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए इसकी जानकारी दी।

केंद्र सरकार ने चार नदी क्रूज़ सर्किट बनाने की योजना बनाई है, जिनमें बैतरणी नदी पर राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 14 के अंतर्गत भितरकनिका वन, महानदी नदी पर राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 64 के अंतर्गत जोबरा, बिरूपा-बड़ी गंगुटी-ब्राह्मणी नदी पर राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 22 के अंतर्गत ललितगिरि-उदयगिरि-रत्नागिरि और बुधबलंग नदी पर राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 23 के अंतर्गत बालासोर हिडन बे शामिल हैं।

बछबारस पूजा ... पुत्र की मंगल कामना ! बालाजी नगर स्थित आईजी गौशाला में आज बछ बारस पुत्र की दीर्घायु के लिए महिलाएं ने बछबारस, संतान सुख और समृद्धि का पर्व पर गौमाता की पुजा अर्चना कि । उपासना रखा है इस अवसर पर उपस्थित महिला मंडल मांगी बाई मुलेवा , सुनिता, सीता बाई, अनिता सीरवी, सुशील सीरवी सरोज सीरवी, कन्या बाई सीरवी, इन्द्रा देवी कुमावत,कान्ता देवी कुमावत, सुशील कुमावत, अनिता आदि उपस्थित रहीं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023